श्रावण मास, कृष्ण पक्ष, 22 वर्ष, अंक 191, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | बुधवार 9 अगस्त 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

अविश्वास प्रस्ताव पर पछताएगी कांग्रेस, पछली सरकारों ने पूर्वोत्तर के लिए कुछ नहीं किया: किरण रिजिजू

संसद: अविश्वास प्रस्ताव पर हुई जबरदस्त बहस

नई दिल्ली। अरुणाचल प्रदेश से सांसद और केन्द्रीय मंत्री किरण रिजिजू ने मंगलवार को लोकसभा में मोदी सरकार की उपलब्धियों का उल्लेख किया। उन्होंने आंकड़ों के जरिए यह बताया कि पूर्वोत्तर और देश के विकास में उनकी सरकार का क्या योगदान है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पूर्वोत्तर को भारत का हिस्सा कहती है लेकिन कांग्रेस शासन में पूर्वोत्तर के विकास के लिए कुछ नहीं किया गया। लोकसभा में अविश्वास प्रस्ताव पर करीब एक घंटे के अपने भाषण में रिजिजू ने कहा कि पिछले नौ सालों में पूर्वोत्तर में कोई बढ़ी घटना नहीं हुई। उन्होंने कहा कि राजनीति में इतना भी अंधा नहीं हो जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि दिल्ली पुलिस के हर स्टेशन में आज पूर्वोत्तर से एक नियुक्ति है। इसका मकसद यहां रह रहे पूर्वोत्तर के लोगों में विश्वास पैदा करना है। इतिहास का जिक्र करते हुए रिजिजू ने कहा कि 1959 में नेहरू ने चीन के हमले में पूर्वोत्तर को उसके हाल पर छोड़ दिया था। इसी दौरान चीन ने भारत की जमीन पर कब्जा किया। इसी जमीन पर चीन गांव बना रहा है और इसको आधार बनाकर वर्तमान सरकार पर निशाना साधा जा रहा है।

सीमावर्ती क्षेत्रों के विकास का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि आज सीमा के हर क्षेत्र तक सड़क से पहुंचा जा सकता है। वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम के तहत कई देशों से लगते सीमावर्ती गांवों में इस साल तक 4जी सेवाएं पहुंचाई जा रही हैं।

आज उन क्षेत्रों में सड़क और रेलवे का जाल बिछाया जा रहा है, जहां अबतक की सरकारें नहीं पहुंची थीं। उन्होंने कहा कि खेल के क्षेत्र में देश आज नई ऊंचाई छू रहा है।भारत की दुनिया में छवि बदल रही है। प्रधानमंत्री 2047 तक देश को विकसित बनाना चाहते हैं। वह इसमें विपक्ष से भी साथ देने की अपेक्षा रखते हैं।

निशिकांत ने राहुल पर जमकर बोला हमला

नई दिल्ली: लोकसभा में सत्ता पक्ष की ओर से अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा की शुरूआत करते हुए निशिकांत दुबे ने विपक्षी आईएनडीआईए गठबंधन पर जमकर हमला बोला। साथ ही उन्होंने कांग्रेस और राहुल गांधी पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी कभी सावरकर नहीं बन सकते। सावरकर ने 28 साल जेल में काटे थे। राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट का मानहानि मुकदमा मामले में अंतिम निर्णय अभी नहीं आया है। राहुल कहते हैं कि माफी नहीं मांगूंगा। राहुल

माफी क्यों मांगेंगे? मोदी तो छोटी जाति के हैं, ओबीसी हैं। राहुल कहते हैं कि वह सावरकर नहीं हैं। राहुल जी, आप सावरकर हो भी नहीं सकते। सावरकर ने 28 साल जेल में गुजारे थे।

ब्रायन के निलंबन पर नहीं हुआ मतदान

वहीं, तृणमूल कांग्रेस के सांसद डेरेक ओ ब्रायन के निलंबन को लेकर आज राज्यसभा में उस समय हंगामा हो गया जब सभापति ने पहले घोषणा की कि उन्हें सदन से हटना होगा लेकिन बाद में कहा कि उन्हें निलंबित करने के प्रस्ताव पर मतदान नहीं हुआ है और इसलिए वह कार्यवाही में शामिल होना जारी रख सकते हैं। राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने कहा कि उन्होंने उन्हें निलंबित करने के प्रस्ताव पर मतदान की अनुमति न देने का 'दूरदर्शी' निर्णय लिया है। सभापति ने इससे पहले सदन में अमर्यादित व्यवहार के लिए तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) नेता को निलंबित करने की घोषणा की थी। कांग्रेस के प्रमोद तिवारी सहित कई सदस्यों ने सभापति से ओ ब्रायन के मामले में नरम रुख अपनाने का आग्रह किया लेकिन सभापति ने पूछा कि उन्हें नरमी क्यों दिखानी चाहिए। उन्होंने कहा, 'अगर ओ ब्रायन को इस सत्र के लिए सदन से निलंबित कर दिया गया होता, तो क्या आपको लगता है कि उन्हें फिर से सदन में प्रवेश करने की अनुमति दी जाती? क्या वह फिर से वापस आ सकते हैं?'

संसद टीवी पर सरकार की उपलब्धियों के टिकर पर हंगामा

नई दिल्ली: लोकसभा में मंगलवार को अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान संसद टीवी पर चल रहे टिकर के खिलाफ विपक्षी सदस्यों जोरदार विरोध किया जिसके कारण सदन की कार्रवाई थोड़ी देर के लिए बाधित हुई। क्या हुआ पूरा मामला: दरअसल, बहुजन समाज पार्टी के सांसद दानिश अली ने कहा कि संसद टीवी अपने टिकर में चल रही बहस की कार्यवाही को प्रतिबिंबित करने के बजाय सरकार की उपलब्धियों पर अपडेट चला रहा है। इसके बाद जैसे ही भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने प्रस्ताव के खिलाफ बोलना शुरू किया, तो कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस और द्रमुक सहित कई विपक्षी सदस्यों ने इस मुद्दे (टिकर) पर विरोध जताया।

वहीं, मंत्रियों सहित सत्ता पक्ष के कुछ सदस्यों ने विपक्ष पर कटाक्ष करते हुए कहा कि वह सरकार द्वारा किए गए विकास कार्यों को स्वीकार नहीं कर पा रहा है।

लोकसभा स्पीकर बोले- निर्देश दे दिए हैं: इसके बाद लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने विपक्षी सदस्यों को शांत करने की कोशिश की और कहा कि लोकसभा टीवी और राज्यसभा टीवी के विलय के बाद संसद टीवी के बनने के बाद इसे चलाने के लिए एक अलग प्रणाली लागू है। बाद में बिरला ने कहा कि उन्होंने निर्देश दे दिए हैं, टिकर चलना बंद हो जाएंगे। इसके कुछ देर बाद ऐसा ही हुआ। विपक्षी सदस्यों का कहना था कि टिकर पर केवल सदन की वर्तमान कार्यवाही का जिक्र करना चाहिए।

पीएम के 10 अगस्त को जवाब देने की उम्मीद

सरकार के खिलाफ विपक्ष द्वारा लाए गए अविश्वास प्रस्ताव पर बहस चल रही है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 10 अगस्त को जवाब देने की उम्मीद है।

पीयूष गोयल के खिलाफ विशेषाधिकार हनन का नोटिस

नई दिल्ली: विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' के कई नेताओं ने राज्यसभा में सदन के नेता पीयूष गोयल के खिलाफ विशेषाधिकार हनन का नोटिस दिया है। जिन दलों के नेताओं ने नोटिस दिया है, उनमें तृणमूल कांग्रेस, कांग्रेस, आप, द्रमुक, राजद, जदयू, राकांपा और वाम दल शामिल हैं। सूत्रों ने कहा कि 'इंडिया' के दलों ने राज्यसभा के सभापति को नोटिस देकर गोयल की कुछ टिप्पणी के खिलाफ शिकायत की। गोयल न्यूज पोर्टल 'न्यूजक्लिक' को लेकर बोल रहे थे कि उसने चीनी प्रचार को फैलाने के लिए कथित तौर पर चीन से जुड़ी फर्मों से धन प्राप्त किया। गोयल ने विपक्षी दलों और न्यूज पोर्टल 'न्यूजक्लिक' के बीच संबंधों पर सवाल उठाया। इस पोर्ट पर 'न्यूयॉर्क टाइम्स' ने चीन से जुड़ी फर्मों से धन प्राप्त करने का आरोप लगाया है। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने अपने ट्वीट में कहा, 'आज दोपहर एक बजे राज्यसभा में 'इंडिया' के दलों के नेताओं ने विपक्ष को 'देशद्रोही' कहने के लिए सदन के नेता

पीयूष गोयल के खिलाफ विशेषाधिकार हनन का प्रस्ताव पेश किया।' विशेषाधिकार हनन नोटिस पर हस्ताक्षर करने वाले कांग्रेस नेता ने कहा, 'सदन के पटल पर उनसे माफी मांगने से कम कुछ नहीं चलेगा।' बाद में सदन में गोयल ने कहा कि वह ऐसे किसी भी शब्द को वापस लेते हैं जो संसदीय नहीं हो सकता है और उन्होंने सभापति से इसे रिकॉर्ड से हटाने का आग्रह किया। सभापति ने कहा कि वह रिकॉर्ड देखेंगे और अगर कुछ असंसदीय है तो वह सदन के रिकॉर्ड का हिस्सा नहीं रह सकता। उन्होंने कहा कि अगर कुछ भी असंसदीय है तो वह इसे हटा देंगे।

'अब सपा को भी जनसंख्या की चिंता होने लगी'

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विधानसभा में शिक्षा और बेरोजगारी पर अखिलेश यादव को दिखाया आईना

लखनऊ: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को विधानसभा में समाजवादी पार्टी और नेता विरोधी दल अखिलेश यादव को प्रदेश में बेरोजगारी और शिक्षा के संबंध में पूछे गए सवाल पर आईना दिखाया। मुख्यमंत्री ने कहा कि अच्छा है कि नेता विरोधी दल को भी अब जनसंख्या की चिंता होने लगी है। इसी को नियंत्रित करने के लिए हम लोग समान कानून की बात कर रहे हैं। चलिए समाजवादियों में कुछ तो प्रोग्रेस हुई है। प्रगति के बारे में सोचना अच्छी बात है। उन्होंने कहा कि अभी एक सदस्य ने बेसिक शिक्षा के विषय में एक प्रदेश, एक कोर्स और एक मूल्य को लेकर सवाल पूछा था। इसमें एक देश और एक कानून को भी जोड़ देते तो अच्छा होता। सीएम योगी ने बेरोजगारी दर को लेकर कहा कि बेरोजगारी दर जो 2017 से पहले 19 फीसदी थी, वो आज 3 से 4 के बीच रह गई है। प्रदेश में रोजगार के जो अवसर सृजित हुए हैं, उसी की वजह से बेरोजगारी दर में कमी आई है।

शुचिता और ईमानदारी से हो रही है भर्ती प्रक्रिया: सीएम योगी ने प्रदेश में बेरोजगारी दर में हुए सुधार को रोजगार के बढ़ रहे अवसरों से जोड़ते हुए अखिलेश पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि सरकार क्या कर रही है ये तो सर्वे भी बताते हैं।

नकल माफिया पर कसी गई है लगाम

सीएम योगी ने प्रदेश में रोजगार के अवसर के बारे में कहा कि ये कहना की बीते 6 वर्ष में भर्ती नहीं हुई है, इसमें आपकी पीड़ा को मैं समझ सकता हूं। पिछले 6 वर्ष में नकल विहीन परीक्षा सुचारू रूप से संपन्न हुई है। नकल माफिया पर लगाम कसी गई है। पहली बार हुआ है जब माध्यमिक शिक्षा जिसमें हाईस्कूल व इंटरमीडिएट की परीक्षा जो पहले 2 से 3 महीने तक चलती रहती थी वो मात्र 15 दिन में संपन्न हुई है और मात्र 14 दिन में परिणाम भी आए हैं। 56 लाख बच्चों के परिणाम मात्र 29 दिन (परीक्षा से लेकर परिणाम जारी होने तक)में आए हैं। यह भी उस रिफॉर्म का परिणाम है जो शिक्षा के क्षेत्र में आज देखने को मिल रहा है।

बेरोजगारी दर इस बात पर निर्भर करती है कि रोजगार कितने सृजित हुए। 2016-17 में उत्तर प्रदेश की बेरोजगारी दर 19 फीसदी से अधिक थी और आज के दिन पर यह 3 से 4 के बीच रह गई है। ये दिखाता है कि उत्तर प्रदेश में रोजगार के अवसर सृजित हुए हैं। लोगों को पारदर्शी तरीके से नौकरी मिल रही है और नौकरी की कोई भी प्रक्रिया न्यायालय में लंबित नहीं है। न्यायालय को भी मालूम है कि प्रक्रिया में पारदर्शिता है, शुचिता और पूरी ईमानदारी से सरकार इसको आगे बढ़ा रही है। उत्तर प्रदेश के इस परसेप्शन के कारण ही ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में 36 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव पास हुए हैं जो एक करोड़ नई नौकरियों का सृजन करेंगे। यह उत्तर प्रदेश के युवाओं के लिए अवसर है। उत्तर प्रदेश के युवाओं को तकनीकी रूप से सक्षम बनाने के लिए ही 2 करोड़ युवाओं को टैबलेट और स्मार्टफोन उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

'ऑनलाइन गेमिंग पर 28% जीएसटी से राजस्व संग्रह बढ़ेगा'

नई दिल्ली: वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने ऑनलाइन गेमिंग पर 28% जीएसटी लगाने के फैसले का बचाव किया। मंगलवार को एक सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि कैसिनो, रेस कोर्स और ऑनलाइन गेमिंग में पूरे अंकित मूल्य पर 28 प्रतिशत जीएसटी से राजस्व में वृद्धि होगी। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की ओर से तैयार भारत में एनीमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, गेमिंग और कॉमिक क्षेत्र के विकास के लिए राष्ट्रीय नीति के मसौदे में उल्लिखित नीति आयोग के अनुमानों के अनुसारे।

सेना के ड्रोन्स में चाइनीज पार्ट्स के इस्तेमाल पर रोक

नई दिल्ली: सेना के इस्तेमाल के लिए भारत में बनने वाले ड्रोन्स में अब चीन में बने पार्ट्स इस्तेमाल नहीं किए जाएंगे। केंद्र सरकार ने इस पर रोक लगा दी है। सिक्योरिटी के लिहाज से यह फैसला कुछ महीनों पहले किया गया, हालांकि जानकारी 8 अगस्त को जारी एक रिपोर्ट से सामने आई। रिपोर्ट के मुताबिक, केंद्र सरकार ने यह फैसला दोनों देशों के बीच बने तनाव के माहौल को देखते हुए किया है। सरकार भारतीय सेना को आधुनिक बनाने का काम कर रही है, इसमें मानव रहित क्वाडकॉप्टर, ऑटोनॉमस ड्रोन के साथ ही लंबी दूरी तक उड़ान भरने वाले ड्रोन शामिल हैं। रिपोर्ट के मुताबिक चीन में बने पार्ट्स इनकी जानकारी पड़ोसी देश को दे सकते हैं। इसलिए इन्हें बैन कर दिया गया है। एयरोनॉटिकल डेवलपमेंट एस्टैब्लिशमेंट के डायरेक्टर वाई दिलीप के मुताबिक, अऊए मानवरहित स्टेल्थ ड्रोन और अधिक ऊंचाई तक उड़ने वाले ड्रोन पर काम कर रही है। हालांकि इसमें अभी काफी वक्त लगेगा। तब तक ड्रोन की कमी पूरी करने के लिए भारत अमेरिका से 31 ड्रोन खरीदेगा।

चाइनीज पार्ट्स खुफिया जानकारी इकट्ठा कर सकते हैं: रिपोर्ट के मुताबिक, देश की सुरक्षा से जुड़े अधिकारी चाइनीज पार्ट्स के इस्तेमाल से चिंतित थे। उनका मानना है कि ड्रोन के कम्युनिकेशन फंक्शन, कैमरे, रेडियो ट्रांसमिशन और ऑपरेटिंग सॉफ्टवेयर में चीन में बने पार्ट्स लगे हैं। इनसे खुफिया जानकारी पड़ोसी देश को भेजी जा सकती है।

2011 से अबतक के 1,532 कर्मियों ने आत्महत्या की- सरकार

सीएपीएफ, एनएसजी, असम राइफल्स के जवानों ने की आत्महत्या

नई दिल्ली: केंद्रीय मंत्री नित्यानंद राय ने मंगलवार (8 अगस्त) को लोकसभा में जानकारी देते हुए बताया कि साल 2011 से लेकर अबतक केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों, असम राइफल्स और राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड के 1,532 कर्मियों ने आत्महत्या की है। उन्होंने कहा कि सिस्टम द्वारा उत्पीड़न के कारण ऐसा कोई केस सामने नहीं आया है। गृह राज्य मंत्री ने एक लिखित उत्तर में कहा कि 2011 से केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों, असम राइफल्स और राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड कर्मियों ने जो आत्महत्या की उन मामलों की कुल संख्या 1,532 है।

खतरों से निपटने के लिए टास्क फोर्स का गठन: नित्यानंद राय ने कहा कि इन केसों की प्रासंगिक खतरों और प्रासंगिक जोखिम समूहों की पहचान करने के साथ-साथ सीएपीएफ और असम राइफल्स में आत्महत्या।

नीतीश मंत्रिपरिषद ने नौ एजेंडों पर लगाई मुहर

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में मंगलवार को संपन्न हुई मंत्रिपरिषद की बैठक में कुल नौ एजेंडों पर निर्णय लिए गए। इस सन्दर्भ में मंत्रिमंडल सचिवालय विभाग के अपर मुख्य सचिव, डॉ एस सिद्धार्थ ने प्रेस को संबोधित करते हुए बताया कि श्रम संसाधन विभाग के अन्तर्गत बिहार राज्य प्रवासी मजदूर दुर्घटना अनुदान योजना नियमावली, 2008 (वर्ष 2011, 2014, 2016 एवं 2020 में यथा संशोधित) के नियम 5, 5क एवं 5ख में संशोधन के फलस्वरूप बिहार राज्य प्रवासी मजदूर दुर्घटना अनुदान योजना (संशोधन) नियमावली, 2023 को लागू करने की स्वीकृति दी गई। पूर्व में बिहार के

प्रवासी मजदूरों की दुर्घटना में मृत्यु पर उनके परिजनों को 01 लाख, पूर्ण अपंगता पर, 75 हजार तथा आंशिक अपंगता पर 37,500 रुपये बिहार सरकार द्वारा दुर्घटना अनुदान स्वरूप दिया जाता था, जिसे बढ़ाकर क्रमशः 02 लाख (दुर्घटना मृत्यु), 01 लाख (पूर्ण अपंगता) तथा 50 हजार रुपया (आंशिक अपंगता) कर दिया गया है। नगर विकास एवं आवास विभाग के अन्तर्गत बिहार संग्रहालय से पटना संग्रहालय को जोड़ने वाले सब-वे निर्माण योजना के लिए 542 करोड़ की स्वीकृति दी गई है। नगर विकास एवं आवास विभाग के ही तहत पटना शहर के करमलीचक जोन में विश्व बैंक सम्पोषित एसटीपी के कार्य को पूर्ण करने के लिए 98 करोड़ उनसठ लाख उनासी हजार रुपये, जिसमें से केन्द्रांश के रूप में 62 करोड़ 17 लाख एवं राज्यांश की 30 प्रतिशत हिस्सेदारी (सेंटेज की राशि सहित) कुल 36 करोड़ 42 लाख उनासी हजार का व्यय राज्यांश के रूप में किये जाने की स्वीकृति दी गई। नगर विकास एवं आवास विभाग के ही तहत राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन अन्तर्गत सामाजिक जागरुकता एवं संस्थागत विकास घटक को क्रियान्वयन के लिए जीविका को हस्तांतरित करने से संबंधित समझौता ज्ञापन प्रारूप की स्वीकृति दी गई।

ज्ञानवापी: गैर हिंदुओं के प्रवेश पर रोक की याचिका खारिज

प्रयागराज: वाराणसी स्थित ज्ञानवापी परिसर में गैर हिंदुओं के प्रवेश पर रोक लगाने की मांग वाली जनहित याचिका पर इलाहाबाद हाईकोर्ट ने खारिज कर दिया है। हाईकोर्ट में यह याचिका राखी सिंह व अन्य की तरफ से दाखिल की गई थी। इस पर मुख्य न्यायमूर्ति प्रीतिंकर दिवाकर और न्यायमूर्ति आशुतोष श्रीवास्तव की खंडपीठ ने सुनवाई की। इस जनहित याचिका में मांग की गई थी कि श्रृंगार गौरी केस में जब तक वाराणसी जिला अदालत का फैसला नहीं आ जाता तब तक परिसर में गैर हिंदुओं का प्रवेश प्रतिबंधित किया जाए और ज्ञानवापी

परिसर में मिले हिंदू प्रतीक चिन्हों को संरक्षित रखने का आदेश दिया जाए। जनहित याचिका में कहा गया था कि वाराणसी में श्री आदि विश्वेश्वर मंदिर (वर्तमान ज्ञानवापी परिसर) के सदियों पुराने अवशेषों को बचाना है। दावा किया गया था कि विवादित स्थल (सेटलमेंट प्लॉट नंबर 9130 वार्ड और दशाश्वमेघ वाराणसी) पर एक भव्य मंदिर हुआ करता था।

लदानियों की मनमानी हड़ताल से परेशान; खरीदारों पर आपदा में अवसर खोजने का आरोप, मंत्री की दो टूक

हिमाचल के बागवान सड़कों पर उतरेंगे

शिमला: हिमाचल के सेब बागवान फिर से सड़कों पर उतरने की तैयारी कर रहे हैं, क्योंकि सेब खरीदार (लदानी) आपदा में अवसर खोज रहे हैं। प्रदेश की अलग-अलग मंडियों में बाहरी राज्यों से आए कुछ लदानी सेब की खरीद में आनाकानी कर रहे हैं। इनका विरोध 2 किलो की काट नहीं करने के सरकारी आदेशों को लेकर है। बागवानी मंत्री ने सभी आढ़तियों और लदानियों को सरकारी आदेशों की अनुपालना करने की हिदायत दी है। उन्होंने कहा कि बागवानों का शोषण बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। जो व्यक्ति कानून की उलंघन करेगा, उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। राज्य के मार्केटिंग बोर्ड ने प्रति पेटी 2 किलो की काट नहीं करने के निर्देश दे

रखे हैं। मगर, कुछ लदानी इसे मानने को तैयार नहीं हैं। इसी वजह से शिमला की भट्टाकुफर मंडी में 2 दिन और सोलन मंडी में 2 दिन से लदानी सेब की खरीद नहीं कर रहे।

बागवानों को उठाना पड़ रहा नुकसान: प्रदेश की अन्य मंडियों में भी लदानी इसी तरह आनाकानी करके सरकार पर दबाव बनाने का प्रयास कर रहे हैं। इसकी मार बागवानों पर पड़ रही है, क्योंकि बागवान मुश्किल से सेब को मंडियों तक ला रहे हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कें बंद होने से पीठ पर सेब को मुख्य सड़कों तक पहुंचाया जा रहा है। इससे सेब को मंडी तक पहुंचाने और बेचने में वक्त ज्यादा लग रहा है। ऊपर से लदानी कभी भी हड़ताल पर चले जाते हैं। इससे बागवानों के सब्र का बांध भी टूटता जा रहा है। इसलिए वे सड़कों पर उतरने की तैयारी में हैं।

लदानियों को भड़का रहे आढ़ती: सेब उत्पादक संघ के अध्यक्ष सोहन ठाकुर ने बताया कि लदानियों को आढ़ती भड़का रहे हैं, ताकि किलो के हिसाब से सेब बेचने के सिस्टम को फेल किया जा सके।

खबर संक्षेप

पुलिस को देख मची भगदड़, पांच जुआरी किये गए गिरफ्तार

शंकरगढ़। शंकरगढ़ पुलिस ने सार्वजनिक स्थल पर जुआ खेल रहे पांच लोगों को गिरफ्तार किया है। मौके से ताश के पत्ते व 3800 रुपये बरामद हुए हैं। एसओ मनोज कुमार सिंह ने बताया कि मुखबिर की सूचना पर थाने के एसआई ऋतुराज सिंह, अमरेंद्र सिंह व ट्रेनी दरोगा कृष्णकांत ने अपनी टीम के साथ शंकरगढ़ कस्बे में छापेमारी की। पुलिस टीम को देख फड़ पर बैठे जुआरियों व अड्डा जमाए लोगों में भगदड़ मच गई। पहले से तैयार पुलिस ने मौके से पांच जुआरियों को धर दबोचा। पुलिस ने जामा तलाशी में 1420 रुपये और फड़ से 2400 रुपये व ताश के पत्ते बरामद किए हैं। धारा 13 सार्वजनिक जुआ अधिनियम के तहत सतीश केसरवानी, गोपाल केसरवानी, शिवेंद्र सिंह, आमिर खान पुत्र अफजाल खान और अमन केसरवानी का चालान कर दिया गया है। छापा मारने वाली टीम में कांस्टेबल शशिकांत यादव, रोहित कुमार, विनय कुमार यादव आदि शामिल रहे।

मऊआइमा में आरएसएस के खंड कार्यवाह पर बमों से ताबडतोड़ हमला बाल बाल बचे

बदमाशों की बाइक,तस्वीर सीसी कैमरे में कैद, इसके पूर्व गोली मार कर हत्या की हो चुकी है कोशिश, भाई भतीजे को मिल चुकी है जान से मारने की धमकी

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। मऊआइमा के मरखा मऊ में आर एस एस के खण्ड कार्यवाह के कार्यालय पर मंगलवार को सुबह एक बाइक पर दो बदमाशों ने रैनकोट पहन कर आये और ताबड़तोड़ तीन बमो से खण्ड कार्यवाह पर कातिलाना हमला किया। गनीमत रही बाल बाल बचे खण्डकार्यवाह सूचना पर भारी फोर्स तैनात कर दी गई है। खण्ड कार्यवाह के तहरीर पर पुलिस मुकदमा दर्ज कर लिया है।और सीसी कैमरे के आधार पर पुलिस बदमाशो की शिनाख्त करने में जुटी हुई है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के मरखा मऊ गांव निवासी दिनेश कुमार मौर्या पुत्र स्वर्गीय राम सुमेर मौर्या मंगलवार को सुबह लगभग पांच बजकर बीस मीनट पर घर से अपने आर एस एस कार्यलय पर आए। बताया गया है कि तभी एक बाइक पर रिंगकोट पहने पन्नी में लिए तीन बम लगातार दिनेश मौर्या को मारे वह अन्दर जा कर किसी तरह जान बचाए। बमों की आवाज और धुआं देख कर ग्रामीण तथा भाजपा, बजरंगदल, आर एस एस, के काफी कार्यकर्ता एकत्रित हो गए। सूचना पर पहुंची मऊआइमा पुलिस और ए सी पी मनोज कुमार सिंह ने मौके पर बमों के कील, छर्रे बरामद कर के सीसी कैमरे में कैद बदमाशों के होलिया के आधार पर शिनाख्त की कोशिश कर रही है। दिनेश कुमार मौर्या ने मऊआइमा थाने में अज्ञात बाइक सवार दो बदमाशों के खिलाफ तहरीर देकर एफ आई आर दर्ज करा दिया है। तथा एफ आई आर में कहा है कि 22 जनवरी 2021 को उनको गोली मारी गई थी।वह महीनों अस्पताल में भर्ती थे। उसके बाद मोबाइल से उनके भाई पत्रकार राकेश मौर्या व उनके भतीजे अमन मौर्या को जान से मारने की धमकी दी गई। फिर भतीजे को तमंचा लेकर दौडाया गया था। ए सी पी मनोज सिंह ने बताया कि आरोपियों को जल्द पकड लिया जाएगा। पूर्व में मिली धमकियों की जांच की जा रही है।

न्यूज झरोखा

दुर्गावती इंटरनेशनल स्कूल में तिरंगा यात्रा आज

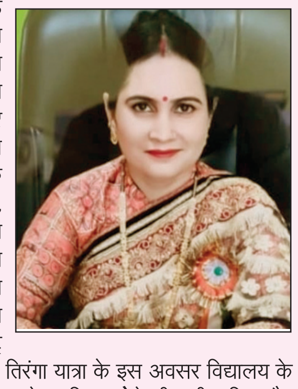

मेजा। दुर्गावती इंटरनेशनल स्कूल एंड कालेज के छात्र छात्राओं द्वारा 9 अगस्त को तिरगा यात्रा का शुभारंभ किया जायेगा ।उक्त आशय की जानकारी स्कूल की प्रिंसिपल डॉ स्वत्रंत मिश्रा ने देते हुए बताया कि यह तिरंगा यात्रा सुबह 11बजे विद्यालय के कैम्पस से होते हुए क्षेत्र के प्रमुख बाजारों रामनगर, सिरसा, मेजारोड़ मेजा होते हुए वापस विद्यालय में समाप्त होगा। इस दौरान सभी छात्र छात्राए अपने अपने हाथो में तिरंगा झंडा लिए झंडा ऊंचा रहे हमारा विजय विश्व तिरंगा प्यारा का जय घोस करते हुए राष्ट्र को सलामी देंगे। श्रीमती स्वत्रंत मिश्रा ने तिरंगा यात्रा के इस अवसर विद्यालय के समस्त छात्र छात्राओं को विद्यालय में समय से उपस्थित होने की अपील किया है।

धूम धाम से मनाया गया जन्मदिन

मांडा। यमुनापार क्षेत्र के मांडा अंतर्गत कोसड़ाकला रतन इंडिया सोलर टू पावर प्लांट में कार्यालय सहायक पद पर कार्यरत रहे मनीष कुमार सोनकर का जन्मदिन बडे. धूम धाम से मनाया गया। मंगलवार शाम को बाबा देवकुंड नाथ मन्दिर के प्रांगण में पावर प्लांट के समस्त स्टॉफ के साथ ही उनके भांजे प्रदीप कुमार हिन्दी दैनिक समाचार पत्र के पत्रकार, अभिषेक कुमार, ओम प्रकाश व राजू शर्मा, ने बधाई देते हुए ईश्वर से उन्हें स्वस्थ्य रखने की प्रार्थना की। और जन्मदिन की बधाई देने वालो की तांता लगा रहा। वहीं मनीष कुमार ने आभार प्रकट करते हुए अपना जन्म स्थान तेवरियाकला, करछना बताया और उपस्थित सहयोगियों को भोजन, मिष्ठान भी कराया।

धूम धाम से मनाया गया एमएलएनएम कालेज में क्यूट इण्डिया मूवमेंट डे

मांडा। मोतीलाल नेहरू मेडीकल कॉलेज प्रयागराज एव यूपी० मेडीकल कम्पनी एन०सी०सी० के तत्वाधान में मंगलवार को क्यूट इण्डिया मूवमेंट डे का कार्यक्रम आयोजित किया गया।जिसमे मेडीकल कॉलेज के प्रधानाचार्य प्रो. डॉ एसपी सिंह, मेजर डा. अनिन अनियन, समादेस अधिकारी, वन यूपी० मेडीकल कम्पनी एनसीसी प्रयागराज, माइक्रोबायलॉजी विभाग की विभागाध्यक्ष डा. रीना सचान, केयर टेकर अधिकारी, मेडीकल एनसीसी कैडेट्स, एवं पी०आई० स्टॉफो को शपथ दिलाई गई एवं इससे सम्बन्धित पोस्टर का अनावरण किया गया । यह क्यूट एक प्रवेश परीक्षा है, जिसके जरिए भारत के कुल 45 केंद्रीय विश्वविद्यालयों, 17 डीम्ड यूनिवर्सिटी, 23 स्टेट यूनिवर्सिटी तथा 58 प्राइवेट यूनिवर्सिटी में एडमिशन दी जाएगी. ये परीक्षा कंप्यूटर बेस्ड टेस्ट (उइळ) मोड में होगा. ये परीक्षा राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (ठळअ) द्वारा आयोजित की जाती है।

भटौती क्रशर प्लांट में ऑपरेटर की ट्रक से दबकर मौत

अखंड भारत संदेश

मेजा। क्षेत्र के क्रशर प्लांट में पोकलैंड आपरेटर की ट्रक से कुचलकर मौत हो गई। घटना बीती रात की है। हादसे से मृतक युवक के घर कोहराम मचा हुआ है। क्रशर प्लांट इस हादसे से अपने आप को बचाने के लिए शव को रातों-रात गायब कर दिया। इतनी बड़ी घटना की सूचना इलाकाई पुलिस को नहीं दी गई। मिली जानकारी के अनुसार मेजा थाना क्षेत्र के सोनबरसा गांव निवासी संतोष पटेल (30) मेजा के भटौती स्थित क्रशर प्लांट में पीएनसी कंपनी में पोकलैंड आपरेटर था। सोमवार की बीती रात संतोष पटेल पोकलैंड मशीन खड़ी कर उसके बगल लेटा था। वहीं एक ट्रक बैक करते समय उसे कुचल दिया। जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। क्रशर प्लांट इस घटना से बचने के लिए रातों-रात बिना पुलिस को सूचना दिए शव को गायब कर दिया। घटना से युवक के परिवार में कोहराम मचा हुआ है। सूत्रों से जानकारी के अनुसार मृतक युवक शादीशुदा था, पता चला है कि उसका पहला बच्चा जन्म लेने वाला है। बच्चे के जन्म लेने के पूर्व ही पिता का साया उठ गया। परिवार वालों को मंगलवार सुबह जब घटना की जानकारी हुई तो वह लोग क्रशर प्लांट पंहुचे। प्लांट के मालिकान घटना की जानकारी देने में आनाकानी करते रहे। करीब दो घंटे बाद परिजनों को जानकारी दी गई की उनको इलाज के लिए शहर ले जाया गया है। जबकि आपरेटर की मौत मौके पर ही हो गई थी। देखा जाए तो आए दिन ऐसे हादसे होते रहते हैं। जिन्हें क्रशर प्लांट के मालिक पुलिस से भी जानकारी देने में कतराते हैं। भटौती क्रशर प्लांट में संचालकों की मनमानी से अब तक सैंकड़ों मजदूर व ड्राइवर अपनी जान गंवा चुके हैं।

ससुराल गए युवक का गांव के ही गड्ढे में तैरता मिला शव

रत्योरा। स्थानीय थाना क्षेत्र के सिकरो गांव के सिकरो माइनर के पास एक गड्ढे में तैरता हुआ शव मिलने से गांव में सनसनी फैल गई। ग्रामीणों ने शव की शिनाख्त कर सूचना परिजनों को दी। रोते बिलखते परिजन मौके पर पहुंच गए। सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जानकारी के मुताबिक अजय सिंह पुत्र सुग्रीव सिंह निवासी सिकरो थाना कोरांव बीते 6 अगस्त को अपनी ससुराल कोरांव थाना क्षेत्र के तराव गांव गया हुआ था। बताया जा रहा है कि अजय सिंह अपनी ससुराल में ही रहता था। इसी सत्र में उसे सिकरो गांव में प्रधानमंत्री आवास मिला था। जिसका निर्माण कार्य पूरा हो गया है और वह अब सिकरो में ही रह रहा था। 6 अगस्त को वह ससुराल गया हुआ था ससुराल से वह अपने गांव के गड्ढे में कैसे पहुंच गया इस बात की जानकारी किसी परिजनों को नहीं हुई। सुबह ग्रामीणों ने तैरता हुआ गड्ढे में शव देखा तो गांव में सनसनी फैल गई। मृतक अजय दो भाइयों में बड़ा था। हादसे के बाद मृतक के माता-पिता पत्नी व बच्चों का घटनास्थल पर ही रो रो कर बुरा हाल था।

ई रिक्शा पलटने से गंभीर रूप से घायल मजदूर का इलाज के दौरान मौत

शव सोमवार को शाम से घर पर ही रखा, तमाम पंचायत के बाद मंगलवार को पुलिस को सूचना दी, ई रिक्शा चालक पर मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। मऊआइमा में सोमवार को ई रिक्शा पर आलू की बोरी एवं सवारी बैठा कर जा रहा ई-रिक्शा रास्ते मे पलट गया। बैठे मजदुर पर आलू की बारी गिर गई। जिसमें दब कर बैठा मजदूर बुरी तरह घायल हो गया।जिसे जख्मी हालत में शहर के अस्पताल में भर्ती कराया गया था जहां उपचार के दौरान मौत हो गई । शाम को शव घर लाकर गांव में पंचायत की गई। पंचायत में बात नही बनी तो मंगलवार को ई रिक्शा चालक पर मुकदमा दर्ज कराया गया। तब पुलिस शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजी है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के चमरुपुर गांव निवासी पृथ्वी पाल 42 वर्ष पुत्र रामजग ईट भटठे पर मजदूरी करता है। ।बताया गया है कि सोमवार को लगभग तीन बजे मऊआइमा बाजार करने आए थे जहाँ पृथ्वीपाल के गांव का ही ई रिक्शा चालक कुलदीप पटेल पुत्र रामभजन जो पहले से आलू की बोरी लादे था।उसके ई रिक्शा पर बैठ कर घर जा रहा था। बताते हैं कि जैसे ग्राम सरायखव्वाजा मोड राइस मिल के पास पहुंचा सडक खराब होने से ई रिक्शा पलट गया। जिसमें पृथ्वीपाल बोरों में दब गया। जिसे आस पास के लोगों ने उठाया और परिजनों को सूचना दिए। बताते हैं कि जख्मी पृथ्वीपाल को फाफामऊ के एक निजि अस्पताल में भर्ती कराया गया था।जहां उपचार के दौरान पृथ्वी पाल की मौत हो गई। परिजन पृथ्वी पाल के शव को घर लेकर चले आए। रातभर ग्राम प्रधान के नेतृत्व में पंचायत होती रही बात न बनने पर मंगलवार को दस बजे सूचना पुलिस को दी गई।तथा मृतक के बडे भाई लक्ष्मीनारायण ने ई रिक्शा चालक कुलदीप पटेल पुत्र रामभजन के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया। पुलिस शव मृतक के घर से मंगलवार को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दी है। पृथ्वी पाल की मौत पर घर में कोहराम मचा हुआ है। मृतक की पत्नी राजकुमारी, बेटे अनुज 14 वर्ष, अन्तिमा 10 वर्ष, अनुप उर्फ जानू 12 वर्ष का रो रो कर बुरा हाल है।

उद्योग व्यापार मण्डल ने बैठक कर ज्वेलर्स व्यापारी मामले की किया घोर निंदा

खुलासा नही हुआ तो पुलिस कमिश्नर का करेंगे घेराव : पप्पू उपाध्याय

अखंड भारत संदेश

मेजा। उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मण्डल के जिला अध्यक्ष विष्णु प्रकाश ऊर्फ पप्पू उपाध्याय के नेतृत्व में मेजारोड व्यापार मण्डल कार्यालय में एक आवश्यक बैठक आयोजित की गई जिसमे बीते 7अगस्त को थरवई हेतापट्टी मे हुई ज्वेलर्स व्यापारी अशोक केशरवानी के यहां बदमाशो द्वारा की गई लूट पाट मारपीट तथा चौकीदार की हत्या मामले मे पुलिस प्रशासन द्वारा बरती जा रही घोर लापरवाही की निदा करते हुऐ जल्द खुलासा करने की माग की गई ।बैठक में उपस्थित व्यापारियों को संबोधित करते हुए श्री उपाध्याय ने कहा कि पुलिस प्रशासन गंभीरता पूर्वक सम्पूर्ण प्रकरण की जांच कर मामले का अति शीघ्र खुलसा करे तथा पुलिस कर्मियों को दण्डित करने के साथ साथ जघन्य अपराध मे शामिल बदमाशो को गिरफ्तार कर जेल भेजें उन्होंने आगे कहा कि यदि उक्त घटना का जल्द से जल्द खुलासा नहीं किया गया तो उद्योग व्यापार मण्डल पुलिस कमिश्नर प्रयागराज का घेराव करेगा।इस मौके पर ओपी पाण्डे, सागर गुप्ता, आशा राम विश्वकर्मा, राजू केशरवानी ,रोहित तिवारी मुन्ना पांडेय तथा राजा अग्रवाल के अलावा कई अन्य लोग समस्त रुप से उपस्थित रहे।

बस स्टैंड के सामने से खदेड़ी गई डगामार बसें

प्रयागराज। सिविल लाइंस बस स्टैंड के सामने से हफ्ते भर से रोडवेज की ओर से डग्गामार बसों के खिलाफ चलाया जा रहा अभियान मंगलवार को भी जारी रहा। सुबह रोडवेज की टीम ने सिविल लाइंस बस स्टैंड के सामने से निजी बसों और छोटे वाहनों को खदेड़ा। हालाकि मोटर मालिकों ने इसका विरोध भी किया, मगर रोडवेज के कर्मचारियों ने उनकी एक न सुनी। पुलिस बुलाने की बात पर आखिर मोटर मालिकों ने बसों को हटवाया। सिविल लाइंस के एआरएम जय करण सिंह ने बताया की लगातार कार्यवाही की जाएगी। किसी भी सूरत में निजी बसों को खड़ा होने नहीं दिया जाएगा। इस बारे में ट्रैफिक पुलिस के अधिकारियों से मिलकर शिकायत भी दर्ज कराएंगे।

दिव्यांग छात्र हम सब के लिए रोल मॉडल : कैलाश सिंह

बीआरसी मेजा में पेरेंट्स काउंसलिंग का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

मेजा। ब्लॉक संसाधन केंद्र मेजा में दिव्यांग बच्चों और अभिभावकों के साथ पेरेंट्स काउंसलिंग का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में खंड शिक्षा अधिकारी कैलाश सिंह ने आए हुए सभी अभिभावकों एवं दिव्यांग बच्चों का स्वागत करते हुए कहा कि ऐसे भी दिव्यांग छात्र हैं जो अब हम सब के लिए रोल मॉडल हैं, जो कुछ अंग विशेष की परेशानी के कारण भी सामान्य बच्चों से विशेष दक्षता रखते हैं। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के बच्चों को थोड़ा विशेष प्रकार के देखरेख की आवश्यकता होती है। इनको किसी तरह का बोझ न समझ कर उनके शिक्षा के लिए हम सबको मिलकर के सहयोग करना है। उन्होंने कहा की ऐसे दिव्यांग बच्चों के शिक्षा के लिए शासन द्वारा समर्थ एप के माध्यम से रजिस्टर्ड कराए। जिसमें उनके सुपरविजन व स्क्रीनिंग की व्यवस्था की गई है। खण्ड शिक्षा अधिकारी ने दिव्यांग छात्रों के लिए शासन द्वारा किए जा रहे विभिन्न प्रकार की योजनाएं जिसमें स्टाइपेंड, मेडिकल किट एवं मेडिकल टीम द्वारा मेडिकल चेकअप कर प्रमाण पत्र भी जारी किए जा रहे हैं और आवश्यक उपकरण भी प्रदान किए जाएंगे।ऐसे दिव्यांग छात्र जो स्कूल में नामांकित है वे यदि विद्यालय तक नहीं पहुँच सकते तो उनके लिए स्पेशल एजुकेटर के द्वारा घर पर शिक्षा की व्यवस्था की गई है। बस आवश्यकता है कि हम ऐसे बच्चों का रजिस्ट्रेशन समीप के परिषदीय विद्यालय में कराएं। काउंसिल में विशिष्ट अतिथि प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष मनीष तिवारी ने कहा कि दिव्यांग बच्चों की शिक्षा में आने वाली समस्याओं के निराकरण के लिए परिषदीय स्कूल के अध्यापकों से उनके अभिभावक या माता-पिता संपर्क स्थापित कर उनके लिए कुछ विशेष करने में अपना योगदान करें जिससे वह भी बच्चे शिक्षा की मुख्यधारा में जुड़ सकें। उन्होंने कहा कि अब दिव्यांगता किसी बच्चे के विकास में बाधक नही बन सकता।कार्यक्रम का संचालन आई टी शिक्षक अजीत मिश्र ने किया। कार्यक्रम की शुरूआत माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण करने के बाद दिव्यांग बच्चों का स्वागत किया गया। इस दौरान मेडिकल चेकअप भी किया गया। इस मौके पर ज्ञानेश्वर प्रसाद,लक्ष्मीकांत,विमलेश यादव सहित कई लोग उपस्थित रहे।

तालाब के भूमि पर लगी धान की फसल को प्रशासन ने कराया नष्ट

कोरांव के देवीबांध गांव का मामला, शिकायत पर हुई कार्रवाई, राज्य सरकार मत्स्य विभाग के नाम से अंकित है तालाब, ट्रैक्टर से जुतवाई गई धान की फसल

अखंड भारत संदेश

रत्योरा। कोरांव तहसील क्षेत्र के देवीबांध गांव में राज्य सरकार मत्स्य विभाग के नाम से 40 बीघा तीन बिस्वा रकबे वाले तालाब पर लोगों ने अतिक्रमण कर खेती करना शुरू कर दिया था। जिसकी शिकायत गांव के ही विकास पांडेय के द्वारा की गई थी। शिकायत के आधार पर मत्स्य पालक विकास अभिकरण प्रयागराज ने सभी अतिचारियों को अतिक्रमित की गई जमीन को खाली करने के बाबत नोटिस दी गई थी। लेकिन अतिचारियों के द्वारा तालाबी रकबे की भूमि को खाली नहीं किया गया। जिसके बाद जिलाधिकारी के निर्देश पर उप जिलाधिकारी कोरांव अविनाश सिंह यादव ने राजस्व टीम व पुलिस बल के साथ तालाबी रकबे के भूमि पर लगाई गई धान की फसल को ट्रैक्टर से जुतवाकर नष्ट करा दिया। तालाब की भूमि पर अतिक्रमण करने वाले किसानों में सुक्कर सिंह, विजेंदर सिंह, पुड़की, कौशल, विद्याकांत, बृज बिहारी आदि के द्वारा धान की फसल लगाई गई थी। जिसे तहसील प्रशासन ने राजस्व टीम व पुलिस बल की मौजूदगी में रोपी गई धान की फसल को ट्रैक्टर से जुतवाकर नष्ट करा दिया। ज्ञातव्य हो कि मत्स्य पालन विकास अभिकरण प्रयागराज के नाम से अंकित तालाब का रकबा 40 बीघा 3 बिस्वा है। 20 बीघे के भूखंड पर तालाब मौजूद है लेकिन 20 बीघे जमीन पर गांव के ही अतिचारियों के द्वारा खेती की जा रही थी जिसे प्रशासन ने नष्ट करा दिया है। इसी प्रकार तहसील क्षेत्र के अल्हवा गांव में उचित दर विक्रेता के द्वारा गांव के सरकारी जमीन पर अतिक्रमण कर कई वर्षों से खेती की जा रही है। जिस जमीन को तत्कालीन एसडीएम के निर्देश पर पुलिस एवं राजस्व टीम के द्वारा फसल को जुतवा कर नष्ट कराते हुए जमीन को खाली करा दिया था। लेकिन दबंग उचित दर विक्रेता व अतिचारी लाल बहादुर पाल ने पुनः उक्त भूखंड को अपने कब्जे में लेते हुए धान की रोपाई करा दी है। जिसकी शिकायत ग्राम प्रधान के द्वारा उच्चाधिकारियों से की गई है। उच्चाधिकारियों के निर्देश के बाद भी स्थानीय तहसील प्रशासन मामले में कोई कार्रवाई नहीं कर रहा है जिससे अतिचारी के हौसले बुलंद हैं।

आजमगढ़ की घटना को लेकर वित्तविहीन शिक्षक शिक्षण कार्य से रहे विरत, जताया विरोध

अखंड भारत संदेश

करछना। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ वित्तविहीन गुट प्रयागराज ने चिल्ड्रन गर्ल्स स्कूल आजमगढ़ में स्कूल की छात्रा द्वारा आत्म हत्या किए जाने के फलस्वरूप विद्यालय के प्रबंधक एवं प्रधानाचार्य पर पुलिसिया कार्यवाही की घोर निंदा की है तथा इस मामले में बिना सोचे समझे एक पक्षी कार्यवाही की कटु भर्त्सना की गयी। प्रदेश सरकार द्वारा वित्तविहीन विद्यालयों के प्रति बरती जा रही घोर उपेक्षा तथा उन्हें बंद करने का कुत्सित प्रयास किया जा रहा है। निजी विद्यालयों की प्रदेश व्यापी बंद का समर्थन संघ के प्रदेश अध्यक्ष लाल विहारी यादव के निर्देश पर जिला इकाई प्रयागराज ने खुला समर्थन किया है। ज्ञात हो कि आज विद्यालयों के प्रदेश व्यापी बंद का प्रयागराज में भी व्यापक असर रहा। अधिकांश विद्यालय या तो बंद रहे या शिक्षकों ने शिक्षण कार्य का बहिष्कार किया। गंगापार जमुना पार तथा नगर क्षेत्र में प्रबंधकों प्रधानाचार्यो तथा शिक्षकों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लेकर प्रबंधतंत्र तथा प्रधानाचार्य के विरुद्ध दंडात्मक कार्यवाही का विरोध किया गया। स्थानीय रामनारायण लाल इंटर कॉलेज करछना में संघ की एक आपात बैठक जिलाध्यक्ष ननकेश बाबू की अध्यक्षता में संपन्न हुई। जिसमें मुख्य मंत्री उत्तर प्रदेश तथा माध्यमिक शिक्षा मंत्री से अपील की गई कि तत्काल कदम उठाते हुए चिल्ड्रन स्कूल के प्रधानाचार्य तथा प्रबंधक के विरुद्ध उत्पीड़न की कार्यवाही बंद करें। अन्यथा जनपद के हजारों प्रबंधक प्रधानाचार्य एवं शिक्षक शिक्षण कार्य का बहिष्कार जारी रखेंगे। जिसकी जिम्मेदारी शासन की होगी।उक्त आशय की जानकारी संघ के मीडिया प्रभारी जेपी यादव ने दी। बैठक में अभय राज सिंह फूलचंद कनौजिया बुधराम यादव सीता शरण बालेंद्र गौतम शिव मोहन पटेल जेपी यादव गोविंद प्रसाद भूतिया अमर बहादुर प्रेमचंद सर्वेश यादव अवधेश श्रीवास्तव सी पी मिश्रा विजय कमल चंद अमर चंद गुप्ता अनिल विश्वकर्मा प्रेमचंद सी बी यादव आदि शिक्षक उपस्थित रहे।

खबर संक्षेप

मुर्गा लड़ाकर जुआ खेलते ग्यारह लोगो को पुलिस ने पकड़ा

प्रयागराज। होलागढ़ थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत सुल्तानपुर अकबर में स्थित इशा नगर गर्ल्स इंटर कालेज के बगल रविवार को मुर्गा लड़ाकर जुआ खेलते पुलिस ने ग्यारह लोगों को पकड़ कर 13 जुआ ऐक्ट के तहत विधिक कार्यवाही की।जिसे बाद में मुचलके की जमानत पर सभी को रिहा कर दिया गया। बताया गया कि रविवार को पुलिस ने चार मुर्गा और फंड से इक्कीस सौ रुपया नगद और जमा तलासी में कुल 5360 रुपया बरामद किया।चारो मुर्गा को बदली के पूरा निवासी मो वैस को सुपुर्द किया गया। पकड़े गए जुआड़ी में मो समीर, दिलशाद, अली शेर, मो सादिक,दिलशाद, बब्बू साहू, सुभाष चन्द्र, गुलाम मोहम्मद आदि शामिल रहे। इसमें तीन लोग इलाके के और अन्य बाहरी रहे। सूत्रों की माने तो यहां इस तरह का जुआ कई महीने से खेला जा रहा था।

मरीज देखने निकले डॉक्टर का खून से सना मिला शव

घर से 100 मीटर की दूरी पर नग्न अवस्था में मिली लाश,लीलापुर रोड पर चलाते थे पैथोलॉजी सेंटर, सांड के हमले से डॉक्टर के मौत की रही चर्चा,परिजनो ने लगाया हत्या का आरोप

अखंड भारत संदेश

झूंसी। थाना क्षेत्र के चक हरिहर वन गांव में मंगलवार की सुबह एक डॉक्टर की खून से सनी लाश मिलने पर सनसनी फैल गई। डॉक्टर के शरीर पर एक भी कपड़ा नहीं था कई जगह चोट के निशान भी थे। प्राइवेट पार्ट के पास भी चोट के निशान थे। मौके पर जुटे लोगो में तरह-तरह की चचाएं थी। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिए भेजा। वही डॉक्टर की मौत से परिजनों का रो रो कर बुरा हाल है। हंडिया सैदाबाद के रहने वाले शोभनाथ मौर्या 54 काफी समय से झूंसी के चक हरिहर वन में मकान बनाकर परिवार के साथ रहते थे। मंगलवार की सुबह डॉक्टर शोभनाथ मौर्या का शव उनके घर के पास कीचड़ में खून से लथपथ मिला। लोग टहलने निकले तो शव देख मामले की सूचना पुलिस को दी मौके पर डॉक्टर के परिजन भी रोते बिलखते पहुंच गए। शव से कुछ दूर पर बीपी की मशीन व मोबाइल पड़ा था शरीर पर कोई भी कपड़ा नहीं था। बताया जाता

है कि सुबह-सुबह उनके फोन पर किसी का फोन आया था और वह पेशेंट देखने की बात बोलकर घर से निकले थे। पत्नी की कोरोना में मौत हो गई थी घर में वह बेटी अर्पिता व अर्पित के साथ रहते थे।

दो डॉक्टरों के पैनल ने वीडियो ग्राफी में शव का किया पोस्टमॉर्टम

बता दे कि मृतक डॉक्टर सोभनाथ मौर्य का पोस्टमार्टम दो डॉक्टरों के पैनल ने वीडियो ग्राफी में किया। डॉक्टरों के मुताबिक हेड इंजरी के अलावा बाई जांघ, पीठ, कमर में चोट पाई गई

हाईकोर्ट ने निचली अदालत के फैसले को रखा बरकरार, 40 वर्ष पूर्व हुई हत्या के आरोपियों को किया बरी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने शाहजहांपुर जिले के एसएम नार्थ थाने में 40 वर्ष पूर्व दर्ज हुई हत्या के मामले में आरोपियों को बरी करने के निचली अदालत के फैसले को बरकरार रखा है। कोर्ट ने कहा कि निचली अदालत के फैसले में हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है। लिहाजा तीनों आरोपियों को बरी किया जाता है।यह आदेश न्यायमूर्ति सूर्य प्रकाश केसरवानी और न्यायमूर्ति नंद प्रभा शुक्ला की खंडपीठ ने यूपी सरकार की आरे से दाखिल आपराधिक अपील को खारिज करते हुए दिया है। प्रतिवादियों पर आरोप था कि उन्होंने भैंस के लेनदेन में हुए विवाद में कुंदन सिंह की हत्या कर दी और उसकी पत्नी को घायल कर दिया। प्राथमिकी दर्ज होने के बाद हरदयाल सिंह, तिरलोक सिंह, बलविंदर सिंह, भूरा, दिलीप सिंह और सरदार सिंह के खिलाफ आईपीसी की धारा 302/307 के तहत आरोप पत्र दाखिल हुआ। सत्र न्यायालय ने मामले में आरोपियों को बरी कर दिया। यूपी सरकार ने हाईकोर्ट के फैसले को चुनौती दी। कोर्ट ने कहा कि मृतक की चोटों को अभियोजन पक्ष स्पष्ट रूप से साबित नहीं कर सका। चिकित्सा साक्ष्य और गवाहों के साक्ष्य पुष्टिकारक नहीं थे। लिहाजा आरोपियों को मामले से बरी किया जाता है।

दहेज की मांग ना पूरी होने पर घर से भगाया

फाफामऊ। थाना क्षेत्र के गद्दोपुर गांव की एक विवाहिता को उसके ससुराल पक्ष के लोगों ने दहेज की मांग पूरी होने पर मारपीट कर उसे घर से भगा दिया। पीड़ित विवाहिता ने मंगलवार को फाफामऊ थाना में ससुराली जनों के खिलाफ दहेज उत्पीड़न और मारपीट का मुकदमा दर्ज कराया है। जानकारी के मुताबिक गद्दोपुर गांव की एक युवती की शादी तीन साल पहले प्रतापगढ़ जिले के कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत मेदनी कटरा में एक युवक के साथ हुई थी। महिला का आरोप है कि उसके ससुराल पक्ष के लोग शादी के बाद से ही उससे दहेज की मांग करने लगे थे। दहेज न देने से आए दिन उसे ससुराल पक्ष के लोग विवाहिता से मारपीट कर उसे प्रताड़ित करते थे। कुछ दिन पहले उसे मारपीट कर उसकी दुधमुही बेटी के साथ घर से भगा दिया।

पुलिस ने डुगडुगी बजाकर गुड्डू मुस्लिम को किया भगोड़ा घोषित

शाइस्ता के बाद गुड्डू मुस्लिम भी भगोड़ा घोषित,घर पर चस्पा हुई कुर्की की नोटिस, उमेशपाल हत्याकांड में चल रहा फरार

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। उमेश पाल हत्याकांड के आरोपी बमबाज गुड्डू मुस्लिम को मंगलवार को भगोड़ा घोषित कर दिया गया। पुलिस ने शिवकुटी के लाला की सरैया मोहल्ले में उसके पैतृक निवास पर कुर्की की नोटिस चस्पा की। इससे पहले सोमवार को माफिया अतीक अहमद की पत्नी शाइस्ता परवीन को धूमनगंज पुलिस ने भगोड़ा घोषित किया था।

उमेश पाल हत्याकांड में 5 लाख रुपए का है इनामी :

विशेष न्यायाधीश के आदेश पर धूमनगंज पुलिस ने डुगडुगी बजाकर उद्घोषणा की कि उमेश पाल हत्याकांड में 5 लाख रुपए के इनामी बमबाज गुड्डू मुस्लिम को भगोड़ा घोषित कर दिया गया है। अगर नियत समय तक वह कोर्ट में सरेंडर नहीं करता है तो धारा 83 के तहत उसके घर कुर्की की कार्रवाई होगी। धूमनगंज इंस्पेक्टर राजेश मौर्या ने यह भी माइक से उद्घोषणा की उसे पनाह और संरक्षण देने वालों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई होगी।

उमेश पाल मर्डर केस में वांछित हैं गुड्डू मुस्लिम :

विशेष न्यायाधीश रउ-रळ के आदेश पर धूमनगंज पुलिस ने सोमवार को उमेश पाल हत्याकांड की मास्टर माउंड शाइस्ता परवीन के चकिया स्थित आवास पर धारा 82 के तहत कुर्की का नोटिस चस्पा किया था। पुलिस और इंटेलिजेंस को धता बताकर शाइस्ता परवीन उमेश पाल हत्याकांड के बाद से फरार चल रही है।शाइस्ता परवीन शूटर गुड्डू मुस्लिम के खिलाफ लुकआउट नोटिस जारी है। शाइस्ता 50 हजार रुपए की इनामी है और गुड्डू मुस्लिम पर 5 लाख रुपए का इनाम घोषित है। दोनों 24 फरवरी 2023 को उमेश पाल व उसके दो गनर की हत्या के बाद से फरार हैं। पुलिस और खुफिया एजेंसियां उन्हें तलाशने में लगी हैं। दोनों का अभी तक सुराग नहीं लग सका है। पुलिस ने कोर्ट में पेश नहीं होने पर धारा 82 के तहत कार्रवाई की है।

माफिया अतीक-अशरफ भी हुए थे भगोड़ा घोषित :

प्रयागराज। माफिया अतीक की पत्नी शाइस्ता परवीन को भगोड़ा घोषित कर उसके घर पुलिस ने मुनादी करा दी। फरार चल रही शाइस्ता परवीन के खिलाफ पुलिस ने 82 की कार्रवाई पूरी की है। इससे पहले राजू पाल हत्याकांड के बाद बसपा सरकार ने ऑपरेशन अतीक चलाया था। तब अतीक को भगोड़ा घोषित किया गया था। इसके बाद अशरफ को भगोड़ा घोषित कर 82 की कार्रवाई के बाद 83 की कार्रवाई के तहत घर की कुर्की की गई थी। अब अतीक-अशरफ की हत्या हो चुकी है। दोनों की पत्नियां भी आरोपित और फरार हैं। अदालत से 82 की कार्रवाई पूरी करा पुलिस ने शाइस्ता परवीन और जैनब को कानूनी रूप से भगोड़ा घोषित कर दिया।

कौंधियारा पुलिस ने दुष्कर्म के अभियोग में वांछित 01 अभियुक्त को किया गिरफ्तार

प्रयागराज। पुलिस आयुक्त प्रयागराज रमित शर्मा के निर्देशन में अपराध वअपराधियों के विरुद्ध चलाए गए अभियान के अंतर्गत पुलिस उपायुक्त यमुनानगर संतोष कुमार मीणा के निर्देश एवम प्रभारी निरीक्षक थाना कौंधियारा संजय द्विवेदी के कुशल नेतृत्व में थाना कौंधियारा पुलिस द्वारा थाना स्थानीय के मु0अ0सं0 115/ 2023 धारा 376/ 504/ 506 भा0द0सं0 के वांछित अभियुक्त राजू चौधरी पुत्र शिवचरन चौधरी निवासी ग्राम खुल्ली बैरी थाना कौंधियारा प्रयागराज को आज दिनांक 08.08.2023 को मुखबिर खास की सूचना पर थाना कौंधियारा क्षेत्रान्तर्गत स्थित पुदई का तारा तालाब के पास ग्राम भमोखर से गिरफ्तार किया गया । नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की गयी।

न्यूज झरोखा

नैनी सोमेश्वर महादेव मंदिर से एक बार फिर उच्चकों ने महिला की उड़ाई जंजीर

नैनी। नैनी कोतवाली क्षेत्र के अरैल स्थित श्रीसोमेश्वर महादेव मंदिर से एक बार फिर उच्चकों ने जलाभिषेक करने आई महिला की सोने की जंजीर गायब कर दी। मंदिर से बाहर आने पर महिला को चेन गायब होने की जानकारी हुई तो अफरातफरी मच गई। नैनी के एडीए कॉलोनी की रहने वाली रामपति देवी मिश्रा सोमवार को अपने पति पत्नी त्रिलोकी नाथ मिश्र के साथ श्रीसोमेश्वर महादेव मंदिर जल चढ़ाने गई थीं। जलाभिषेक के दौरान भीड़ का फायदा उठाते हुए उच्चकों ने उनकी सोने की जंजीर गायब कर दी। इससे पूर्व 24 जुलाई को सोमवार के ही दिन जल चढ़ाने के दौरान अरैल गांव की ही शांति देवी, कुसुम व एडीए निवासी तारा देवी की जंजीर चोरी हुई थी।

लायंस क्लब इंटरनेशनल ने चलाया स्वास्थ्य जागरूकता अभियान

नैनी। नैनी के डभाव में लायंस क्लब इंटरनेशनल स्वास्थ्य जागरूकता अभियान के तहत सरकार द्वारा चलाए जा रहे 1 अगस्त से 7 अगस्त तक स्तनपान सप्ताह कार्यक्रम के अंतर्गत नैनी के गांव डभाव में लायंस क्लब प्रयागराज रॉयल द्वारा क्लब के अध्यक्ष डॉ रमेश चंद्र द्वारा ग्रामीण महिलाओं को अपने नवजात शिशुओं को दूध पिलाने के बारे में जागरूक किया। यह बताया गया कि दूध पिलाने से उनके संदर्भ में निखार आता और बताया गया कि मां का दूध सर्वोत्तम है और यह बच्चे के शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है और तमाम बीमारियों लड़ने की ताकत प्रदान करता है। उनको यह बताया गया कि स्तनपान कराने से पहले अपने स्तन को गुनगुने पानी से से धुल ले उसके बाद ही स्तनपान कराएं। स्तनपान कराने के बाद बच्चे को अपने कंधे से लगाकर उसके पीठ पर थपकी दें जब तक उसको डकार ना आ जाए। इस अवसर पर मुख्य रूप से जाका ब्लॉक की उल्ळड पूनम सिंह,क्लब के अध्यक्ष डॉ रमेश चंद्रा, सचिव ई संत कुमार वर्मा, कोषाध्यक्ष डॉ सूर्यनाथ प्रजापति ई रवि भूषण गुप्ता,श्रीमती सरिता पटेल, सुधा गुप्ता अल्पना वर्मा आदि लोग उपस्थित थे।

15 अगस्त झंडारोहण को लेकर बैठक एसपीओ पुलिस मित्र टीम के कार्यालय पर बैठक हुई संपन्न

नैनी। नैनी विशेष पुलिस अधिकारी एसपीओ पुलिस मित्र टीम थाना नैनी के अंतर्गत एक विशेष बैठक 15 अगस्त झंडारोहण को लेकर बैठक आयोजित हुई जिसमें प्रमाण पत्र और आई कार्ड वितरण किया जाना है। इस बैठक में उपस्थित रहे एसपीओ टीम के प्रभारी अभय राज सिंह उप प्रभारी परवेज अहमद पीआरओ शेख लियाकत अली संगठन सचिव रविन्द्र सिंह थाना कमेटी प्रभारी रवि मिश्रा मीडिया प्रभारी वीरेंद्र पटेल सहायक संदीप विश्वकर्मा सीनियर एरिया इंचार्ज रामजी जयसवाल आदि एसपीओ टीम के पदाधिकारी इस बैठक में उपस्थित रहे। यह जानकारी पीआरओ शेख लियाकत अली ने दी है।

जंक्शन पर हर प्लेटफार्म पर जाने को होगी लिफ्ट

प्लेटफार्मों पर लिप्ट एस्केलेटर्स से जाने के इंतजाम यूपी के किसी स्टेशन पर नहीं हैं

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। प्रयागराज स्टेशन के पुनर्विकास का कार्य 960 करोड़ रूपए में हो रहा है। देशभर के 508 रेलवे स्टेशनों को पुनर्विकसित कर उन्हें एयरपोर्ट सरीखे बनाए जाने की शुरूआत हो गई है। रेलमंत्री ने भी साफ किया है कि प्रयागराज जंक्शन को मुंबई, दिल्ली रेलवे स्टेशनों से खूबसूरत बनाया जाएगा। प्रयागराज स्टेशन के पुनर्विकास का कार्य 960 करोड़ रूपए में हो रहा है। यह सभी रेलवे स्टेशनों के लिए आवंटित रकम में सबसे ज्यादा है। ऐसे में प्रयागराज जंक्शन को सुंदर बनाने के साथ ही यात्री सुविधाओं में भी नंबर वन बनाने की तैयारी है। यही वजह है कि जंक्शन पर ऐसे इंतजाम किए जा रहे हैं। कि हर प्लेटफार्म पर जाने को अलग लिफ्ट और एस्केलेटर्स होंगे। कनकोर्स से निकलने के बाद यात्री

प्रत्येक प्लेटफार्म पर पहुंचने के लिए लिफ्ट और एस्केलेटर का इस्तेमाल करेंगे। अभी तक सभी प्लेटफार्मों पर लिपट और एस्केलेटर्स से जाने के इंतजाम यूपी के किसी स्टेशन पर नहीं हैं। यूं तो 42 लिफ्ट तथा 29 एस्केलेटर लगाने का बजट पास हो चुका है लेकिन जरूरत के मुताबिक अब इसे बढ़ाया भी जाएगा। स्टेशन निर्माण के दौरान लिफ्ट और एस्केलेटर की संख्या बढ़ सकती है। रेलवे अफसरों की तैयारी है कि जो लिफ्ट और एस्केलेटर यात्री इस्तेमाल करें उसी से रेलवे की टीमें न आएं-जाएं। इसलिए रनिंग स्टॉफ के लिए अलग से इंतजाम तैयारी है।

रोजगार मेला में निजी कंपनियों द्वारा 421 युवाओं का किया सलेक्शन

अखंड भारत संदेश

करछना। प्रयाग इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनैजमेट बेंदौ करछना प्रयागराज मे मंगलवार को रोजगार मेले का आयोजन किया गया। यह रोजगार मेला संस्थान , नेशनल कैरियर सर्विस पोर्टल एवं क्षेत्रीय सेवायोजन कार्यालय उत्तर प्रदेश प्रयागराज के संयुक्त तत्वाधान से क्षेत्रीय बेरोजगारो को सेवायोजित कराने के उद्देश्य से आयोजित किया गया जिसमें निजी क्षेत्र की 17 से अधिक कंपनियों द्वारा छात्रों को रोजगार प्रदान किया गया। कंपनियों द्वारा हाईस्कूल, इंटर, स्नातक, आई. टी. आई. , डिप्लोमा, बी.टेक, बी.ए , बी. एस . सी. बी कॉम. के छात्रों को विभिन्न क्षेत्रो के अलग अलग पदो पर चयनित किया गया । कार्यक्रम का आरम्भ मुख्य अतिथि करछना ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि श्री कमलेश द्विवेदी एवं विशिष्ट अतिथि भाजपा जिला उपाध्यक्ष एवं चेयरमैन श्री ज्ञान सिंह पटेल द्वारा दीप प्रज्वलित कर-के किया गया। इस क्रम मे सहायक जिला रोजगार सहायता अधिकारी श्री पंकज सिंह एवं श्री प्रशांत ने मेले मे आए छात्रों की कैरियर संबंधी काउंसलिंग भी की । संस्था के चेयरमैन श्री ज्ञान सिंह ने उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा युवाओ को रोजगार देने के इस प्रयास की सराहना की और छात्रों को रोजगार पाने का एक अच्छा अवसर बताया। संस्था के सचिव श्री विकास सिंह ने छात्रों को अपने अंदर छुपे हुनर की पहचान कर उसे देश, समाज एवं स्वयं को आगे बढ़ाने को कहा। रोजगार मेले मे लगभग 1500 से अधिक अभ्यर्थियों ने भागीदारी की जिसमे से कुल 421 छात्र अलग अलग कंपनियों मे जिसमें कृष्णा मारूति ने 35 , टेक महिंद्रा ने 31 पेटीएम ने 59, सिद्धि इन्फोनेट ने 62 कैरियर ब्रिज स्किल सॉल्यूशन ने 105, डस्की स्टेलियन एजुकेशन एंड ट्रेनिंग

सर्विसेज ने 34 प्राइड फ्यूचर ऑर्गेनिक हर्बल ने 30, जे पी वी एम जी मार्केट ने 7, डिजायर सिक्योरिटी ने 10, डिजर्व कैरियर केयर प्राइवेट लिमिटेड ने 24, प्रिटेसन कॉलेज ने 2, आमदनी कंपनी ने 20, रोहित हाइब्रिड सीड्स प्रा लि ने 2 छात्रों का चयन हुआ। कार्यक्रम का समापन निदेशक एस सी तिवारी द्वारा सभी को धन्यवाद देकर किया गया।कुलसचिव आशीष तिवारी ने कार्यक्रम में सहयोग के लिए सभी अध्यापकों एवं कर्मचारियों के योगदान की सराहना की। कार्यक्रम का संचालन आस्मां नंद सिंह एवं प्लेसमेंट हेड सुप्रिया श्रीवास्तव द्वारा किया गया। इस मौके पर सेवायोजन कार्यालय के प्रधान सहायक सुनील कुमार पांडेय एवं प्रमोद पांडेय जिनके सहयोग से कार्यक्रम सफल हुआ एवं संस्था के सभी विभागाध्यक्ष वीरेंद्र सिंह, आशुतोष तिवारी, एच एल पटेल, प्रेम चंद्र,रवींद्र सिंह, , भोला पांडे, शुभम शुक्ला, आशीष तिवारी,अरविंद पांडे, हिमांशु दिवेदी, मनीष सिंह, विवेक सिंह एवं समस्त प्रयाग परिवार उपस्थित रहे।

शॉर्ट सर्किट से इलेक्ट्रानिक गोदाम में लगी आग

घर में फंसी सात महिलाओं को पफायर ब्रिगेड की टीम ने सुरक्षित निकाला बाहर, लाखों का हुआ नुकसान

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। के कैंट थाना क्षेत्र में राजापुर पुलिस चौकी के पास स्थित मकान में केशरवानी इलेक्ट्रानिक एवं हार्डवेयर मंगलवार को अचानक आग लग गई। आग लगने से हुड़कंप मच गया। फायर ब्रिगेड को सूचना दी गई। इस दौरान आग की लपटों में घर के अंदर मौजूद 5 से 7 महिलाएं फंस गई। सूचना पर पहुंची फायर ब्रिगेड की टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद सभी को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। आग की वजह से लाखो का सामान जलकर नष्ट हो गया। आग लगने की वजह शॉर्ट सर्किट बताई जा रही है। कैंट थाना अंतर्गत राजापुर पुलिस चौकी के पास सुनील केशरवानी का मकान है। मकान में मंगलवार को दोपहर में अचानक आग लग गई। आग की लपरेटे इतनी तेज थी कि पूरा घर धुआ-धुओं हो गया। आग की लपटे बाहर निकलने लगी। जिससे दूसरे तल पर 5 से 7 महिलाएं आग की लपटों के बीच फंस गई। सूचना पर फायर ब्रिगेड के मुख्य अग्निशमन अधिकारी डॉ. आरके पांडेय अपनी टीम के साथ पहुंचे। उनकी टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद सभी महिलाओं को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। उसके बाद से अग्निशमन

अधिकारी सिविल लाइंस फायर ब्रिगेड की टीम ने घंटों मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया। मकान के भूतल में कूलर और बिजली एवं इलेक्ट्रिक सामान का गोदाम था। आग की वजह से सारा गोदाम में रखा सामान जलकर नष्ट हो गया। इंस्पेक्टर कैंट ने बताया कि शॉर्ट सर्किट की वजह से आग लगी थी। सभी को सकुशल सुरक्षित निकाल लिया गया था। लाखों का इलेक्ट्रॉनिक सामान जलकर राख हो गया है।

शिव महापुराण कथा श्रवण करने से सभी प्रकार के भय दूर हो जाते हैं : पं. देवेन्द्र मणि त्रिपाठी

जंघई। पुरुषोत्तम सावन मलमास के पावन महीने में क्षेत्र के गहरपुर खखैचा गांव में दुबरी महादेव के पावन प्रांगण में मुख्य यजमान सुरेश चंद्र मिश्र द्वारा आयोजित शिव महापुराण कथा में कथा व्यास पूज्य देवेन्द्र मणि त्रिपाठी ने श्रोताओं को भगवान शिव की पावन कथा में श्रवण विधि व महत्व से अवगत कराते हुए कहा कि शिव महापुराण की कथा जीवन को सुखमय बनाती है कथा श्रवण करने से सभी प्रकार के भय दूर हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि माता सती भगवान शिव के मना करने पर भी प्रजापति दक्ष के यज्ञ में पहुंचीं बिना बुलाए अपने पिता के घर गईं अपमान का सामना न करते हुए उन्होंने अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। शिव पुराण की कथा हमें उपदेश देती है कि जीवन साथी व अपने गुरु पर विश्वास व श्रद्धा होनी जरूरी है बिन बुलाए मेहमान व बिना परिवार की आज्ञा से कहीं भी जाना शुभ नहीं होता उन्होंने कहा कि भगवान शंकर के लिए भी गणपति महाराज प्रथम पूज्य थे। भगवान ने स्वयं यह वरदान उन्हें दिया था तथा वे एक बार इस बात की अवहेलना कर विपत्ति का शिकार हुए सर्व प्रथम भगवान शिव ने ही गणेश पूजन किया था। इस अवसर पर केशव प्रसाद मिश्र, ब्रम्ह प्रसाद मिश्र, हौसिला प्रसाद मिश्र, मूलचंद मिश्र, धर्मेंद्र, दीपक, केवला प्रसाद, सतीश, विनोद, रविंद्र, जय नारायण, रमेश चन्द्र मिश्र, दिनेश चंद्र मिश्र, श्रीकांत, विजयकांत, शुभम, संजय, धनंजय, सत्यम, शिवम, सचिन,राजेन्द्र प्रसाद दुबे, ग्राम प्रधान मिठाई लाल, चंद्रशेखर दुबे, आचार्य धीरज द्विवेदी याज्ञिक, सबल सिंह, पप्पू मिश्र, बब्बन मिश्र, अमित, सुमित, अंकित आदि बड़ी संख्या में भक्त उपस्थित रहे। इस अवसर पर शक्ति ठाकुर म्यूजिकल ग्रुप मुंबई द्वारा संगीतमय भजन प्रस्तुत किया जा रहा है।

कार्यकर्ता आपसी मतभेद भुलाकर संगठन के लिए कार्य करें : राजेश तिवारी

अखंड भारत संदेश

सहसों। मंगलवार को रुदापुर स्थित गेस्ट हाउस में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के संगठनात्मक बैठक हुई। जिसमें प्रदेश तथा पांच जनपद के पदाधिकारी व कार्यकर्ता शामिल हुए। मुख्य वक्ता के रूप में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के राष्ट्रीय सचिव, छत्तीसगढ़ के कैबिनेट मंत्री एवं प्रयागराज जोन के प्रभारी राजेश तिवारी ने अपने संबोधन में कहा संगठन की मजबूती के लिए आपसी मतभेद भुलाकर एकजुट होकर पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता संगठन के कार्य में लग जाएं।उन्होने आह्वान किया कि वह दिन रात तन मन से आपसी मतभेद भुलाकर कांग्रेस का संगठन खड़ा करने पर ध्यान केन्द्रित करें। क्योंकि राहुल गांधी के नेतृत्व में

चल रही कांग्रेस की लहर 2024 में भाजपा सरकार को उखाड़ फेंकने का काम करेगी। बेरोजगारी से परेशान नौजवान, जीएसटी से परेशान व्यापारी, महंगी खाद, बीज से परेशान किसान सहित समाज का हर वर्ग भाजपा से परेशान होकर तेजी से कांग्रेस के साथ जुड़ रहा है। पदाधिकारियों कार्यकताओं से कहा कि आवश्यकता हुई तो संगठन में बदलाव भी किया जाएगा। संगठनात्मक बैठक को राष्ट्रीय सचिव बीपी सिंह, पूर्व विधायक अनुग्रह नारायण सिंह , राघवेंद्र प्रताप सिंह, संजय तिवारी, रामकिशुन पटेल, मनीष मिश्रा ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन विवेकानंद पाठक ने किया। इस अवसर पर एआईसीसी सदस्य अशफाक अहमद, देवराज उपाध्याय, मुकुंद तिवारी, मकसूद अहमद, करमचंद बिंद, सुरेश यादव, अरुण तिवारी, उज्जवल शुक्ला, राहुल तिवारी, सिद्धनाथ मौर्य, राजेश राकेश, सायरा बानो, डॉक्टर सत्या पांडे,नफीस अहमद, नीरज, करीना सहित कांग्रेस के जिला अध्यक्ष, प्रदेश के पदाधिकारी एवं कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

जिले में उत्सव पूर्वक मनाया जायेगा मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रमः डीएम

कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर जिलाधिकारी ने की बैठक

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी प्रकाश चन्द्र श्रीवास्तव की अध्यक्षता में विकास भवन सभागार में आजादी के अमृत महोत्सव के समापन समारोह के अन्तर्गत मेरी माटी-मेरा देश एवं हर घर तिरंगा कार्यक्रम का सफल बनाने हेतु उपजिलाधिकारी, खण्ड विकास अधिकारी, अधिशासी अधिकारी व अन्य सम्बन्धित जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित हुई।

बैठक में जिलाधिकारी ने कहा कि मेरी माटी-मेरा देश कार्यक्रम 09 से 15 अगस्त तक एवं हर घर तिरंगा कार्यक्रम 13 से 15 अगस्त तक आयोजित किया जायेगा। उन्होने कहा कि विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी हर घर तिरंगा कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया जाना है इसके अन्तार्गत सभी सरकारी/गैर सरकारी संस्थानों, व्यावसायिक एवं वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों, शैक्षणिक संस्थानों, समस्त सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों, रेस्टोरेन्ट, शापिंग काम्प्लेक्स, टोल प्लाजा, पुलिस चैकी/थाना सहित प्रत्येक घरों में अनिवार्य रूप से तिरंगा फहराया जायेगा। इसके लिये उन्होने सम्बन्धित

अधिकारियों के साथ बैठक करते जिलाधिकारी प्रकाश चंद्र श्रीवास्तव।

अधिकारियों को तिरंगे झंडे की उपलब्धता सहित अन्य तैयारियॉ समय से पूर्व सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होने कहा कि शासन द्वारा हर घर तिरंगा कार्यक्रम के साथ ही मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजन को लेकर विस्तृत निर्देश दिये गये। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अमृत कलश में हर गांव-हर शहर की मिट्टी होगी, यह कलश गांव से ग्राम पंचायत, फिर क्षेत्र पंचायत होते हुये जिला मुख्यालय तुलसीसदन (हादीहाल) पर एकत्रित होगें। इसी प्रकार सभी नगरीय निकायों के कलश जिला मुख्यालय तुलसीसदन (हादीहाल) पर एकत्रित होगी। इसके उपरान्त यह कलश प्रदेश की राजधानी लखनऊ पहुॅचेगें और फिर राजधानी दिल्ली में स्थित कर्तव्य पथ पर पूरे देश से आये अमृत कलश के साथ एकत्रित होगें। जिलाधिकारी ने कहा कि अमृत कलश देश की पावन मिट्टी से पूरित है इसका पूरा सम्मान हो, अमृत कलश यात्रा भव्य हो, जगह-जगह आमजन की सहभागिता के साथ जनप्रतिनिधियों को आमंत्रित किया जाये। जिलाधिकारी ने कहा कि इस सम्बन्ध में सभी आवश्यक तैयारियां समय से कर ली जाये, हर ग्राम पंचायत/नगरीय निकाय में शिलाफलकम स्थापित किया जाना है, शिलाफलकम पर आजादी के अमृत वर्ष का विजन प्रदर्शित होगा। स्थानीय वीरों/शहीदों का परिचय प्रदर्शित होगा। हर ग्राम/नगर में शिलाफलकम का पूरे सम्मान के साथ भव्य कार्यक्रम आयोजित कर लोकार्पण किया जाये। पंचायत स्तर के कार्यक्रमों में पंच प्रण प्रतिज्ञा और सेल्फी, वसुधा वंदन, वीरों का वंदन और ध्वजारोहण और राष्ट्रगान शामिल है। वसुधा वंदन कार्यक्रम प्रत्येक ग्राम पंचायत में 75 स्थानीय प्रजाति के वृक्ष लगाने का कार्यक्रम है। इससे अमृत वाटिका निर्माण होगा। यह वसुधा वंदन कार्यक्रम उस ग्राम पंचायत में स्थित अमृत सरोवर या उसके आस-पास आयोजित किया जाये। यदि अमृत सरोवर उपलब्ध न हो तो ऐसी स्थिति में किसी भी जलाशय के स्थान पर वृक्षारोपण किया जा सकता है। बैठक में बताया गया कि जनसामान्य सेल्फी/रील्स/झण्डे के साथ फोटो अथवा देशभक्ति/झण्डा गीत क सथ वीडियो इस अभियान से जुड़ी वेबसाइट पर अपलोड करें। जेम पोर्टल/आनलाइन शापिंग पोर्टल पर झण्डे उपलब्ध है, जनसामान्य झण्डों को आनलाइन क्रय कर सकते है। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया, अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) त्रिभुवन विश्वकर्मा, जिला विकास अधिकारी राकेश प्रसाद, जिला विद्यालय निरीक्षक सरदार सिंह, जिला पंचायत राज अधिकारी आलोक कुमार सिन्हा, जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी राजेश कुमार सिंह, ईओ नगर पालिका राम अचल कुरील सहित, समस्त उपजिलाधिकारी, समस्त खण्ड विकास अधिकारी व अन्य सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहे।

बाइक की टक्कर से अधेड़ की मौत, कोहराम

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। बाइक की टक्कर से अधेड की दुर्घटना मे मौत हो गयी। मौत की जानकारी परिजनो को हुई तो कोहराम मच गया। लालगंज कोतवाली के पूरे वीरबल निवासी ईश्वरदीन यादव 67 मंगलवार को गांव के बडे लाल प्रजापति 42 के साथ दर्शन करने बाइक से बाबा घुइसरनाथ के लिए निकला। बाइक बडे लाल चला रहा था। रास्ते मे लालगंज सांगीपुर मार्ग पर महिमापुर के समीप पीछे से आ रही तेज रफ्तार बाइक ने बडे लाल की बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में ईश्वरदीन व बड़े लाल गंभीर रूप से चुटहिल हो गये। आननफानन में दोनों घायलों को इलाज के लिए लालगंज ट्रामा सेण्टर लाया गया। यहां चिकित्सकों ने ईश्वरदीन को मृत घोषित कर दिया। मृतक ईश्वरदीन हाल ही मे एक विद्यालय से चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के रूप में सेवानिवृत्त हुआ था। मौत की जानकारी ईश्वरदीन के घर पहुंची तो रोते बिलखते परिजन ट्रामा सेण्टर पहुंचे। मृतक की पुत्री गुड़िया पिता का शव देख दहाड मारकर रोने लगी। हादसे मे दर्शनार्थी के मौत की जानकारी मिलने पर लालगंज पुलिस अस्पताल पहुंची। पुलिस ने शव का पंचनामा कराकर पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेजवाया। लालगंज पुलिस ने बताया कि दुर्घटना को लेकर तहरीर मिलने पर केस दर्ज किया जाएगा।

अशोक आहूजा के संघर्षो से व्यापारियों को मिली है प्रेरणा

15वीं पुण्यतिथि पर याद किये गये व्यापार मण्डल के संस्थापक अशोक आहूजा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल के नगर कार्यालय में प्रतापगढ़ व्यापार मंडल के भामाशाह एवं प्रतापगढ़ में व्यापारियों के सबसे प्रसिद्ध और प्रतापगढ़ व्यापार मंडल की शान जिन्होंने पहली बार व्यापार मंडल की स्थापना करने साथ व्यापारियों को एकजुट करते वाले स्वर्गीय अशोक आहूजा को उनकी 15वीं पुण्यतिथि पर उ प्र उद्योग व्यापार मण्डल के पदाधिकारियों ने श्रद्धांजलि दी।

जिला अध्यक्ष सरदार मंजीत सिंह छाबड़ा ने कहा कि आहूजा के साथ कदम से कदम मिलाकर चले वाले सहयोगी रहे साथियों ने आपके साथ साथ मिलकर

पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम में बोलते अध्यक्ष मंजीत सिंह छाबड़ा

उनके सानिध्य में सभी व्यापारियों के हित में उनके कार्य का बताया जिसमे उन्होंने व्यापारियों की समस्याओं और उनकी रक्षा के लिए संघर्ष किया और अकेले ही व्यापारियों के हित की लिए निकल पड़ते थे। उन्होंने कहा कि सभी व्यापारियों को उस कठिन समय में उनके द्वारा दिखाए गए मार्गो पर चलने के लिए हमे प्रेणना मिलती है इस अवसर पर उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल के पदाधिकारी नगर कार्यालय में उपस्थित होकर स्वर्गीय अशोक आहूजा को भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई और उसके पश्चात उनकी याद में शहर के अटल वाटिका पार्क बाबागंज में वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर प्रमुख रुप से उपस्थिति जिला अध्यक्ष सरदार मंजीत सिंह छाबड़ा, जिला वरिष्ठ महामंत्री अशोक कुमार सिंह, प्रदेश उपाध्यक्ष राम शंकर जयसवाल, जिला उपाध्यक्ष सरदार मंजीत सिंह गोविंद, जिला उपाध्यक्ष अरविंद सिंह जिला मंत्री शरद केशरवानी, जिला कोषाध्यक्ष संदीप रावत, नगर संरक्षक लखन बाबा केसरवानी नगर अध्यक्ष अंकुर केसरवानी, नगर महामंत्री जगमीत सिंह सलूजा, नगर मंत्री आशीष जयसवाल, शिवांग खरे, कृष्ण मोहन केशरवानी, विपिन अग्रवाल, और विशेष रूप से स्वर्गीय अशोक आहूजा के भतीजे संजीव आहूजा उपस्थित रहे।

काली पट्टी बांधकर शिक्षकों ने जताया विरोध

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। पट्टी नगर के आर आर एकेडमी में मंगलवार को सभी अध्यापकों ने काली पट्टी बांधकर प्रिंसिपल और शिक्षक की गिरफ्तारी पर असंतोष जताते हुए विरोध किया है। आजमगढ़ में प्रिंसिपल और शिक्षक की गिरफ्तारी हो जाने पर अनएडेड प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन मंगलवार के दिन सभी अनऐडेड प्राइवेट विद्यालयों को बंद करते हुए विरोध जताने का निर्णय लिया जिसका समर्थन सीबीएसई मैनेजमेंट स्कूल में भी किया। पट्टी नगर में स्थित आर.आर एकेडमी की प्रिंसिपल रोजी धामा के नेतृत्व में स्कूल को मंगलवार को बंद कर दिया गया और सभी शिक्षकों तथा स्टाफ ने काली पट्टी बात कर इस पर विरोध जताया। विद्यालय की इंदु खत्री, डॉली सिंह, प्रिया तिवारी, कुसुम पांडेय, अंशिका यादव, प्रियंका जायसवाल,पुष्पा तिवारी, नेहा श्रीवास्तव प्रिया तिवारी आदि ने विरोध जताया।

टेंपो की टक्कर से बाइक सवार घायल, रेफर

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। सैफाबाद बाजार से सामान लेकर घर वापसी करते समय युवक टेंपो से टक्कर होने पर घायल हो गया। मौके पर पहुंचे राहगीरों ने घायल को डायल 108 एंबुलेंस से सीएचसी पट्टी भेजा जहां से स्थिति गंभीर देखते हुए चिकित्सकों ने जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया। तहसील क्षेत्र के परदहा सुमेर गांव की रहने वाले सुंदरम तिवारी पुत्र लालजी तिवारी सामान लेने के लिए मंगलवार को स्थानीय सैफाबाद बाजार आया हुआ था। सामान लेकर वापस घर जाते समय अभी वह नोही गांव के शमी पहुंचा था कि टेंपो चालक ने बाइक सवार युवक को टक्कर मार दिया। जिससे वह सड़क पर गिरकर घायल हो गया। यह घटना देख आसपास के लोगों ने तत्काल डायल 108 एंबुलेंस बुलाया और घायल को सेठ पन्नालाल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पट्टी लाए, जहां पर प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर स्थिति में चिकित्सकों ने जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया है।

भोपालपुर गांव की सड़क बदहाल राहगीर परेशान

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। आसपुर देवसरा विकास खंड में स्थित भोपालपुर गांव की सड़क बदहाल हो गई है। कई बार शिकायत के बावजूद भी सड़क निर्माण न होने से ग्रामीणों में आक्रोश नजर आ रहा है। आसपुर देवसरा विकास खंड में स्थित भोपालपुर गांव में जाने वाली सड़क पट्टी राजाबाजार मार्ग से होते हुए भोपालपुर गांव से गुजर कर बंधवा होते हुए जौनपुर के लिए निकल जाती है। इस मार्ग से प्रतिदिन सैकड़ो लोगो का आवागमन होता है मगर बरसात के सीजन में सड़क खस्ताहाल होने के कारण ग्रामीणों और राहगीरों को काफी दिक्कत का सामना करना होता है। ग्रामीणों का कहना है कि इस संबंध में कई बार शिकायत के बाद भी कोई कार्यवाही नही हुई है। बरसात अधिक हो जाने के कारण ग्रामीण रास्ते से नहीं जा पाते हैं वहीं उन्हें दूसरे रास्ते से होकर गुजरना पड़ता है लोगों का कहना है कि गांव में बर्मा बस्ती में लोग अवैध रूप से कब्जा कर लिया है जल निकासी ना होने से समस्या बनी रहती है।

ओम संस्कृति श्रीवास्तव एवं स्नेहा मिश्रा मंडल स्तर की प्रतियोगिता के लिए चयनित

विज्ञान संगोष्ठी में मौजूद अतिथिगण व छात्राएं।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। राजकीय बालिका इंटर कॉलेज प्रतापगढ़ में राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र नई दिल्ली के तत्वाधान में राज्य विज्ञान शिक्षण संस्थान उत्तर प्रदेश प्रयागराज द्वारा कक्षा 8 से 10 तक के विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित करने, वैज्ञानिक चिंतन तथा अनुसंधान की प्रवृत्ति जागृत करने के उद्देश्य विज्ञान संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसका मुख्य विषय श्री अनन एक मूल्य वर्धित पौष्टिक अथवा भ्रांति आहार रहा। इस विज्ञान संगोष्ठी में जनपद के विभिन्न विद्यालयों के छात्राओं ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सरदार सिंह जिला विद्यालय निरीक्षक रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता गरिमा श्रीवास्तव प्रधानाचार्य राजकीय बालिका इंटर कॉलेज प्रतापगढ़ ने की। कार्यक्रम का संयोजन गीता उप प्रधानाचार्य राजकीय बालिका इंटर कॉलेज प्रतापगढ़ ने की। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉक्टर मोहम्मद अनीश ने किया। टाइम कीपिंग श्रुति श्रीवास्तव ने किया। सम्मानित निर्णायक मंडल में प्रमोद कुमार तिवारी प्रधानाचार्य लोकमान्य तिलक इंटर कॉलेज प्रतापगढ़ एवं डॉक्टर विंध्याचल रहे। नोडल प्रभारी डॉक्टर मोहम्मद अनीस ने बताया कि जनपद स्तर पर चयनित प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त छात्र-छात्राएं 18 से 20 अगस्त के मध्य प्रयागराज जिले में मंडल स्तरीय प्रतियोगिता में अपनी अपनी गाइड शिक्षक के साथ प्रतिभाग करेंगे। मो0 अनीस ने बताया कि विज्ञान संगोष्ठी का में कुमारी ओम संस्कृति श्रीवास्तव कक्षा 9 अमर जनता इंटर कॉलेज कतरा गुलाब सिंह प्रतापगढ़ प्रथम स्थान एवं कुमारी स्नेहा मिश्रा राजकीय बालिका इंटर कॉलेज प्रतापगढ़ रहीं।

खाद्य सुरक्षा विभाग ने किया निरीक्षण, पांच नमूने भेजे गये प्रयोगशाला

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। आयुक्त, खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन, उ0प्र0 लखनऊ एवं जिलाधिकारी प्रकाष चंद्र श्रीवास्तव के आदेश के अनुपालन में बाजार में उपलब्ध फल एवं सब्जी यथा फूलगोभी, पत्तागोभी, पालक, शिमला मिर्च आदि (विशेषकर गैर मौसमी फल/सब्जी) को कृत्रिम रूप से पकाने व रंगने में उपयोग किये जा रहे सिन्थेटिक रंग व

महुली मण्डी में निरीक्षण करते खाद्य सुरक्षा विभाग के अधिकारी।

हानिकारक पेस्टीसाइड पर प्रभावी रोकथाम हेतु धीरेन्द्र प्रताप सिंह, सहायक आयुक्त खाद्य द्वितीय के निर्देशन में खाद्य सुरक्षा विभाग के सचल दल द्वारा महुली मण्डी, चिलबिला प्रतापगढ़ में प्रवर्तन कार्यवाही करते हुए शिमला मिर्च, फूल गोभी, पत्ता गोभी, पालक एवं सेब का एक-एक नमूना, इस प्रकार कुल 05 नूमने संग्रहित किये गये। उक्त सभी नमूने विश्लेषण हेतु खाद्य विश्लेषक प्रयोगशाला को प्रेषित किये जा रहे है। उक्त सचल दल में संजय कुमार तिवारी, जनार्दन सिंह, संतोष कुमार दुबे, अंजनी कुमार मिश्र, विवके कुमार तिवारी एवं ऋचा पाण्डेय खाद्य सुरक्षा अधिकारी उपस्थित रहे।

गोल्डेन कार्ड की प्रगति खराब पाये जाने पर दी गयी प्रतिकूल प्रविष्टि

डीएम ने गोल्डन कार्ड की प्रगति की किया समीक्षा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी प्रकाश चन्द्र श्रीवास्तव ने कल सांयकाल विकास भवन सभागार में आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के अन्तर्गत लाभार्थियों के गोल्डेन कार्ड की प्रगति के सम्बन्ध में समीक्षा की। जिलाधिकारी ने समस्त विकास खण्डों में गोल्डेन कार्ड के प्रगति की समीक्षा की तो पाया गया कि विकास खण्ड शिवगढ़ एवं मानधाता की प्रगति बहुत ही धीमी है जिस पर जिलाधिकारी ने कड़ी नाराजगी व्यक्त करते दोनो विकास खण्डों के खण्ड विकास अधिकारियों को प्रतिकूल प्रविष्टि देने के निर्देश दिये और कहा कि 08 दिनों के अन्दर प्रगति में सुधार लाये अन्यथा कार्यवाही की जायेगी। जिलाधिकारी ने प्रधानमंत्री आयुष्मान योजना के जिला समन्वयक डा0 सुधाकर को निर्देशित किया कि सीएचओ, आशा और ए0एन0एम0 द्वारा पहले कार्ड बनवाये जा रहे थे इसलिये अब पुनः इनके द्वारा गोल्डने कार्ड बनवाये जाये। नगरीय क्षेत्रों में सभासदों के माध्यम से गोल्डेन कार्ड बनवाये जाये। जिलाधिकारी ने कहा कि प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के अन्तर्गत गरीब, असहाय व्यक्तियों को 5 लाख तक निःशुल्क ईलाज की सुविधा है इसलिये सभी सम्बन्धित अधिकारी/कर्मचारी इस कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरते, अधिक से अधिक लाभार्थियों के गोल्डेन कार्ड बनवाये जाये और प्रतिदिन फीडबैक प्राप्त करें। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया, समस्त खण्ड विकास अधिकारी व अन्य सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहे।

आवास लिस्ट में की गई हेराफेरी का आरोप

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। आवास लिस्ट में हेराफेरी करने से लाभार्थियों का नाम सूची से काट दिया गया और अपात्रों को नाजायज लाभ लेकर आवास के लिए पात्र घोषित कर दिया गया। पीड़ित ग्रामीणों ने इस संबंध में कई बार उच्चाधिकारियों से लेकर मुख्यमंत्री तक गुहार लगाई लेकिन कार्यवाही नहीं हुई तो फिर से जिलाधिकारी को एक शिकायती पत्र लेकर ग्रामीणों ने इंसाफ की गुहार लगाई है ।

एनसीसी कैडेटों द्वारा निकाली गई रैली।

भारत छोड़ो आंदोलन की वर्षगांठ पर एनसीसी कैडेट ने निकाली रैली

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। भारत छोड़ो आंदोलन के 81वें वर्ष पट्टी नगर के स्नातकोत्तर महाविद्यालय में एनसीसी कैडेट द्वारा एक रैली निकाल करके देश के वीर सपूतों को याद किया गया जिसमें एनसीसी कैडेट के सदस्यों ने हाथ में तख्तियां लेकर भारत माता की जय तथा आंदोलन से जुड़े हुए क्रांतिकारियों के नाम और विचारों को लिख करके रैली में शामिल हुए। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉक्टर अखिलेश पांडे ने हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। रैली में डॉक्टर शिवशेखर पांडे आरबी अग्रहरि केपी सिंह डॉक्टर अनिल यादव तथा अन्य लोग मौजूद रहे। उक्त जानकारी विद्यालय की सूचना अधिकारी डॉक्टर वीरेंद्र कुमार मिश्रा ने दी है।

पर्यावरण शुद्ध बनाये रखने के लिये संस्थान ने किया वृहद वृक्षारोपण

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। बृहद वृक्षारोपण अभियान के अन्तर्गत मंगलवार को दिव्य ज्योति सेवा संस्थान द्वारा लालाबाजार में पौधरोपण एवं पौध वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

बृहद वृक्षारोपण अभियान के तहत पीपल, बरगद एवं नीम के पौधों का रोपण किया। इस अवसर पर संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए संस्थान के अध्यक्ष डॉ0 रणजीत सिंह ने कहा कि वृक्ष, वातावरण मे फैली दूषित वायु को शुद्ध करता है। वर्षा ऋतु में वर्षा वायु को रोकता है, जिससे वर्षा की सम्भावना अधिक होती है। वृक्ष अपने जड़ों मे मिट्टी को बांधकर रखता है, जिससे मृदा अपरदन नहीं होता है। कृषि विज्ञान केन्द्र के पूर्व उद्यान वैज्ञानिक डॉ सुधाकर सिंह ने कहा पौधरोपण जितना आवश्यक है पौधों का देखभाल करना भी उतना ही आवश्यक है। वृक्षारोपण किया है, तो उसकी

वृक्षारापेण करते डा0 रणजीत सिंह।

सुरक्षा की जिम्मेदारी भी ली जानी चाहिए। इस अवसर पर उपस्थित दिव्य ज्योति सेवा संस्थान के स्वयं सेवक मनीश सिंह, उमाशंकर सिंह तथा रामचन्द्र, जुगुलकिशोर तिवारी, हेमराज, राजेश मौर्या, सुभाष यादव, राजेश जायसवाल, मो0 षमषुल, फूलचन्द्र केसरवानी, विमल केसरी आदि लोग उपस्थित रहे।

सड़क हादसे में युवक की मौत, मचा कोहराम

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। लखनऊ प्रयागराज नेशनल हाइवे पर सोमवार की देर रात सड़क हादसे मे थाना मानिकपुर निवासी आकाश यादव पुत्र मुन्ना यादव (19) वर्षीय की मानिकपुर थाना क्षेत्र के रहमत अली का पुरवा के पास अज्ञात वाहन की टक्कर से मौत हो गई घटना की जानकारी मिलते मानिकपुर पुलिस मौके पर पहुंची और उपचार के लिए 108 इम्बुलेंस से सीएचसी कालाकांकर भेजा जहा चिकित्सको ने मृत घोषित कर दिया। उधर घटना की जानकारी मिलते ही परिजनों लोग भी अस्पताल पहुंच गये। शव देखते ही परिजनों में कोहराम मच गया। पुलिस ने शव की लिखा पढ़ी करके पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेज दिया। मृतक के परिजनों ने अज्ञात वाहन के खिलाफ पुलिस को तहरीर दिया पुलिस वाहन की तलाश मे जुटी हुई है।

मृत मिला राष्ट्रीय पक्षी मोर

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। मंगलवार की सुबह बिरौती गांव में राष्ट्रीय पक्षी मोर मृत पाया गया। गांव के रहने वाले पंकज विवेक गोविंद राज हर्षित आदि ग्रामीणों ने क्षेत्रीय फॉरेस्ट रेंजर के अधिकारियों को सूचना दी फारेस्ट के कर्मचारी राज बहादुर सिंह मौके पर पहुंचकर मोर को कब्जे में लेकर उसे पोस्टमार्टम के लिए ले गए।

एक ही रात 8 घरों से लाखों के जेवर उठा ले गए बेखौफ चोर

अखंड भारत संदेश

चायल कौशाम्बी। पिपरी थाना क्षेत्र के मखदुमपुर पुलिस चौकी के आसपास बीती रात 8 घरों में चोरों ने एक के बाद एक चोरी की घटना को अंजाम दिया है बेखौफ चोर 8 घर से लाखों रुपए कीमत के सोने चांदी के जेवरात सहित नगद रुपए जरूरी अभिलेख उठा ले गए हैं घटनाओं के दौरान चोरों ने तोड़फोड़ भी किया है और बकरी के चिल्लाने पर उसे भी मार दिया है लेकिन पुलिस चौकी के आसपास पूरी रात हो रही चोरी की घटनाओ की जानकारी चौकी पुलिस को पूरी रात नहीं हो सकी जिससे चौकी पुलिस पर बड़े सवाल खड़े हो रहे हैं इसके पहले भी इलाके के कई गांव में चोरी की घटनाएं हो चुकी हैं जिनका खुलासा थाना और चौकी पुलिस नहीं कर सकी है।

घटनाक्रम के मुताबिक बीती रात पिपरी थाना क्षेत्र के मखदुमपुर पुलिस चौकी अंतर्गत मखदुमपुर गांव में पुलिस चौकी के 100 मीटर के दायरे में रहने वाली सेफ़्ता बेगम पत्नी सिराज अहमद के कॉस्मेटिक की दुकान में घुसे चोर दुकान में तोड़फोड़ करने के बाद दुकान में रखा 12 हजार रुपए नगद और 15 हजार रुपए लगभग का सामान जरूरी अभिलेख उठा ले गए हैं इसके बाद चोर हुमैरा बेगम पत्नी जुनैद अहमद के घर पहुंचे और उसके घर से सामान से भरी पेटी खेत मे उठा ले गए और पेटी तोड़कर उसमें रखा तीन तोले सोने का हार सोने की अंगूठी सोने का झाला 30 तोला चांदी का सामान 40 हजार रुपए नगद उठा ले गए घर के अंदर रखी अलमारी का ताला तोड़कर उसमें रखा 10 हजार रुपए नगद भी चोर उठा ले गए हैं घर की पेटी बक्सा सुबह खेत में मिला है इसके बाद चोर इरफान अहमद पुत्र छोटेलाल के घर पहुंचे और घर के अंदर रक्खे तीन संदूक पेटी को चोर खेत की ओर उठा ले गए और पेटियों को तोड़कर के उसमें रखा पायल झुमके सोने चांदी के जेवर और 3 हजार रुपए चोर उठा ले गए हैं लगातार घटनाओं को अंजाम देकर चोर समान की चोरी करते रहे लेकिन पुलिस को घटनाओं की जानकारी नहीं हुई।

इसके बाद चोर गिरोह के सदस्यों ने शाहिद पुत्र शौकत अली वा कामरुज्जमा पुत्र शेर मोहम्मद वा मोहम्मद इस्लाम पुत्र शरीफ उद्दीन वा विनोद पुत्र कमलेश प्रजापति के घरों को भी निशाना बनाया कुछ घरों से चोर सामान ले जाने में कामयाब हो गए और कुछ घरों में चोर के हाथ खाली रहे पूरी रात गांव में चोरों का नग्न तांडव चलता रहा चौकी की पुलिस पूरी तरह से अनजान बनी रही।

घटना पुलिस चौकी के आसपास ही हुई पर पुलिस को नहीं लगी पूरी रात भनक, अवैध बालू वाहनों से वसूली में मशगूल पुलिस को अपराध रोकने की नहीं है चिंता

चार गांव की सुरक्षा में 15 जवान तैनात

चायल कौशाम्बी। मखदुमपुर पुलिस चौकी क्षेत्र में केवल 4 गांव की सुरक्षा का जिम्मा चौकी पुलिस को मिला है और 4 गांव की सुरक्षा के लिए पांच उप निरीक्षक और 10 सिपाहियों की तैनाती पुलिस अधीक्षक ने की है लेकिन उसके बाद 4 गांव की बात छोड़िए साहब पुलिस चौकी के आसपास की सुरक्षा भी पुलिस चौकी के उपनिरीक्षक चौकी इंचार्ज और सिपाही नहीं कर पा रहे हैं एक रात में 8 घरों में लगातार घूम घूम कर चोरी की घटनाओं के बाद पूरे इलाके में दहशत का माहौल है।

आठ घरों की चोरी को पचाने में लगी पुलिस

चायल कौशांबी। पिपरी थाना क्षेत्र के मखदुमपुर पुलिस चौकी के आसपास बीती रात 8 घरों में घुसे चोर लाखों रुपए कीमत के सोने चांदी के जेवर नगद रुपए उठा ले गए हैं लेकिन खबर लिखे जाने तक पुलिस ने मुकदमा नहीं दर्ज किया है पूरे मामले को पुलिस पचा जाना चाहती है जिससे चौकी पुलिस के कारनामों का अंदाजा लगाया जा सकता है एक रात में आठ घरों में घुसे चोरों के मामले में पुलिस ने मुकदमा नहीं दर्ज किया तो घटनाओं के खुलासे में पुलिस कितना सक्रियता दिखाएगी यह पुलिस व्यवस्था पर सवाल खड़े हो रहे हैं।

घटना में दर्जनों लोगों के शामिल होने की चर्चा

चायल कौशांबी। पिपरी थाना क्षेत्र के मखदुमपुर गांव में बीती रात जिस तरह से 8 घरों को चोर गिरोह के सदस्यों ने निशाना बनाया है ग्रामीणों की माने तो चोरों की संख्या दर्जनों में रही होगी लेकिन पुलिस अभी तक एक भी चोर को गिरफ्तार कर घटना का खुलासा नहीं कर सकी है चोरी गया एक भी सामान पुलिस बरामद नहीं कर सकी है।

आजमगढ़ घटना : रिद्धि सिद्धि ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन के शिक्षक शिक्षिकाओं ने काली पट्टी बांधकर किया प्रदर्शन

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। रिद्धि सिद्धि ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन के बैनर तले केपीएस भरवारी ,एनडी कान्वेंट स्कूल एंड कॉलेज भरवारी ,केपीएस भीटी, एवं ननकी देवी जूनियर हाई स्कूल के समस्त शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने आजमगढ़ चिल्ड्रन गर्ल्स स्कूल की प्रिंसिपल व शिक्षक की गिरफ्तारी और जमानत खारिज होने के विरोध में काली पट्टी पहनकर प्रदर्शन किया। शुक्रवार को आजमगढ़ के चिल्ड्रन गर्ल्स स्कूल की एक छात्रा के पास से मोबाइल मिला था आरोप है कि स्कूल की प्रताड़ना पर उसने आत्महत्या कर ली थी पुलिस ने प्रिंसिपल और शिक्षक को गिरफ्तार कर लिया इस पर रिद्धि सिद्धि ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन भरवारी के समस्त शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने रोष जताया है और केपीएस ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन की डायरेक्टर सीमा पवार का कहना है कि स्कूल कभी अपने बच्चों का अहित नहीं चाहता फिर भी कभी कोई घटना होती है तो दोषी स्कूल प्रबंधन को ही माना जाता है अभिभावक कोई भी बात सुनने को तैयार नहीं होते हैं एफ .आई .आर.की धमकी मिलती है इसी वजह से विद्यार्थियों में लगातार नैतिक पतन हो रहा है एवं विद्यार्थियों ने शिक्षक शिक्षिकाओं का सम्मान करना बंद कर दिया है इस प्रकार की घटनाक्रम की निष्पक्ष सबसे पहले जांच होनी चाहिए उसके बाद ही कार्रवाई करनी चाहिए शिक्षक समाज का आईना होते हैं और जिस दिन शिक्षक का सम्मान समाज से समाप्त हो जाएगा समाज का विकास संभव नहीं हो सकता इस विरोध प्रदर्शन में डिप्टी डायरेक्टर डॉक्टर मयंक मिश्रा प्रधानाचार्य सुशील त्रिपाठी किडजी प्रिंसिपल नेहा गुप्ता एवं समस्त शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित रहे।

दिव्यांगजनों को योजनाओं से लाभान्वित करने के लिए शिविर का आयोजन

अलग अलग विकास खण्ड परिसर में 09 अगस्त से 19 अगस्त तक होगा शिविर का आयोजन

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार के निदेर्शानुसार दिव्यांगजन को समाज की मुख्य धारा से जोडने के लिए दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के व्यापक प्रचार-प्रसार एवं दिव्यांगजन को उनकी आवश्यकतानुसार निःशुल्क कृत्रिम अंग/सहायक उपकरण प्रदान करने के उददेश्य से विकास खण्ड स्तर पर चिन्हांकन शिविर का आयोजन किया जा रहा है। दिव्यांगजनों को दिव्यांगजन विभाग द्वारा संचालित योजनाओ से लाभान्वित करने के लिए दिनांक 09 अगस्त 2023 को विकास खण्ड परिसर मंझनपुर में प्रातः 10:30 बजे से अपरान्ह 03 बजे तक शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसी प्रकार दिनांक 10 अगस्त को विकास खण्ड परिसर सरसवां, दिनांक 11 अगस्त को विकास खण्ड परिसर कौशाम्बी, दिनांक 14 अगस्त को विकास खण्ड परिसर नेवादा, दिनांक 16 अगस्त को विकास खण्ड परिसर चायल, दिनांक 17 अगस्त को विकास खण्ड परिसर मूरतगंज, दिनांक 18 अगस्त को विकास खण्ड परिसर सिराथू एवं दिनांक 19 अगस्त को विकास खण्ड परिसर कड़ा में प्रातः 10:30 बजे से अपरान्ह 03 बजे तक शिविर का आयोजन किया जायेंगा। जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्साधिकारी को शिविर के लिए मेडिकल बोर्ड का गठन कर चिन्हांकन स्थल पर तिथिवार मेडिकल बोर्ड की उपस्थिति सुनिश्चित कराने के निर्देश दियें है, जिससे दिव्यांगजन का दिव्यांगता प्रमाण-पत्र बनाया जा सकें। उन्होंने खण्ड विकास अधिकारियों को अपने अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों के माध्यम से दिव्यांगजनों को सूचित करने तथा शिविर के लिए आवश्यक व्यवस्थायें-बैठने की व्यवस्था एवं पानी आदि सुनिश्चित कराने के निर्देश दियें है। शिविर में विभाग द्वारा संचालित योजनाओं-कृत्रिम अंग/सहायक उपकरण योजना, शादी विवाह प्रोत्साहन पुरस्कार योजना, दुकान निर्माण/संचालन, दिव्यांग भरण पोषण अनुदान (दिव्यांग पेंशन), यू0डी0आई0डी0 प्रोजेक्ट, शल्य चिकित्सा योजना, जे0ई0/ए0ई0एस0 (संचारी रोग) एवं मोटराइज्ड ट्राईसाइकिल से लाभान्वित किया जायेगा।

पतंजलि भारत स्वाभिमान के संगठन मंत्री बने मनोज

कौशांबी। संगठनात्मक ढांचे को मजबूत करने के लिए पतंजलि परिवार में फेरबदल किया गया है स्वामी रामदेव द्वारा संचालित केंद्रीय कार्यालय हरिद्वार के राज्य प्रभारी के निर्देश पर हर्ष कुमार को पतंजलि भारत स्वाभिमान के जिला प्रभारी सुशील कुमार को पतंजलि युवा भारत का जिला प्रभारी बादल को किसान सेवा समित का जिला प्रभारी विकास गुप्ता को पतंजलि योग समिति का संगठन मंत्री और मनोज को पतंजलि भारत स्वाभिमान का संगठन मंत्री मनोनीत किया गया है। बैठक के पश्चात संगठन को बढ़ावा देने के लिए जनपद तहसील एवं ग्राम स्तर पर योग कक्षा का निर्माण करना स्वदेशी के प्रति लोगों को जागरूक करना एवं जनपद के चिकित्सालय पतंजलि आरोग्य केंद्र पतंजलि मेगा स्टोर पतंजलि स्वदेशी केंद्र का अधिक से अधिक निर्माण एवं योग के माध्यम से युवाओं को ज्यादा से ज्यादा जोड़ना तथा पांचो संगठनों को मिलाकर संगठनों को नई ऊंचाई देने का संकल्प लिया गया इस अवसर पर विजय सिंह गुलाब संतोष प्रदीप रज्जन सिंह संतोष मयंक संतोष जोशी हिमांशु सत्यम निजाम एसके क्लासेज के होनहार बच्चे सहित तमाम लोग मौजूद थे।

साई ग्रीन सिटी प्लाटिंग पर चला पीडीए का बुलडोजर

कौशाम्बी। संदीपन घाट थाना क्षेत्र के मलक मोइनुद्दीन पुर गांव के पास साई ग्रीन सिटी के नाम से प्लाटिंग हो रही थी जो पीडीए के मानकों में पूर्णतः अवैध पाई गई और जिस पर मंगलवार को पीडीए ने कार्यवाही करते हुए बुलडोजर चला कर पूरी प्लाटिंग पर बुलडोजर चलवा कर ध्वस्थ कर दिया इस कार्यवाही में थाना संदीपन घाट के थाना प्रभारी दिलीप कुमार सिंह के साथ पूरी पुलिस फोर्स और सराय अकिल थाने की पुलिस स्थानीय प्रशासन के साथ साथ पीएसी की फोर्स व जिले से क्षेत्र आधिकारी मौजूद रहे।

दस हजार के इनमिया सहित दो अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। चरवा थाना पुलिस ने दो वांछित अभियुक्त मोहम्मद अनस पुत्र मोहम्मद अनीस निवासी रसूलपुर सुकवारा थाना सराय अकिल और गुड्डू उर्फ साहिल पुत्र तूफान अली निवासी रहीमपुर मोलानी थाना करारी को गिरफ्तार किया है गुड्डू उर्फ साहिल की गिरफ्तारी पर 10 हजार रुपए के इनाम घोषित है विधिक कार्यवाही के पश्चात थाना पुलिस ने दोनों आरोपियों को न्यायालय में पेश किया है दोनों आरोपियों पर प्राणघातक हमला पशु क्रूरता अधिनियम चोरी सहित विभिन्न गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज है।

ट्रेन की टक्कर से युवक की मौके पर हुई मौत

कौशाम्बी। संदीपन घाट थाना क्षेत्र के चरवा थाना क्षेत्र अंतर्गत मनोहरगंज रेलवे स्टेशन के पास संदिग्ध परिस्थितियों में युवक की ट्रेन से कट कर मौके पर ही मौत हो गई। जानकारी के अनुसार दिनांक 7 अगस्त को समय करीब 9:00 बजे रात्रि कपिल पुत्र दिनेश निवासी बलिहावा थाना संदीपन घाट की मनोहरगंज रेलवे स्टेशन के बगल में पोल नंबर 110/33 के पास ट्रेन से कटकर मृत्यु हो गई है सूचना पर पहुँची पुलिस ने मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है।

गैंगेस्टर एक्ट के वांछित को पुलिस ने किया गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना कोखराज पुलिस द्वारा गैंगस्टर एक्ट के वांछित अभियुक्त उदय प्रताप मोर्य पुत्र सोनेलाल मोर्य निवासी राजाजीपुरम लखनऊ को गिरफ्तार किया है विधिक कार्यवाही के पश्चात गैंगस्टर एक्ट के वांछित अभियुक्त को कोखराज पुलिस ने न्यायालय में भेज दिया है।

दुष्कर्म के वांछित को पुलिस ने किया गिरफ्तार

कौशाम्बी। मंझनपुर कोतवाली के उप निरीक्षक द्वारा दुष्कर्म के वांछित अभियुक्त संजीत कुमार पुत्र तेजबली को गिरफ्तार किया है विधिक कार्यवाही के पश्चात दुष्कर्म के वांछित को मंझनपुर कोतवाली पुलिस ने न्यायालय भेज दिया है।

पुलिस कार्यालय का एसपी ने किया औचक निरीक्षण

कौशांबी। पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी बृजेश श्रीवास्तव ने मंगलवार को पुलिस कार्यालय के समस्त शाखाओं का औचक निरीक्षण किया इस दौरान ड्यूटी में उपस्थित पुलिस कार्मियों को चेक किया गया तथा सम्बन्धित को साफ-सफाई एवं रख-रखाव हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए पुलिस अधीक्षक के औचक निरीक्षण के दौरान पुलिस कार्यालय में हड़कंप मचा रहा।

रेलवे लाइन के बगल से दोनों तरफ खाली जमीन पर सड़क बनाकर बन सकता है अंदर ग्राउंड रेलवे पुल का रास्ता

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। नगर पालिका परिषद भरवारी के रेलवे फाटक पर लगने वाले जाम से हर कोई परेशान है और इस समस्या का समाधान हर व्यक्ति चाहता है लेकिन समस्या का समाधान होता नहीं दिख रहा है जिस योजना पर रेलवे के अधिकारी चल रहे हैं कस्बे के लोगों में आक्रोश के साथ दहशत का माहौल है रेलवे के इंजीनियर 3 मीटर चौड़ा पुल बनाने को तैयार है लेकिन पुल बनाने के लिए वह 8 मीटर चौड़ी जगह मांग रहे हैं जिससे अंडरग्राउंड पुल के दोनों तरफ दीवार और अन्य कार्यों में आसानी हो नगर के लोगों के मकान के बीच में 8 मीटर चौड़ी जमीन प्रभावित होगी उसके बाद सर्विस रोड भी बनाई जाएगी सर्विस रोड में भी दोनों तरफ कम से कम 6 मीटर चौड़ी जमीन प्रभावित होगी मनौरी कस्बे में बनाए जाने वाले पुल के बाद सर्विस रोड की दुर्दशा किसी से छिपी नहीं है आबादी के बीच अंडरग्राउंड रेलवे पुल और सर्विस रोड बनाए जाने के बाद दोनों तरफ से मकान में तोड़फोड़ होगी कई बार रेलवे के इंजीनियर नाप कर चुके हैं अंडरग्राउंड रेलवे पुल बनाए जाने को लेकर चिन्हीकरण भी हो चुका है नगर के लोगों में मकान में तोड़फोड़ किए जाने को लेकर गहरी चिंता सवार है। लेकिन फिर भी भरवारी रेलवे फाटक पर 3 मीटर चौड़ा बनने वाला अंडरग्राउंड पुल कम चौड़ा होने से बाइक साइकिल पैदल के अलावा अन्य वाहनों का आना जाना नहीं होगा रेलवे के इस अंडरग्राउंड पुल में इतनी ढलान होगी कि लोगों को साइकिल बाइक और पैदल निकलने में पहाड़ों जैसा दिखाई पड़ेगा जिससे रेलवे फाटक भरवारी पर अंडर ग्राउंड पुल कस्बे में बनाया जाना निरर्थक साबित होगा लेकिन अन्य विकल्प पर रेलवे के अधिकारी विचार नहीं कर रहे हैं बल्कि रेलवे फाटक पर घनी आबादी के बीच पुल बनाकर रेलवे फाटक के जाम की समस्या का समाधान करने के लिए लगातार प्रयासरत हैं लेकिन एक गंभीर चिंतन का विषय है कि घनी आबादी को बचाया जाना है उनकी रोजी-रोटी को बचाया जाना भी सरकार और जनप्रतिनिधियों की जिम्मेदारी है वही अंडरग्राउंड पुल बनाने वाले रेलवे इंजीनियर भरवारी रेलवे फाटक पर मेहता रोड बस स्टॉप रोड पुरानी बाजार रोड और गौरा रोड में रेल फाटक से चारो सड़क पर 75 मीटर दूरी तक पुल निर्माण के लिए जमीन का अधिग्रहण कर रहे हैं जिससे चारों सड़क पर लगभग 200 से अधिक परिवार प्रभावित हो रहे है उनका व्यापार भी प्रभावित हो जाएगा उनके सामने रोजी-रोटी की समस्या आ जाएगी उसके बाद भी चार पहिया वाहन पुल से निकल नहीं पाएंगे इस लिए इस विकराल समस्या के समाधान को सोचने की जरूरत है नगर के संभ्रांत लोगों का कहना है कि भरवारी कस्बे में रेलवे फाटक से पश्चिम दिशा की ओर रेलवे लाइन की दक्षिण दिशा की ओर से 500 मीटर तक सड़क बनाकर फिर अंडरग्राउंड रेलवे पुल बना दिया जाए रेलवे फाटक से पश्चिम दिशा की ओर 500 मीटर दूरी पर रेलवे इंजीनियरों को अंदर ग्राउंड पुल बनाने के लिए मैदान ही मैदान मिल जाएगा और उसके बाद रेलवे लाइन के उत्तर दिशा से फिर 500 मीटर की सड़क बनाकर पुरानी बाजार की ओर रेलवे फाटक के पास सड़क से जोड़ दिया जाए तो भरवारी कस्बे के किसी व्यापारी का व्यापार प्रभावित नहीं होगा नगर के लोगों के मकान में तोड़फोड़ नहीं होगी जिससे नगर के लोगों का व्यापार चौपट नही होगा उनके जीविकोपार्जन का साधन बना रहेगा परिवार में खुशहाली रहेगी और रेलवे फाटक पर लगने वाले भीषण जाम की समस्या का समाधान भी हो जाएगा लेकिन रेलवे के अधिकारी घनी आबादी के बीच तोड़फोड़ करने पर अधिक विश्वास करते हैं अदूरदर्शिता के चलते सिराथू कस्बे में पुल बनाए जाने के बाद नगर के व्यापारियों का व्यापार चौपट हो चुका है उनके सामने रोजी-रोटी की समस्या खड़ी हो गई है सिराथू के व्यापारियों का व्यापार चौपट होने के बाद भी भरवारी रेलवे फाटक पर पुल बनाए जाने के मामले में अभी तक रेलवे इंजीनियर और अधिकारियों द्वारा इसके वैकल्पिक व्यवस्था पर विचार नहीं किया है यह गंभीर चिंतन का विषय है 500 मी पश्चिम दिशा में रेलवे अंडरग्राउंड पुल बनाए जाने से रेलवे फाटक पर लगने वाले जाम की समस्या का समाधान हो जाए अंडरग्राउंड रेलवे पुल भी बन जाए किसी का नुकसान भी नही होगा अधिकारियों को इस समस्या के समाधान के लिए गंभीर चिंतन मनन करने की जरूरत है।

18 लोगों पर पुलिस ने की निरोधात्मक कार्यवाही

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी के कुशल निर्देशन में चलाए जा रहे अभियान में साधारण मारपीट व शांति भंग करने में करारी थाना पुलिस ने 3 लोगो पर पश्चिम शरीरा थाना पुलिस ने 2 लोगो पर संदीपनघाट थाना पुलिस ने 1 लोगो पर सराय अकिल थाना पुलिस ने 4 लोगो पर और मोहब्बतपुर पइंसा थाना पुलिस ने 8 लोगो पर निरोधात्मक कार्यवाही की है।

दो वारंटी किये गए गिरफ्तार

कौशांबी। कोखराज थाना में दर्ज मुकदमे में वारंटी फूलचंद पुत्र गुलजारी और धनंजय पुत्र भिखारी निवासी भादवा थाना कोखराज को थाना के उपनिरीक्षक ने गिरफ्तार किया है और लिखा पढ़ी करने के बाद दोनों वारंटी को अदालत में पेश किया है।

वारंटी को किया गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना मंझनपुर पुलिस द्वारा वारंटी अभियुक्त मुन्ना उर्फ धर्मराज पुत्र अवतार निवासी कोडर कोतवाली मंझनपुर जनपद कौशांबी को मंझनपुर कोतवाली के उपनिरीक्षक ने गिरफ्तार किया है और लिखा पढ़ी करने के बाद वारंटी अभियुक्त को पुलिस ने अदालत में पेश किया है।

बालिका के गायब होने के मामले में आया नया मोड़

अखंड भारत संदेश

अपनी सास पति के साथ राजस्थान से वापस कौशाम्बी लौटी गायब बालिका

कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के बालक मऊ गांव में महीनों पूर्व एक बालिका गायब हो गई थी बालिका भरवारी कस्बे की एक पेठा की फैक्ट्री में अपनी एक अन्य सहेली के साथ काम करती थी और वही के युवक से उसके संबंध हो गए जिसके बाद बालिका गायब हो गयी उसके बाद बालिका की माँ ने कोखराज थाना और चौकी पुलिस सिंघिया को तहरीर देकर बालिका के गायब होने की सूचना दी थी पुलिस बालिका को खोज रही थी इसी बीच मालूम चला कि एक युवक से शादी करने के बाद बालिका राजस्थान में दांपत्य जीवन गुजार रही है पुलिस ने बालिका की सास और बालिका के पति पर दबाव बनाया जिस पर बालिका को लेकर उसके पति और सास बालिका के गांव बालक मऊ वापस पहुंच गए बालिका के वापस होने के बाद बालिका के गायब होने की बात पर विराम लग गया। राजस्थान से वापस कौशांबी अपने गांव आई बालिका और उसकी सांस से जब इस संबंध में बातचीत की गई तो उन्होंने बताया कि 3 लाख रुपए दे करके उन्होंने अपने बेटे के लिए दुल्हन के रूप में बालिका के साथ अपने बेटे की शादी की है बालिका भी अपने पति को छोड़ना नहीं चाहती है वह भी अपने पति के साथ राजस्थान फिर जाना चाहती है बताया जाता है कि किसी दलाल के माध्यम से 3 लाख रुपए का लेनदेन हुआ है लेकिन पूरी रकम बालिका की मा तक नहीं पहुंच सकी जिससे बालिका के गायब होने का ड्रामा किया गया और बालिका की बिक्री की पूरी रकम दलाल से लेने के लिए पुलिस को परेशान किया गया बालिका के गायब होने के बजाए यह मामला बालिका की बिक्री का निकला है जिसमें बालिका की माँ और उसके परिजन दोषी बताए जाते हैं जिले में ऐसे मामले आए दिन होते हैं जब लाखों की रकम की लालच में बालिका के मां पिता ही बालिका को बेच कर धन वसूली करते हैं कुछ दिन पहले करारी थाना क्षेत्र में भी इस तरह का मामला सामने आया था जहां बालिका को बेचकर पैसा लेने वालों को जेल भेजने के बजाए अर्का चौकी पुलिस ने दूसरे पक्ष को ही जेल भेज दिया बालिका को बेच कर लाखो लेने का यह गंभीर मामला है और रकम लेकर बेटियों को बेचने वालों पर शिकंजा कसने की जरूरत है।

न्यूज झरोखा

कौशाम्बी से गायब हो रहे हाइवे पर घास चर रहे पशु

कौशाम्बी। जिले में पशु चोरों का आतंक लगातार जारी है ,पशु पालकों की मेहनत और गाढ़ी कमाई के महंगे पशु घास चरते हुए गायब हो जा रहे है,पशुओं के गायब होने से पशु पालकों को जहा एक ओर दहशत का माहौल है वही पशुओं के गायब अथवा चोरी हो जाने से उन्हे लाखो का नुकसान भी हो रहा है जिले के हाइवे में गांव के लोग अपने पशु बकरी, गाय,भैंस हाइवे के किनारे घास चराने के लिए लेकर आते है,घास चरते हुए पशुओ को पशु तस्कर अथवा पशु चोर गायब कर देते है और बाहर ले जाकर बेच देते है।पशु पालकों का आरोप है कि पशुओं को चोरी करने वाले अक्सर दोपहर में और शाम के समय पशुओं को गायब कर देते है जिससे उन्हें बहुत अधिक नुकसान हो रहा है।

निरोगी काया पाने का माध्यम है योग : राजेंद्र प्रसाद गौतम

कौशांबी। उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ द्वारा जिले के श्री दुर्गा देवी संस्कृत उ. मा. विद्यालय में 7 अगस्त को निःशुल्क त्रिमासिक योग प्रशिक्षण का शिविर के उद्घाटन समारोह आयोजित हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला पंचायत इंटर कॉलेज कॉलेज के पूर्व प्रधानाचार्य राजेंद्र प्रसाद गौतम ने दीप प्रज्वलन कर शिविर का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा की शरीर और मन को योग द्वारा स्वस्थ रखा जा सकता है। केंद्राध्यक्ष डॉ. रवींद्र शुक्ल ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से अपनी बात कही कि यहां 9वीं बार योग शिविर आयोजित हो रहा है। यह बहुत खुशी की बात है कि यहां पौरोहित्य संभाषण के शिविर आयोजित हो रहे हैं। प्रभारी प्रदीप मिश्र ने योग प्रशिक्षक कमल नयन मिश्र को एक कर्मठ योगी कहा। कार्यक्रम में आमंत्रित संस्थान के भाषा शिक्षक डॉ. ज्ञानेश्वर त्रिपाठी ने संचालन किया और बताया कि संस्थान की अनेक योजनाएं चल रही हैं उनके बारे में चर्चा की संस्थान के निदेशक विनय श्रीवास्तव सर्वेक्षिका शकुंतला शाक्य समन्वयक अनिल कुमार गौतम सहित सभी समन्वयकों का आभार व्यक्त किया।इस अवसर पर राजेश प्रकाश त्रिपाठी राम कृष्ण तिवारी मुकेश चंद्र त्रिपाठी शोभन उपाध्याय अभिषेक मिश्र सहित सैकड़ों छात्र उपस्थित रहें।

सनातन की जो बात करेगा वह हिंदुस्तान में राज करेगा

हिंदू जागरण मंच की कौशांबेश्वर संकट मोचन में हुई बैठक

कौशाम्बी। विकास खंड कौशाम्बी के ऐतिहासिक प्राचीन कौशामबेश्वर संकट मोचन हनुमान मंदिर (जोटका तालाब) में एक बैठक आहूत की गई जिसमे जिला अध्यक्ष हिंदू जागरण मंच ने कहा कि जो भी संगठन और राजनीतिक दल हिंदू हित की बात करेगा उसे ही भारत पर शासन करने का अधिकार होगा अखंड भारत की हमारी जो संकल्पना है उसकी नींव की पहली ईट हिंदू हित से ही रखी जा सकती है। हिंदू जागरण मंच का कार्य लव जिहाद को रोकना,लैंड जिहाद ,अर्थात किसी हिंदू की जमीन विशेष समुदाय द्वारा कब्जा करना ही लैंड जिहाद है, धर्म जागरण का कार्य ही हिंदू जागरण मंच का विशेष कार्य है। और सनातन धर्म का प्रचार करना ही विशेष कार्य है उन्होंने कहा कि आज देश में सनातनी जाग रहा है और वह अपने हित की बात कर रहा है जो भारत के सुनहरे भविष्य की ओर इशारा कर रहा है उक्त बातें हिंदू जागरण मंच के जिला अध्यक्ष अवधेश नारायण शुक्ला ने आयोजित बैठक के दौरान कही। इस मौके में वेद प्रकाश पाण्डेय ने हिंदू होने का मतलब बताते हुए धर्म ग्रंथों,महापुराणों,का उदाहरण देते हुए सनातन के महत्व व हिंदू जागरण मंच के महत्व को विस्तार से प्रकाश डाला उन्होंने कहा कि जाति पाती ऊंच नीच को खत्म कर संगठित हो सनातन को बचाया जा सकता है इस मौके पर बोलते हुए जिला अध्यक्ष ने संगठन के लोगों से अपील करते हुए कहा कि वह गांव गांव में पहुंचकर संगठन में अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने का काम करें। इसके साथ दूसरे धर्म के लोगों द्वारा हिंदू समाज के लोगों को विभिन्न प्रकार से परेशान और प्रताड़ित किया जा रहा है, ऐसे लोगों की आवाज बनकर हिंदू जागरण मंच को उभरना है। आज भी अधर्मियों द्वारा विभिन्न प्रकार से भारत में हिंदुओं के जमीनों पर कब्जा किया जा रहा है। हमारी बहन बेटियों को शिकार बनाया जा रहा है जिसके लिए हम सभी को जागरुक होकर अपने समाज का प्रहरी बनना होगा। इस मौके में जिला उपाध्यक्ष प्रकाश चंद्र दुबे,रोहित मिश्रा कौशिक अग्रहरि राजू केशरवानी मुन्नू लाल दिवाकर अंकित केशरवानी देवी प्रसाद निषाद,रामराज निषाद विकास सिंह,पवन दुबे,श्रवन मिश्रा,अनुज सिंह,गुड्डू कोरी, अनुराग मिश्रा,सचिन मिश्रा,निखिल सिंह,हेमंत सिंह,हिमांशु सिंह,बालचंद्र चौधरी,अमन सिंह,सोनू मिश्रा,रवि सिंह, सहित दो दर्जन कार्यकर्ता मौजूद रहे।

हल्की बारिश में ही बह गई फोरलेन सड़क, सड़क पर बन गए बड़े बड़े गड्ढे, विभाग कर रहा हादसे का इंतजार

कौशाम्बी। जिले में हल्की बारिश में ही सड़क पर बड़े बड़े गड्ढे बन गए है,इन गड्ढों में बाइक और साइकिल सवार लोग गिरकर घायल हो जाते है,लेकिन विभाग है कि देखकर भी अनदेखी कर रहा है।विभागीय अनदेखी और लापरवाही के चलते जहा एक ओर बाइक और साइकिल सवार राहगीर गिरकर चोटहिल हो रहे है वही बड़ी गाड़ियों के भी फंसने की आशंका बनी रहती है। बारिश के बाद सड़क बह जाने से विभागीय भ्रष्टाचार की कलाई खुल रही है। मंझनपुर से मूरतगंज जाने वाली फोरलेन सड़क में कादीपुर पुल के पास हल्की बारिश में ही सड़क का कुछ हिस्सा बह गया और सड़क पर बड़े बड़े गड्ढे बन गए है,जिसमे गिरकर बाइक और साइकिल सवार घायल हो जा रहे है,इसी रास्ते से सभी अधिकारी प्रतिदिन गुजरते है लेकिन कोई भी अधिकारी इस और अपना ध्यान आकर्षित नही कर रहा है जिसके चलते आम जनता को समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

संपादक की कलम से

अविश्वास प्रस्ताव : इस हार में भी जीत है!

इसी सब की पृष्ठद्दभूमि में जब यह साफ हो गया है कि प्रधानमंत्री मोदी, मणिपुर के मुद्दे पर संसद में सामान्य रूप से कुछ नहीं बोलेंगे, तब विपक्ष को अविश्वास प्रस्ताव के संसदीय अस्त्र का सहारा लेना पड़ा। जाहिर है कि प्रधानमंत्री को अविश्वास प्रस्ताव पर बहस के अपने जवाब में तो, इस पूरे मामले में जिम्मेदारी के सवाल पर बोलना ही बोलना था।

सुप्रीम कोर्ट के मानहानि के मामले में सजा पर रोक लगाने के बाद, राहुल गांधी की लोकसभा में वापसी के लिए, अविश्वास प्रस्ताव पर बहस से उपयुक्त दूसरा मौका नहीं हो सकता था। कहने की जरूरत नहीं है कि राहुल गांधी, अविश्वास प्रस्ताव के पक्ष में यानी विपक्ष की ओर से स्टार-वक्ता होंगे और पिछले सत्र में हिंडनबर्ग रिपोर्ट के बाद, अडानी-मोदी गठजोड़ पर केंद्रित राहुल गांधी के चर्चित लोकसभा भाषण को याद रखें तो, राहुल गांधी के इस बार के भाषण का भी चर्चित होना तय है। यह अनुमान लगाना भी मुश्किल नहीं है कि लोकसभा में अन्य अनेक प्रभावशाली वक्ताओं की भी मौजूदगी के बावजूद, कम से कम मीडिया द्वारा अविश्वास प्रस्ताव की बहस को, "राहुल बनाम मोदी" टीवी बहस में घटाने पूरी कोशिश की जाएगी। कुल मिलाकर इससे अविश्वास प्रस्ताव की इस बहस में जोरदार तड़का लग जाने की उम्मीद की जा सकती है।

इसके बावजूद, इस बहस का मोदी सरकार के बने रहने के लिहाज से क्या नतीजा होगा, यह तो स्वतः स्पष्टद्द ही है। उलटे, बीजू जनता दल के अविश्वास प्रस्ताव पर बहस में मोदी सरकार को अपना समर्थन देने के ऐलान से यह साफ है कि मोदी राज के प्रबंधकों ने इसका भी पूरा इंतजाम कर लिया होगा कि अगर, इंडिया के मंच पर विपक्ष का उल्लेखनीय रूप से बड़ा हिस्सा अविश्वास प्रस्ताव के पक्ष में एकजुट दिखाई दे, तो दूसरी ओर मोदी सरकार के लिए समर्थन, एनडीए की 2019 के चुनाव में आई संख्या से भी कुछ न कुछ बढ़कर ही दिखाई दे। इसके सहारे और अन्यथा भी, संघ-भाजपा और मुख्यधारा के मीडिया के गठजोड़ द्वारा अविश्वास प्रस्ताव के गिरने को, मोदी राज के लिए जनता के अनुमोदन बल्कि उसकी जीत के रूप में प्रचारित करने की हर संभव-असंभव कोशिश की जाएगी।

फिर यह अविश्वास प्रस्ताव क्यों?

इस क्यों के उत्तर के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं। पहले का संबंध यह अविश्वास प्रस्ताव लाए जाने की तत्कालीन पृष्ठद्दभूमि से है। सभी जानते हैं कि संसद के मानसून सत्र की शुरूआत, मणिपुर के बहुत ही चिंताजनक घटनाक्रम की पृष्ठद्दभूमि में, विपक्ष द्वारा एकजुट होकर इसकी मांग किए जाने के साथ हुई थी कि सब काम छोड़कर संसद द्वारा इस गंभीर समस्या पर चर्चा की जाए और प्रधानमंत्री के वक्तव्य के आधार पर चर्चा की जाए। प्रधानमंत्री के वक्तव्य के आधार पर चर्चा का आग्रह इसलिए और भी प्रबल था कि ढाई महीने से जारी हिंसा तथा भयावह दरिंदगी और हालात पूरी तरह से शासन के काबू से बाहर बने रहने के बावजूद, प्रधानमंत्री ने इस मामले में पूरी तरह से मौन साधे रहा था। और यह तब था जबकि मणिपुर में यह सब तथाकथित "डबल इंजन" के राज में हो रहा था, जिसके लिए प्रधानमंत्री की सीधे राजनीतिक ही नहीं, प्रशासनिक जवाबदेही भी बनती थी।

बेशक, तब तक ढाई महीने से मणिपुर में जारी अराजकता तथा इथनिक झड़पों के बीच, लगभग शुरूआत में ही हुई दो कुकी आदिवासी महिलाओं के साथ, हमलावर मैतेई भीड़ की दरिंदगी का वीडियो वाइरल हो गया और देश भर को ही नहीं दुनिया भर को इसकी झलक दिखाई दी कि इंटरनैट पर प्रतिबंध तथा मीडिया पर नियंत्रण की दीवार के पीछे मणिपुर में क्या कुछ हुआ था और हो रहा था ।

आदिवासी के अस्तित्व एवं अस्मिता की रक्षा हो

- ललित गर्ग -

अन्तरराष्ट्रीय आदिवासी दिवस, विश्व में रहने आदिवासी लोगों के मूलभूत अधिकारों जल, जंगल, जमीन को बढ़ावा देने और उनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और न्यायिक सुरक्षा के लिए प्रत्येक वर्ष 9 अगस्त को मनाया जाता है। इस वर्ष विश्व में शांति कायम हो की थीम पर यह दिवस मनाया जायेगा। यह दिवस उन उपलब्धियों और योगदानों को भी स्वीकार करता है जो वनवासी लोग पर्यावरण संरक्षण, आजादी, महा आंदोलनों, जैसे विश्व के मुद्दों को बेहतर बनाने के लिए करते हैं। यह पहली बार संयुक्त राष्ट्र की महासभा द्वारा दिसंबर 1994 में घोषित किया गया था। ग्रह पर कुल मानव आबादी का लगभग 47 करोड़ हिस्सा आदिवासी लोगों का है। इसके अलावा, दुनिया में 100 से अधिक गैर-संपर्क जनजातियाँ हैं। दुनिया में बोली जाने वाली 7000 भाषाओं में से 4000 भाषाएँ आदिवासी लोगों द्वारा बोली जाती हैं। आदिवासी लोग प्रकृति की पूजा करते हैं, प्रकृति में जीते है, जल, जंगल एवं जमीन से जुड़े इन लोगों ने प्रकृति एवं पर्यावरण को संरक्षित कर रखा है।

आदिवासी महिलाएं आदिवासी समुदाय की रीढ़ है, वे पारंपरिक पैतृक ज्ञान के संरक्षण और प्रसारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्राकृतिक संसाधनों की देखभाल और वैज्ञानिक ज्ञान के रखवाले के रूप में उनकी एक अभिन्न सामूहिक और सामुदायिक भूमिका है। दुनिया भर में रहने वाले 47 करोड़ आदिवासी और जनजाति समुदायों के सामने जंगलों का कटना और उनकी पारंपरिक जमीन की चोरी सबसे बड़ी चुनौती है। वे धरती पर जैव विविधता वाले 80 प्रतिशत इलाके के संरक्षक हैं लेकिन बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लोभ, हथियारबंद विवाद और पर्यावरण संरक्षण संस्थानों की वजह से बहुत से समुदायों की आजीविका एवं अस्तित्व खतरे में हैं, ग्लोबल वॉमिंग का असर हालात को और खराब कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार आदिवासी जनजातियां 90 देशों में फैली हैं, 5,000 अलग अलग संस्कृतियां और 4,000 विभिन्न भाषाएं, इस बहुलता के बावजूद उन्होंने अनेक संघर्ष झेले हैं और आज भी दुनिया में आदिवासी समुदाय खतरे में हैं। भारत सहित दुनिया की आदिवासी महिलाएं हिंसा, यौन शोषण एवं अपराध की शिकार है। मणिपुर में 19 जुलाई, 2023 को दो आदिवासी महिलाओं को निर्वस्त्र कर गांव में घुमाने एवं पश्चिम बंगाल के मालदा में भीड़ ने दो आदिवासी महिलाओं की पिटाई की, फिर उन्हें अर्धनग्न कर दिया गया। आदिवासी महिलाओं के साथ होने वाली ऐसी घटनाएं देश-विदेश के सभ्य समाजों को झकझोर दिया है।

इस वर्ष का ह्यविश्व आदिवासी दिवसह्य भारत के लिये विशेष महत्वपूर्ण है। क्योंकि भारत की नई राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू वनवासी समुदाय से जुड़ी होने के साथ-साथ एक महिला है, उन्होंने प्रकृति एवं पर्यावरण के संकटों को करीब से देखा है, यह भारत की विकराल होती समस्या है, जिसका गहराना जीवन को अंधेरा में धकेलना है, अतः वे इस समस्या के दर्द को गहराई से महसूस करती है, तभी उन्होंने कहा कि मेरा तो जन्म उस जनजातीय परंपरा में हुआ है जिसने हजारों वर्षों से प्रकृति के साथ तालमेल बनाकर जीवन को आगे बढ़ाया है। मैंने जंगल और जलाशयों के महत्व को अपने जीवन में महसूस किया है। हम प्रकृति से जरूरी संसाधन लेते हैं और उतनी ही श्रद्धा से प्रकृति की सेवा भी करते हैं। जल, जंगल और जमीन इन तीन तत्वों से पृथ्वी और प्रकृति का निर्माण होता है। यदि यह तत्व न हों तो पृथ्वी और प्रकृति इन तीन तत्वों के बिना अधूरी है। विश्व में ज्यादातर समृद्ध देश वही माने जाते हैं जहां इन तीनों तत्वों का बाहुल्य है। भारत भी इसी समृद्धता का देश है, लेकिन इनकी समृद्धता की उपेक्षा के कारण अनेक समस्याएं विकास की बड़ी बाधा बनती जा रही है। संभव है कि द्रौपदी मुर्मू के नेतृत्व में प्रकृति एवं पर्यावरण की समस्या के साथ-साथ आदिवासी महिलाओं से जुड़ी समस्याओं का समाधान होगा।

आदिवासियों में एक बड़ी समस्या धर्मपरिवर्तन की है। गुजरात के आदिवासी क्षेत्र में सुखी परिवार फाउण्डेशन का संचालन आदिवासी संत गणि राजेन्द्र विजयजी के नेतृत्व में वर्ष 2005 से करते हुए हम शिक्षा, सेवा, जनकल्याण की अनेक गतिविधियों को आकार दे रहे हैं, वहां मैंने आदिवासी समस्याओं को बहुत करीब से देखा हैं, उनमें सबसे बड़ी समस्या धर्म परिवर्तन एवं महिलाओं एवं बालिकाओं का लापता होना है। प्रलोभनों एवं साम्प्रदायिक ताकतों के कारण कई आदिवासी अपने धर्म को बदलकर आदिवासी समाज से बाहर हो रहे हैं जिसमें ईसाई धर्म को सर्वाधिक स्वीकार गया है। एशिया में विशेषकर भारत के आदिवासी भी इस मानसिकता की ओर तेजी से बढ़ रहे है, ईसाई मिश्नरियों ने भारत के आदिवासी क्षेत्र छतीसगढ़, मध्यप्रदेश, ओडिशा, अंडमान निकोबार, झारखंड, गुजरात, महाराष्ट्र में धर्मांतरण के लिये विद्यालयों एवं छात्रावासों में सफल अभियान चलाया है। ऐसे में आदिवासी की अपनी संस्कृति एवं उनका अस्तित्व खतरा में आ गया। आदिवासी अर्थात जो प्रारंभ से वनों में रहता आया है। करीब 400 पीढ़ियों पूर्व सभी भारतीय वन में ही रहते थे और वे आदिवासी थे परंतु विकासक्रम के चलते पहले ग्राम बने फिर कस्बे और अंत में नगर, महानगर। यही से विभाजन होना प्रारंभ हुआ। जो वन में रह गए वे वनावासी, जो गांव में रह गए वे ग्रामवासी और जो नगर में चले गए वे नगरवासी कहलाने लगे। भारत में लगभग 25 प्रतिशत वन क्षेत्र है, इसके अधिकांश हिस्से में आदिवासी समुदाय रहता है। लगभग नब्बे प्रतिशत खनिज सम्पदा, प्रमुख औषधियां एवं मूल्यवान खाद्य पदार्थ इन्हीं आदिवासी क्षेत्रों में हैं। भारत में कुल आबादी का लगभग 11 प्रतिशत आदिवासी समाज है।

स्वतंत्रता आन्दोलन में आदिवासी समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ऐसे अनेक महान् आदिवासी हुए हैं जिन्होंने भारत की मिट्टी एवं उसके स्वतंत्र अस्तित्व-आजादी के लिए अपना बलिदान एवं महान योगदान दिया। ऐसे महान वीर आदिवासियों से भारत का इतिहास समृद्ध है, जिनमें अप्पा साहब, तात्या टोपे, डा. बी.आर. अम्बेडकर, जयपाल सिंह मुण्डा, शहीद वीर नारायण सिंह, शहीद गंडाधुरा, शहीद रानी दुगार्वाती, शहीद बीरसा मुंडा, शहीद सिद्धों, कानु, शहीद तिलका मांझी, शहीद गेंद सिंह, झाड़ा सिरहा जैसे महान आदिवासियों ने अपना बलिदान देकर समाज एवं देश के लिये एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। फिर क्या कारण है कि इस जीवंत एवं मुख्य समाज को देश की मूल धारा से काटने के प्रयास निरन्तर किये जा रहे हैं। आजादी के बाद बनी सभी सरकारों ने इस समाज की उपेक्षा की है। यही कारण है कि यह समाज अनेक समस्याओं से घिरा है। अन्तर्राष्ट्रीय आदिवासी दिवस मनाते हुए हमें आदिवासी समाज के अस्तित्व एवं अस्मिता को धुंधलाने के प्रयासों को नियंत्रित करने पर चिन्तन करना होगा। क्योंकि यह दिवस पूरी दुनिया में आदिवासी जन-जीवन को समर्पित किया गया है, ताकि आदिवासियों के उन्नत, स्वस्थ, समतामूलक एवं खुशहाल जीवन की नयी पगडंडी बने, विचार-चर्चाएं आयोजित हो, सरकारें भी सक्रिय होकर आदिवासी कल्याण की योजनाओं को लागू करें।

राजनीतिक स्वार्थ के चलते हजारों वर्षों से जंगलों और पहाड़ी इलाकों में रहने वाले आदिवासियों को हमेशा से दबाया और कुचला जाता रहा है जिससे उनकी जिन्दगी अभावग्रस्त ही रही है। केंद्र सरकार आदिवासियों के नाम पर हर साल हजारों करोड़ों रुपए का प्रावधान बजट में करती है। इसके बाद भी उनकी आर्थिक स्थिति, जीवन स्तर में कोई बदलाव नहीं आया है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने आदिवासी क्षेत्रों में घुसपैठ की है जिससे भूमि अधिग्रहण काफी हुआ है। आदिवासियों की जमीन पर अब वे खुद मकान बना कर रह रहे हैं, बड़े कारखाने एवं उद्योग स्थापित कर रहे हैं, कृषि के साथ-साथ वे यहाँ व्यवसाय भी कर रहे हैं। भूमि हस्तांतरण एक मुख्य कारण है जिससे आज आदिवासियों की आर्थिक स्थिति दयनीय हुई है।

माना जाता है कि यही कंपनियां आदिवासी क्षेत्रों में युवाओं को तरह-तरह के प्रलोभन लेकर उन्हें गुमराह कर रही है, अपनी जड़ों से कटने को विवश कर रही है। उनका धर्मान्तरण किया जा रहा है। उन्हें राष्ट्र-विरोधी हरकतों के लिये उकसाया जाता है। आज आदिवासी समाज इसलिए खतरे में नहीं है

कि सरकारों की उपेक्षाएं बढ़ रही है बल्कि उपेक्षापूर्ण स्थितियां सदैव रही है- कभी कम और कभी ज्यादा। सबसे खतरे वाली बात यह है कि आदिवासी समाज की अपनी ही संस्कृति एवं जीवनशैली के प्रति आस्था कम होती जा रही है।

अन्तराष्ट्रीय आदिवासी दिवस मनाने की सार्थकता तभी है जब हम इस जीवंत समाज को उसी के परिवेश में उन्नति के नये शिखर दें। इस दृष्टि से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नये भारत की परिकल्पना को आदिवासी समाज बहुत ही आशाभरी नजरों से देख रहा है।

आदिवासियों की संपत्ति और संस्कृति का सवाल

अरविन्द जयतिलक

आज विश्व आदिवासी दिवस है। यह दिवस वैश्विक स्तर पर आदिवासी समाज के अधिकारों की रक्षा एवं जागरुकता बढ़ाने के लिए मनाया जाता है। आज ही के दिन 9 अगस्त, 2018 को भारत के जनजातीय आबादी के स्वास्थ्य की स्थिति पर राष्ट्रीय रिपोर्ट विशेषज्ञ समिति द्वारा भारत सरकार को प्रस्तुत की गई थी। इस रिपोर्ट में जनजातीय आबादी के स्वास्थ्य की चुनौतियां और उनकी बेहतरी के ढ़ेरों उपाए सुझाए गए। अब सवाल यह है कि क्या जनजातीय आबादी के स्वास्थ्य के लिए सुझाए गए उपायों पर अमल हो रहा है? क्या उनकी संपत्ति, संस्कृति और विरासत सहेजने की कोशिश हो रही है? क्या आदिवासी समाज को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास हो रहा है? अगर इन संकल्पों की सिद्धि का प्रयास हो रहा है तो ठीक है अन्यथा इस दिवस को मनाने का कोई औचित्य नहीं रह जाता। इसलिए कि आदिवासी समाज की चुनौतियां कम होने के बजाए बढ रही है। उन्हे हर रोज विस्थापन से लेकर अपनी संपत्ति, संस्कृति और विरासत को सहेजने-बचाने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ की ह्यद स्टेट आफ द वर्ल्डस इंडीजीनस पीपुल्सह्ल नामक रिपोर्ट से उद्घाटित हो चुका है कि मूलवंशी और आदिम जातियां भारत समेत संपूर्ण विश्व में अपनी संपदा, संसाधन और जमीन से वंचित व विस्थापित होकर विलुप्त होने के कगार पर हैं। रिपोर्ट से उद्घाटित हुआ है कि खनन कार्य के कारण हर रोज हजारों आदिवासी परिवार विस्थापित हो रहे हैं। विस्थापन के कारण उनमें गरीबी, बीमारी और बेरोजगारी बढ़ रही है। आमतौर पर जनजातीय समाज सीधा और सरल माना जाता है लेकिन उनकी परंपरागत अर्थव्यवस्था पर हमला ने उन्हें आक्रोशित बना दिया है। मूलवासी जनसमूह आजीविका के संकट से तो जूझ ही रहें हैं साथ ही उन्हें कई तरह की बीमारियों से भी लड़ना पड़ रहा है। अगर विकसित देश अमेरिका की ही बात करें तो यहां जनजातीय समूह के लोगों को तपेदिक हाने की आशंका 600 गुना अधिक है। आस्ट्रेलिया में आदिवासी समुदाय का कोई बच्चा किसी अन्य समूह के बच्चे की तुलना में 20 साल पहले मर जाता है। नेपाल में अन्य समुदाय के बच्चे से आदिवासी समुदाय के बच्चे की आयु संभाव्यता का अंतर 20 साल, ग्वाटेमाला के 13 साल और न्यूजीलैण्ड में 11 साल है। विश्व स्तर पर देखे तो आदिवासी समुदाय के कुल 50 फीसदी लोग टाइप-2 मधुमेह से पीड़ित हैं। बीमारी व हस्तक्षेप से आदिवासी समाज का तेजी से पलायन भी हो रहा है। नेशनल फेमिली हेल्थ सर्वे की रिपोर्ट से भी उद्घाटित हो चुका है कि कोलम (आंध्रप्रदेश और तेलंगाना) कोरगा (कर्नाटक) चोलानायकन (केरल) मलपहाड़िया (बिहार) कोटा (तमिलनाडु) बिरहोर (ओडिसा) और शोंपेन (अंडमान और निकोबार) के विशिष्ट संवेदनशील आदिवासी समूहों की तादाद घट रही है। आंकड़े बताते हैं कि स्वतंत्रता के बाद से लेकर अब तक आदिवासी आबादी में दस फीसदी की कमी आई है। आदिवासी बहुल राज्य झारखंड की ही बात करें तो वर्ष 1951 में जहां आदिवासी आबादी 35.80 फीसदी थी, वह 1991 में घटकर 27.66 फीसदी रह गयी। वर्ष 2001 की जनगणना के मुताबिक उनकी आबादी 26.30 रही जो 2011 की जनगणना के मुताबिक घटकर 26.11 फीसदी रह गयी। उल्लेखनीय है कि यह आंकड़ा गत वर्ष पहले झारखंड राज्य के जनजातीय परामर्शदातृ परिषद द्वारा जारी किया गया। यहां ध्यान देना होगा कि न सिर्फ आदिवासियों की तादाद कम हो रही है बल्कि परसंस्कृति ग्रहण की समस्या ने उन्हें दोराहे पर खड़ा कर दिया है। नतीजा न तो वह अपनी संपत्ति व संस्कृति बचा पा रहें है और न ही आधुनिकता से लैस होकर राष्ट्र की मुख्य धारा में ही शामिल हो पा रहें हैं। बीच की स्थिति से उनकी विरासत दांव पर लग गयी है। गौर करें तो यह सब उनके जीवन में बाहरी हस्तक्षेप के कारण हो रहा है। भारत में ब्रिटिश शासन के समय सबसे पहले आदिवासियों के सांस्कृतिक जीवन में हस्तक्षेप की प्रक्रिया शुरू हुई। ईसाई मिशनरियों ने आदिवासी समुदाय में पहले हिन्दू धर्म के प्रति तिरस्कार और घृणा की भावना पैदा की। उसके बाद उन्हें ईसाई धर्म ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित किया। लिहाजा बड़े पैमाने पर उनका धर्म परिवर्तन हुआ। ईसाईयत न तो उनकी गरीबी को कम कर पायी और न ही उन्हें इतना शिक्षित ही बना पायी कि वह स्वावलंबी होकर अपने समाज का भला कर सकें। ईसाईयत के बढ़ते प्रभाव के कारण हिन्दू संगठन भी उठ खड़े हुए और आदिवासियों के बीच धर्म प्रचार आरंभ कर दिए। हिन्दू धर्म के प्रभाव के कारण आदिवासियों में भी जाति व्यवस्था के तत्व विकसित हो गये। आज उनमें भी जातिगत विभाजन के समान ऊंच नीच का एक स्पष्ट संस्तरण विकसित हो गया है। यह संस्तरण उनके बीच अनेक संघर्षो और तनावों को जन्म दिया है। इससे आदिवासियों की परंपरागत सामाजिक एकता और सामुदायिकता खतरे में पड़ गयी है। आज स्थिति यह है।

मधुमेह की चपेट में बच्चे

प्रशांत कुमार दुबे

मध्यप्रदेश में बच्चों में डायबिटीज के मामले आदिवासी क्षेत्रों से ही सामने आ रहे हैं। हालांकि मध्यप्रदेश विशेष रूप से कमजोर आदिवासी समूहों (पीवीटीजी), बैगा, भारिया और सहरिया की धरती है जो कि अभी भी पारम्परिक खाद्यान्न और जीवन जीने के लिए पारम्परिक तौर-तरीकों का ही उपयोग करते हैं। वैसे तो मध्यप्रदेश में आदिवासी समुदाय और उनके बच्चों में डायबिटीज पर कोई विशिष्ट अध्ययन नहीं हुआ है।

मध्यप्रदेश में विदिशा जिले के निजी विद्यालय की कक्षा 5 में पढ़ने वाली 9 बरस की रिंकी (परिवर्तित नाम) टाइप-1 डायबिटीज से पीड़ित है। वह आज से 3-4 बरस पहले डायबिटीज की चपेट में आई। कैसे, यह कोई नहीं जानता। अब रिंकी और उसके परिवार का हर सदस्य बस इतना जानता है कि रिंकी को दिन में 3-4 बार खून में ग्लूकोज का स्तर जांचना है और जरुरत के मुताबिक दो-तीन बार इन्सुलिन लेना है। परहेज से तो अब उसका चोली-दामन का साथ हो गया है।

हालांकि रिंकी यह नहीं जानती कि कैसे इस बीमारी ने उसे जकड़ा। इसी तरह उसके मजदूर पिता और गृहिणी मां को केवल इतना पता है कि उसे शक्कर की बीमारी हो गई है? कैसे हो गई, कब हो गई, उन्हें भी कुछ नहीं पता। आमतौर पर डायबिटीज को अमीरों या खराब जीवनशैली की बीमारी माना जाता रहा है, लेकिन अब यह बीमारी मजदूर वर्गों तक भी आसानी से पहुंच रही है। रिंकी के पिता बताते हैं कि वे एक बार रिंकी को अस्पताल ले गए थे और वहां पर बताया गया था कि उनकी बेटी को शक्कर की बीमारी है। वे कहते हैं कि हमदोनों को तो यह बीमारी नहीं है और हमारे परिवार का इतिहास हमें पता नहीं। रिंकी के 5 भाई-बहनों में भी अभी केवल रिंकी इस बीमारी की चपेट में है।

भारत इस समय बच्चों में डायबिटीज बीमारी के चिंताजनक दौर से गुजर रहा है। 'इंटरनेशनल डायबिटीज फेडरेशन' (आईडीएफ) के 'डायबिटीज एटलस 2021' के आंकड़ों के अनुसार, भारत में 'टाइप-1 डायबिटीज मेलिटस' (टीआईडीएम) से पीड़ित बच्चों और किशोरों की संख्या दुनिया में सबसे ज्यादा है, जिसमें 24 लाख से अधिक बच्चे और किशोर (आयु वर्ग 0-19 वर्ष) तो केवल दक्षिण-पूर्व एशिया में ही हैं। टाइप-1 डायबिटीज से पीड़ित दुनिया का हर पांचवा बच्चा या किशोर भारतीय है। भारत में हर दिन 65 बच्चे या किशोर टाइप-1 डायबिटीज की चपेट में आ रहे हैं। ये कुछ आंकड़े हैं, जो बताते हैं कि भारत में टाइप-1 डायबिटीज कितनी बड़ी समस्या बनती जा रही है। टीआईडी सूचकांक ने अनुमान लगाया है कि अकेले भारत में 8.75 लाख बच्चे और किशोर टीआईडी से पीड़ित हैं और मध्यप्रदेश में रिंकी की तरह ही करीब 32,000 बच्चे डायबिटीज के शिकार हैं।

टाइप-1 डायबिटीज, बच्चों में सबसे आम है, जो सभी जातीय समूहों के बच्चों में दो तिहाई नए मामलों के लिए जिम्मेदार है।

जनसंख्या नियंत्रण कानून: आखिर कब होगा लागू

करीब चार दशक पहले राजनीतिक बैठकों, टीवी की चचाओं और चाय की दुकानों पर बातचीत का मुख्य मुद्दा बढ़ती हुई आबादी होती थी। कुछ वर्ष पूर्व स्वतंत्रत दिवस के भाषण में ह्लजनसंख्या विस्फोटह्व शब्द का इस्तेमाल कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस बहस को वापस सुर्खियों में ला दिया। 1970 के दशक में आपातकाल के दौरान जबरदस्ती कराए गए परिवार नियोजन के विनाशकारी अनुभव के बाद राजनेताओं द्वारा इस शब्द का उपयोग न के बराबर किया। तब से जनसंख्या नियंत्रण राजनैतिक रूप से अछूता रहा। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस बहस को नए आयाम पर पहुंचा दिया । उन्होंने जनसंख्या नियंत्रण को देशभक्ति के बराबर बताया। उन्होंने कहा, ह्लसमाज का वह लघु वर्ग, जो अपने परिवारों को छोटा रखता है, सम्मान का हकदार है। वह जो कर रहा है वह देशभक्ति का कार्य है।

पिछले कुछ वक्त से कई राजनेता मुखर होकर जनसंख्या नियंत्रण की बहस को आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं। यह अधिक उपभोग के कारण जनसांख्यिकीय आपदा और प्राकृतिक संसाधनों के पूरी तरह से खत्म हो जाने के गहरे भय के आवेग में बदल चुका है। सामूहिक विनाश और एंथ्रोपोसीन के इस छठे युग में भारत अपनी जनसंख्या नीति और पर्यावरणीय गिरावट के बारे में एक ही सांस में बात कर रहा है।

भारतीय जनता पार्टी के राज्यसभा सांसद और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा को मानने वाले राकेश सिन्हा ने जुलाई 2019 में जनसंख्या विनियमन विधेयक को एक निजी विधेयक के रूप में पेश किया। सिन्हा का कहना है कि ह्लजनसंख्या विस्फोटह्व भारत के पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन के आधार को अपरिवर्तनीय रूप से प्रभावित करेगा और अगली पीढ़ी के अधिकारों और प्रगति को सीमित कर देगा। यह विधेयक प्रस्तावित करता है कि सरकारी कर्मचारियों को दो से अधिक बच्चे पैदा नहीं करने चाहिए और वैसे गरीब लोग जिनके दो से अधिक बच्चे हैं, उन्हें सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से वंचित कर देने का सुझाव देता है।

सिन्हा दावा किया था कि विपक्षी नेताओं ने भी उनके इस प्रयास की निजी तौर पर सराहना की । पिछले साल सितंबर में कांग्रेस के राजनेता जितिन प्रसाद ने भी जनसंख्या वृद्धि की जांच के लिए एक कानून बनाने की मांग की थी। सिन्हा के विधेयक पेश करने से पहले ही, पिछले साल मई में, दिल्ली भाजपा के एक नेता अश्विनी कुमार उपाध्याय ने दिल्ली उच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर की थी, जिसमें जनसंख्या नियंत्रण के लिए कड़े कानून की मांग की गई थी। दिल्ली उच्च न्यायालय ने इस मामले को खारिज कर दिया था।

अब यह मामला सर्वोच्च न्या 2018 में लगभग 125 सांसदों ने राष्ट्रपति से भारत में दो बच्चों की नीति लागू करने का आग्रह किया था। 2016 में भाजपा सांसद प्रह्लाद सिंह पटेल ने भी जनसंख्या नियंत्रण पर एक निजी सदस्य बिल पेश किया था। हालांकि यह अधिकतर निजी विधेयकों की तरह मतदान के चरण तक नहीं पहुंच सका। 2015 में गोरखपुर के सांसद योगी आदित्यनाथ ने एक ऑनलाइन पोल आयोजित कर पूछा था कि क्या मोदी सरकार को जनसंख्या नियंत्रण के लिए कोई नीति बनानी चाहिए। आदित्यनाथ अब देश के सबसे अधिक आबादी वाले राज्य उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं। आजादी के बाद से ऐसे 35 बिल विभिन्न दलों के सांसद पेश कर चुके हैं, जिनमें 15 कांग्रेस के सांसदों की ओर से पेश किए गए हैं। लेकिन, देश के लिए अपने नागरिकों के परिवार के आकार को विनियमित करने के लिए एक केंद्रीय कानून बना पाना संभव नहीं हुआ है। 1994 में जब भारत ने जनसंख्या और विकास की घोषणा पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में हस्ताक्षर किया था, तो उसमें परिवार के आकार और दो प्रसव के बीच के समय के निर्धारण के बारे में निर्णय लेने का अधिकार दंपती को दिया था। इस लिहाज से ये निजी विधेयक जनसंख्या कम करने पर नियम बनाने की आवश्यकता पर बल देने का महज एक तरीका भर हैं।

जनसंख्या नियंत्रण के लिए या छोटे परिवारों को प्रोत्साहित करने के लिए कई राज्यों ने पहले से ही दंडात्मक प्रावधान लागू कर रखे हैं। मोदी के भाषण के तुरंत बाद भाजपा के नेतृत्व वाली असम सरकार ने दो साल से अधिक समय पहले पारित असम जनसंख्या और महिला सशक्तिकरण नीति को लागू करने का फैसला किया। इसके तहत, ह्लजनवरी 2021 से असम में दो से अधिक बच्चे वाला कोई भी व्यक्ति सरकारी नौकरी के लिए पात्र नहीं होगा।ह्व 12 राज्यों में ऐसे ही प्रावधान लागू हैं जो दो-बाल नीति की शर्तों को पूरा न कर पाने की स्थिति में योग्यता व अधिकार से जुड़े प्रतिबंध लगाते हैं। इन प्रतिबंधों में पंचायती राज संस्थाओं के चुनाव लड़ने से लोगों पर रोक लगाना भी शामिल है।

एक ऐसे देश में जनसंख्या पर बहस अपरिहार्य है जो वर्तमान में सबसे अधिक आबादी वाले देश चीन को पीछे छोड़ दिया है। संयुक्त राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक मामलों के विभाग के अनुमान के अनुसार, भारत की जनसंख्या 2030 तक 1.5 बिलियन और 2050 में 1.64 बिलियन तक पहुंच जाएगी। वहीं चीन की आबादी का 2030 तक 1.46 बिलियन तक जाने के अनुमान हैं। वर्तमान में, दुनिया की 16 प्रतिशत आबादी भारत में वैश्विक सतह क्षेत्र के केवल 2.45 प्रतिशत और जल संसाधनों के 4 प्रतिशत हिस्से के साथ निवास करती है।

पारिस्थितिकी तंत्र के हाल में हुए आकलनों ने अन्य प्रजातियों के विलुप्त होने और संसाधनों की हो रही कमी में मानव आबादी की भूमिका को इंगित किया है, जिसके बाद वैश्विक स्तर पर भी जनसंख्या विस्फोट को लेकर बहस छिड़ गई है। जीवविज्ञानी ईओ विल्सन ने एक भयावह अनुमान जताया है, जिसके हिसाब से हर घंटे तीन प्रजातियां विलुप्ति के कगार पर पहुंच रही हैं।

बाढ से डीएम चिन्तित, लोगों के बचाव को मुस्तैद

डीएम ने एनडीआरएफ टीम के साथ की बैठक

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द ने प्राकृतिक आपदा के संबंध में एनडीआरएफ टीम के साथ टेबल टॉक बैठक में एनडीआरएफ के इंस्पेक्टर आरबी गौतम ने बताया कि जिले में 27 लोगों की टीम एनडीआरएफ की है। बरसात के समय में बाढ़ की संभावना को देखते हुए अभी से पुलिस, स्वास्थ्य, पीडब्ल्यूडी, फायर सर्विस, राजस्व, आपूर्ति, विद्युत, सिंचाई आदि विभाग तैयारी कर लें, ताकि आपदा से सब मिलकर कार्य कर सकें।
मंगलवार को कलेक्टेज्ट सभागार में बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द ने कहा कि कृषि प्रधान देश में बरसात से बाढ़ आती है तो किसानों की फसलों को क्षति पहुंचती है। विभिन्न आपदाओं से निपटने को पूर्व में हुई घटनायें प्रोजेक्टर से सभी विभागों को अवगत कराया। आपदा के समय एनसीसी, एनवाईकेएस, स्काउट गाइड, स्वयंसेवी संस्थाओं का भी अच्छी भूमिका रहती है। इनकी भी मदद लेनी चाहिए। वॉलिंटियर उसे ही बनायें जो तैरना जानता हो।
जिलाधिकारी ने कहा कि जिस तरह से कोविड के समय स्वास्थ्य विभाग ने अच्छा कार्य किया है, ठीक उसी प्रकार बाढ दौरान कोई आपदा आती है तो आपदा प्रबंधन कार्य करें। जिलाधिकारी ने उप जिलाधिकारी राजापुर से कहा कि फ्लड के लिए यमुना नदी किनारे के गांवों एवं जो मंदाकिनी नदी से गांव प्रभावित होते हैं, उन गांवों को चिन्हित कर एनडीआरएफ की टीम को दें। नाविक व मछुआरा भी चिन्हित कर ले। स्थानीय कर्मचारी, पुलिस कर्मी भी लगायें। उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ मुकेश पहाडी से कहा कि राजापुर तथा मंदाकिनी गंगा रामघाट में कल एनडीआरएफ टीम ने जो ट्रायल किया है, वहां पर एम्बुलेंस एवं स्वास्थ्य टीम की व्यवस्था करायें। जिला पूर्ति अधिकारी से कहा कि राहत सामग्री की व्यवस्था करायें। जो ट्रायल का कार्य होगा, वहां पूर्ति निरीक्षक तथा कोटेदारों को बुलायें। उन्होंने उप जिलाधिकारी राजापुर तथा कर्वी एवं अधिशासी अधिकारी नगर पालिका कर्वी से कहा कि कल यमुना नदी एवं रामघाट मंदाकिनी नदी में एनडीआरएफ टीम रिहर्सल करेगी। उसमें नाविक गोताखोर जो चिन्हित हैं, उन्हें रखा जाए। ताकि वह देखें कि आपदा में कैसे लोगों को बचाना है।
बैठक में सीडीओ अमृतपाल कौर, अपर जिलाधिकारी न्यायिक वंदिता श्रीवास्तव, अपर पुलिस अधीक्षक चक्रपाणि त्रिपाठी, उप जिलाधिकारी राजापुर प्रमोद कुमार झा, अधीक्षण अभियंता विद्युत बृजेश कुमार, जिला पंचायत राज अधिकारी कुमार अमरेंद्र, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी लव प्रकाश यादव, जिला पूर्ति अधिकारी संजय मिश्रा, अधिशासी अभियंता सिंचाई आशुतोष कुमार समेत आदि मौजूद रहे।

वरिष्ठ कोषाधिकारी ने संभाला कार्यभार

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। नवागन्तुक वरिष्ठ कोषाधिकारी रमेश सिंह ने कार्यभार ग्रहण कर लिया है।
मंगलवार को वरिष्ठ कोषाधिकारी रमेश सिंह वित्त एवं लेखाधिकारी प्रतापगढ़ में पद पर कार्यरत थे। वरिष्ठ कोषाधिकारी रमेश सिंह मृदुभाषी, लगनशील एवं मिलनसार अधिकारियों में शुमार हैं। अधिकारियों के मामले में इनका नजरिया तालमेल से काम करने का है। अपने दायित्व पर खरे उतरने के प्रयास का भरोसा दिया।

नांदी हनुमान मन्दिर में चढाया प्रसाद

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट/पहाड़ी। पहाड़ी क्षेत्र के सुप्रसिद्ध नांदी गांव में विराजमान हनुमान मंदिर में गुजरात प्रदेश से आये नवनिर्वाचित भाजपा पार्षद सुधा पांडेय एवं गुजरात के व्यवसायी अजय अग्रहरि व केन्द्रीय अग्रहरि समाज के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अजय ने मंगलवार को 51 किलो (मगज) के लड्डू का प्रसाद हनुमानजी को अर्पित किया।
मंगलवार को समाजसेवी अग्रहरि ने पत्रकारों से कहा कि उनकी बड़ी बहन सुधा पांडेय के पार्षद पद पर विजयी होने पर उन्होंने संकटमोचन हनुमानजी से प्रार्थना की थी कि दीदी को भारी मतों से विजयी बना दें। विजयी होने पर वे और दीदी हनुमान मंदिर जाएंगे। वहां प्रसाद चढ़ाकर दर्शन करेंगे। उन्होंने बंजरग बली के मंदिर में दर्शन के बाद प्रसाद अर्पित किया।

एएसपी ने परेड की सलामी लेकर देखा पुलिस लाइन

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। अपर पुलिस अधीक्षक चक्रपाणि त्रिपाठी ने पुलिस लाइन में परेड की सलामी लेकर परेड का निरीक्षण किया। परेड में उन्होंने पुलिस कर्मियों की ड्रिल देखी। परेड दौरान उन्होंने पुलिस लाइन ग्राउण्ड में ड्रोन कैमरा चलवाया। उनकी निगरानी में कैमरे की गुणवत्ता जांची गई।
मंगलवार को एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी ने पुलिस लाइन में परेड का निरीक्षण कर पुलिस लाइन का भ्रमण किया। परिवहन शाखा को देखकर प्रभारी परिवहन शाखा को दिशा-निर्देश दिये। उन्होंने मैस का निरीक्षण कर भोजन चखा। भोजन की गुणवत्ता देखी। उन्होंने कैंटीन, क्वार्टर गार्द का निरीक्षण कर प्रतिसार निरीक्षक पुलिस लाइन शिवनारायण को दिशा-निर्देश दिये।

कर्वी कोतवाली पुलिस ने चार वारंटी दबोचे

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में कर्वी कोतवाल गुलाब त्रिपाठी की अगुवाई में पुलिस टीम ने चार वारंटियों को दबोचा है।
मंगलवार को कर्वी कोतवाली के दरोगा रामाश्रय प्रसाद की टीम ने विद्युत अधिनियम के वारंटी संतोष पुत्र चन्द्रपाल निवासी शंकर बाजार को गिरफ्तार किया है। कोतवाली कर्वी के दरोगा राकेश कुमार मौर्या ने मारपीट के वारंटी विजय पुत्र बाबूलाल निवासी तरौंहा को गिरफ्तार किया है। कोतवाली कर्वी के दरोगा रामाधार सिंह की टीम ने विद्युत अधिनियम के वारंटी संतोष पुत्र छोटेलाल निवासी ब्यूर को गिरफ्तार किया है।
इसी क्रम में चैकी प्रभारी सीतापुर जनार्दन प्रताप सिंह की टीम ने विद्युत अधिनियम के वारंटी राजाराम पुत्र दुर्गा केवट निवासी डिलौरा को गिरफ्तार किया है।

सूचना कार्यालय में तत्काल दलाल का प्रवेश करें वर्जित

बीस साल से दीमक की तरह खा रहा सूचना

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। जिला सूचना कार्यालय के एक दलाल के काले कारनामों का खुलासा हुआ है। ये दलाल तीन पेपरों का सम्पादक बताया गया है। जो पेपर यहां कभी कभार, रिकार्ड को आते हैं, जबकि विज्ञापन के लिए एप्रूव्ड पेपरों को नियमित सूचना कार्यालय आना चाहिए। रिकार्ड सही करने को छह माह में एक बार ये पेपर मंगवाये जाते हैं। पत्रकारो को मान्यता दिलाने में भी ये दलाल लम्बा खेल खेलने में माहिर है। तकरीबन बीस साल से ये दलाल सूचना कार्यालय को दीमक की भांति चाट रहा है। इस दलाल के घर-जमीन की जांच की जाये तो करोडों का खुलासा होगा। कल तक टूटी साइकिल नसीब न होने वाले इस दलाल के आज जलवे देखते बनते हैं। ये दलाल अब जिले के वरिष्ठ पत्रकारों से भी सीधे मुंह बात नहीं करता। वरिष्ठ पत्रकारों से अभद्र बर्ताव करना इसकी फितरत हो गई है। लोगों ने मांग की है कि सूचना कार्यालय के इस दलाल की जांच बडे पैमाने पर होनी चाहिए। सूचना कार्यालय में इस दलाल का प्रवेश वर्जित न होने तक विभिन्न विभागों के दोनों हाथों से लूट जारी रहेगी। विभिन्न विभागों में हो रही लूट बन्द करानी है तो दलाल को हटाना होगा। ये दलाल जिलाधिकारी के इर्द-गिर्द घूमकर विभिन्न सूचनाओं को विभागाध्यक्षों को लीक करता है। बदले में उदरपूर्ति को धन उगाही का लम्बा सिलसिला चलता है। इस दलाल के सूचना कार्यालय में होने से पत्रकारों में गहरा रोष है।

नैनो यूरिया व डीएपी की कार्यशाला में दी जानकारी

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। जिले के कर्वी ब्लाक में एक दिवसीय विकासखंड स्तरीय नैनो यूरिया एवं नैनो डीएपी उर्वरक आधारित सहकारी कार्यशाला इफ्को ने की। किसानों में नैनो यूरिया एवं नैनो डीएपी के उपयोग की जागरूकता लाने को 80 किसानों ने हिस्सा लिया।
मंगलवार को कार्यशाला में सहायक प्रबंधक इफ्को राजवीर सिंह ने बताया कि दानेदार यूरिया 30 फीसदी ही पौधों को मिलता है। 70 फीसदी भाग विभिन्न कारणों से नष्ट हो जाता है। नैनो यूरिया को उपयोग करने पर 90 फीसदी से अधिक उपयोग फसलों में होता है। कोई भी पर्यावरण प्रदूषण नहीं फैलता। इसकी कीमत भी यूरिया से 16 फीसदी कम है। पहाड़ी ब्लाक के गनीवा कृषि विज्ञान केंद्र में गोष्ठी हुई। चार अगस्त को विकासखंड मऊ सभागार में गोष्ठी हुई।

कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि/अध्यक्ष जिला सहकारी फेडरेशन योगेश जैन ने किसानों से कहा कि नैनो यूरिया वाह नैनो डीएपी उपयोग करने, जैविक खेती करने एवं प्राकृतिक खेती करने की सलाह दी। खुद से की जा रही गो आधारित खेती को देखने को किसानों को आमंत्रित किया। अध्यक्षता खंड विकास अधिकारी सुश्री आस्था पांडे ने की। इस मौके पर एडीसीओ सहकारिता राजेश ने बी पैक्स से किसानों के हित को जारी विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। आयोजन एडीओ सहकारिता कर्वी ब्लॉक नीरज कुमार ने किया। अतिथियों में बीपैक्स छीबो के अध्यक्ष सारंग धर मिश्रा, राजेश मिश्रा सचिव डीसीएफ, एग्री जंक्शन अमानपुर से संचालक सुनील सिंह एवं एग्री जंक्शन शिवरामपुर राघवेंद्र सिंह, डीसीएफ भौंरी कृष्ण गोपाल (पिंकू) आदि मौजूद रहे।

विधायक अनिल प्रधान ने विधानसभा में की प्रश्नों की बौछार

करोडों की ठगी का उठाया मुद्दा

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। विधानसभा के मानसून सत्र में शिक्षा विभाग में खाली पदों की भर्ती, छात्र शिक्षक अनुपात, वीएड, बीटीसी, डीएलएड के लाखों टीईटी पास बेरोजगारों का मुद्दा नियम 51 के तहत अतिलोक महत्व प्रश्न जिले के हारवर्ड जागरूकता एजुकेशन ट्रस्ट के नाम से करोड़ों रुपए की ठगी बाबत सदन में विधायक अनिल प्रधान ने सवाल उठाये।
मंगलवार को विधानसभा के मानसून सत्र 2023-24 विधानसभा अध्यक्ष के समक्ष सदर विधायक अनिल प्रधान ने कहा कि बेसिक शिक्षा विभाग में पिछले पांच साल में एक भी भर्ती नहीं आई। वीएड, बीटीसी, डीएलएड के दस से 15 लाख युवा टीईटी परीक्षा पास करने के बाद दर-दर भटक रहे हैं। ऐसे लाखों बेरोजगार जूनियर भर्ती परीक्षा एवं 69000 शिक्षक भर्ती में उच्च न्यायालय से निर्णय के बाद नियुक्ति पत्र पाने को भटक रहे हैं। हजारों अभ्यर्थियों का मामला न्यायालय में विचाराधीन है। मंत्री ने जवाब दिया कि परिषदीय विद्यालयों में छात्र शिक्षक अनुपात बराबर है, जिनको शिक्षामित्र एवं अनुदेशक पूरा कर रहे हैं, लेकिन मानदेय के बतौर शिक्षामित्रों को दस हजार रुपए, अनुदेशकों को नौ हजार रुपये मिल रहा है। इतने में वह अपने परिवार का भरण पोषण कैसे कर पाएंगे, अनुदेशकों का मानदेय 17 हजार करने का आदेश न्यायालय की सिंगल एवं डबल बेंच से जीतने के बाद भी नहीं मिल रहा है। मानदेय की बढ़ोतरी कब तक होगी। पिछले सत्र में उन्होंने मंत्री जी से पूछा था कि प्राथमिक विद्यालयों में 51112 पद रिक्त हैं। छात्र शिक्षक अनुपात बराबर है, आज जवाब आया कि 126490 पद रिक्त है। छात्र शिक्षक अनुपात आज भी बराबर है, ये कैसा अनुपात है कि रिक्त पदों की बढ़ोतरी के बाद भी अनुपात कम नहीं हुआ।
उन्होंने कहा कि मंत्री जी बतायें कि रिक्त पदों पर विज्ञापन कब तक जारी होगा। जूनियर एडेड भर्ती प्रक्रिया जिसका विज्ञापन 25 फरवरी 2021 को जारी हुआ है। लिखित परीक्षा 17 अक्टूबर 2021 को हुई, परीक्षा परिणाम 15 नवंबर 2021 को जारी हुआ। पुनः संशोधित परीक्षा परिणाम छह दिसंबर 2022 को जारी हुआ, लेकिन उसके बाद भी भर्ती प्रक्रिया अभी तक पूरी नहीं कराई। इसी प्रकार 69000 शिक्षक भर्ती में न्यायालय ने अभ्यार्थियों को अंक देकर मेरिट लिस्ट में आने वाले याचियो को नियुक्ति पत्र देने का आदेश दिया। इस आदेश के खिलाफ उप्र सरकार सुप्रीम कोर्ट गई, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने अपील खारिज कर हाईकोर्ट डिवीजन बेंच के आर्डर को सही ठहराया। परीक्षार्थी हाईकोर्ट से केस जीतने के बाद भी दर-दर भटक रहे हैं। आज भी 2249 परीक्षार्थियों को नियुक्ति नहीं दी गई। विद्यालयों में कार्यरत रसोइयों का वेतनमान कब तक दस हजार किया जायेगा। इसका जवाब मंत्री व सरकार दे। स्थाई मान्यता प्राप्त जूनियर हाई स्कूलों को अनुदानित करने की बाबत सरकार की मंशा क्या है। सदर विधायक ने नियम 51 के तहत जिले में करोड़ों रुपए की ठगी संबंधी प्रश्न को विधानसभा अध्यक्ष के सामने रखा। कहा कि हारवर्ड एजुकेशन ट्रस्ट के नाम से जिले में दो से तीन हजार लोगों का पैसा 18 से 20 करोड़ रूपए होम टीचर्स के नाम पर जमा करवा लिया गया, इस प्रक्रिया में 11 जुलाई 2023 तक लोगों को जोड़ें रखा। होम टीचर का मानदेय आठ सौ मासिक कंप्यूटर टीचर 19500 प्रतिमाह लालच देकर पैसा जमा करवाते रहे, जब मानदेय लेने को आवेदनकर्ता कार्यालय पहुंचे। उन्हें पता चला कि कार्यालय में ताला लगा गया है। तथाकथित ब्रांच मैनेजर विनय कुमार वर्मा व सहायक समुनेश कुमार पटेल व हेड ऑफिस उड़ीसा इंचार्ज विनोद कुमार वहां से लापता हो गए। इस बारे में एफआईआर करा दी गई है, जिसका कोई निराकरण नहीं हो सका।
विधायक ने जनहित के अति गंभीर विषय पर सरकार का ध्यान खींचते हुए ठगे पीड़ितों को न्याय देने की सरकार से वक्तव्य की मांग किया। विधायक ने तारांकित प्रश्न में कहा कि बेसिक शिक्षा मंत्री बतायें कि बेसिक शिक्षा विभाग में शिक्षकों के कितने पद स्वीकृत हैं। स्वीकृत पदों के सापेक्ष कितने पद वर्तमान में रिक्त हैं, क्या सरकार रिक्त पदों पर नियुक्ति को विज्ञापन जारी करने पर विचार करेगी, यदि नहीं तो क्यों।

बाढ़ वाले भोलेनाथ सेवा समिति द्वारा बनाए जा रहे नदी तट पर पार्थिव शिवलिंग

विदिशा। नदी स्थित बाढ़ वाले घाट पर बाढ़ वाले भोले नाथ सेवा समिति द्वारा बेतवा सावन में पिछले आठ सालों से पार्थिव शिवलिंग का निर्माण किया जा रहा है। इस वर्ष भी पार्थिक शिवलिंग निर्माण किया गया और दूसरे सोमवार को शहर के शिव भक्तों द्वारा विशेष अभिषेक किया गया। समिति सदस्यों ने बताया कि पार्थिव शिवलिंग का निर्माण बेतवा नदी में आई हुई मिट्टी से किया जाता है। मूर्ति कलाकार अशोक विश्वकर्मा, अध्यक्ष बद्री साहू ,संतोष विश्वकर्मा ,मनोज कारपेंटर ,हेमंत शर्मा, मुन्नालाल तिवारी ,नरोत्तम सोनी ,हितेंद्र रघुवंशी , बबलू विश्वकर्मा , अरविंद चौरसिया ,रत्नेश सोनी ,संतोष नेमा, छतर सिंह लोहार ,आनंद नगर, गोवर्धन कुशवाह, मनमोहन सिंह बघेल ,मनीष विश्वकर्मा ,हिम्मत साहू ,सुनिल आदि भक्तों द्वारा अभिषेक किया गया।

प्राइवेट आदमी को डीएम की खबरों के ग्रुप में क्यों बनाया एडमिन, व्हाट्सअप में डीएम के साथ किस अधिकार से लगाये है अपनी फोटो

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशानुसार जिले से भ्रष्टाचार के खात्मे को जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द खासे संकल्पित हैं, लोगों ने उम्मीद जताई है कि जिला सूचना कार्यालय से भी भ्रष्टाचार की जड को उखाड फेकें, तभी मुख्यमंत्री का सपना साकार होगा।
जिलाधिकारी के खबरों के ग्रुप डीआईओ में प्राइवेट आदमी रामरुप पटेल कैसे ग्रुप एडमिन बन गया? किस अधिकार से वह ग्रुप का एडमिन बना है, ग्रुप के क्या मानक हैं। न वह वरिष्ठ पत्रकार है और न विख्यात समाजसेवी। उसके ग्रुप एडमिन बनने से विभिन्न विभागों में उसका खेल अवश्य चल रहा है। इस बारे में सूचना विभाग के वरिष्ठ लिपिक मोहन श्रीवास्तव ने कहा कि कहीं सूचना अधिकारी के जाने पर उसे भेज देते हैं। जिलाधिकारी के खबरों के ग्रुप में जिला स्तरीय अधिकारियों की खबरें भेजने का प्राविधान तो समझ में आता है, लेकिन तहसील स्तरीय अधिकारियों की खबरें भेजने के साथ एनजीओ (संस्थाओं) की भी खबरें ग्रुप में क्यों भेजता है।
यहां तक कि वह खुद को जिला सूचना अधिकारी बताकर लोगों को गुमराह कर रहा है। अपने व्हाट्सअप स्टेटस में उसने जिलाधिकारी के साथ अपनी फोटो किस अधिकार से लगाई है, ये बात भी समझ से परे है। समझने वाले सबकुछ समझ रहे हैं, ऐसा क्यों है? लोगों ने कहा कि प्राइवेट आदमी को ग्रुप एडमिन से बाहर का रास्ता न दिखाने से पत्रकारों में रोष उभर रहा है।

बाढ से हुई क्षति, दुकानदारों की करें मदद: शानू , शानू ने बाढ पीडितों का लिया जायजा

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। राष्ट्रीय जन उद्योग व्यापार संगठन के राष्ट्रीय महामंत्री संगठन शानू गुप्ता ने रामघाट में अचानक आई बाढ़ से व्यापारियों से भेंटकर दुकानों की स्थिति देखी।
मंगलवार को व्यापारी नेता शानू गुप्ता ने रामघाट मंदाकिनी नदी में आई बाढ़ से छोटे व मंझोले व्यापारियों की दुकानों के अंदर पानी घुसने से सामान खराब हो गया। कुछ सामान बह गया। व्यापारियों की स्थिति देखते हुए राष्ट्रीय जन उद्योग व्यापार संगठन के राष्ट्रीय महामंत्री संगठन/समाजसेवी शानू गुप्ता ने रामघाट में व्यापारियों से भेंट की। उनकी दुकानें देखी। रामघाट में आधा सैकड़ा दुकानों में पानी भरने से व्यापारियों की क्षति हुई है। भाजपा नेता शानू गुप्ता ने फोन से एसडीएम कर्वी को सूचना दी। उनसे दैवीय आपदा कोष से व्यापारियों को आर्थिक सहायता देने का अनुरोध किया। मंदाकिनी नदी में अचानक आई बाढ़ से व्यापारी अपनी दुकानों का सामान भी नहीं हटा सके। देखते-देखते एक घंटे के अंदर दुकानें जलमग्न हो गई। व्यापारियों में अफरा-तफरी मच गई। रामघाट के छोटे व्यापारी बाढ़ से हुई क्षति से परेशान हैं। उनकी सहायता को व्यापार संगठन के पदाधिकारियों ने उच्चाधिकारियों से बात कर मदद दिलाने का भरोसा दिया।
भाजपा नेता शानू गुप्ता ने कहा कि रामघाट में बेहद छोटे और बहुत ही कम पूंजी वाले व्यापारी हैं। कुछ सामान बह जाने व खराब होना उनकी बड़ी क्षति है। व्यापारी दुखी व सदमे में है। उपजिलाधिकारी कर्वी राजबहादुर से वार्ता हुई है। चित्रकूट में नानाजी देशमुख थे तब बाढ़ में व्यापारियों व स्थानीय गरीबों की मदद करते थे। इस मौके पर नगर अध्यक्ष आशीष गुप्ता, उपाध्यक्ष अभिषेक केसरवानी, कोषाध्यक्ष सौरभ, जानकी शिवहरे, सचिन नारायण त्रिपाठी, सोनू अग्रहरि, संजय गुप्ता, सतीश गुप्ता, राज अनुरागी, रिंकू आदि मौजूद रहे।

चुप्पी तोडो खुलकर बोलो के बारे में छात्राओं को किया जागरुक, महिला थानाध्यक्ष ने सीआईसी में की गोष्ठी

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला के निर्देश पर महिलाओं/बालिकाओं में सुरक्षा एवं विश्वास का माहौल बनाने को जारी मिशन शक्ति एवं शक्ति दीदी अभियान में महिला थानाध्यक्ष श्रीमती शालिनी सिंह भदौरिया ने चित्रकूट इंटर कॉलेज में गोष्ठी की।
मंगलवार को गोष्ठी में महिला थानाध्यक्ष ने छात्राओं को सुरक्षा एवं सहायता को शासन से जारी विभिन्न हेल्पलाइन नम्बर 1090 वीमेन पावर लाइन, 181 महिला हेल्पलाइन, 108 एम्बुलेंस सेवा, 1076 मुख्यमंत्री हेल्पलाइन, 112 पुलिस आपातकालीन सेवा, 1098 चाइल्ड लाइन, 102 स्वास्थ्य सेवा तथा थानों में स्थापित महिला हेल्प डेस्क के बारे में जानकारी देकर जागरूक किया। शासन के विभिन्न हेल्पलाइन नम्बरों के पम्पलेट बांटे।
छात्राओं को बताया कि उनके साथ हो रहे किसी तरह के उत्पीड़न बाबत पुलिस से चुप्पी तोड़ो खुलकर बोलो, ताकि उत्पीड़न रोका जा सके। छात्राओं को गुड-टच, बैड-टच के बारे में बताया। अक्सर छोटे-छोटे बच्चों को जानने वाले ही बैड-टच करते हैं। हम समझ नहीं पाते। इस बाबत खुलकर बतायें। घर पर अपने छोटे भाई/बहन को भी गुड-टच, बैड-टच के बारे में बतायें।

श्रीराम मंदिर समेत श्री रामचरितमानस को घोषित करें राष्ट्रीय ग्रंथ: मदनगोपाल दास, प्रेसवार्ता में बजरंग सेना के मौजूद रहे राष्ट्रीय अध्यक्ष

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। पावनतीर्थ अयोध्याधाम में राम जन्मभूमि कानूनी संघर्ष के बाद सुरक्षित और संरक्षित हो रही है। अब आवश्यकता है कि प्रभु श्रीराम के चरित्र को जो श्री रामचरितमानस के रूप में लोकमानस में व्याप्त है। उसे भी संवैधानिक दर्जा देकर संरक्षित और प्रतिष्ठित किया जाए।
मंगलवार को ये बात कामदगिरि पीठम के संत मदनगोपाल दास ने पत्रकारों से हुई वार्ता में कही। उन्होंने कहा कि राम जन्मभूमि को लेकर विधर्मियों ने बहुत बवाल किया। अब इधर अधर्मियों ने रामचरितमानस जैसे पुनीत ग्रंथ की निंदा कर रहे हैं। इससे जनमानस में श्रीराम की छवि धूमिल की जा रही है। ग्रंथ में समाहित सनातन मूल्य अर्थात मानव मूल्यों से भारतीय समाज को अलग कर हिंदुत्व को कमजोर किया जा रहा है। विधर्मियों के ऐसे कुत्सित प्रयासों पर तभी रोक लग सकती है, जब श्रीरामचरितमानस को राष्ट्रीय ग्रंथ घोषित कर संवैधानिक दर्जा दिया जाए।
संत मदनगोपाल दास के संरक्षण में रामचरितमानस को राष्ट्रीय ग्रंथ घोषित कराने को जय बजरंग सेना पूरे देश में हस्ताक्षर महाअभियान चलाया जा रहा है। इसका शुभारंभ गोस्वामी तुलसीदास की जन्मभूमि राजापुर से विगत माह हुआ था। जय बजरंग सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन उपाध्याय ने बताया कि अभियान के प्रथम चरण में देशभर में पूज्य संत विभूतियों का आशीर्वाद प्राप्त किया जा रहा है। कल नौ अगस्त को चित्रकूटधाम में संत समागम हो रहा है। जय बजरंग सेना के महिला एवं पुरुष सेनानी चित्रकूटधाम तथा गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्म भूमि में भव्य शोभा यात्रा के साथ बृहद जनसंपर्क कर आम जनता को जागृत करेंगे।

जेद्दा में हुए शांति प्रयासों को रूस ने बताया व्यर्थ; चीन बोला-बातचीत सार्थक

जेद्दा । यूक्रेन में शांति के लिए सऊदी अरब के जेद्दा में 40 देशों के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों की बैठक को रूस ने व्यर्थ करार दिया है। रूसी विदेश मंत्रालय ने कहा, यह बातचीत पूरी तरह से व्यर्थ है, क्योंकि इसमें रूस को शामिल ही नहीं किया गया। रूस के हितों को ध्यान में रखकर और रूस की भागीदारी के बिना इस तरह की कोई भी बैठक औचित्यहीन ही रहेगी। इसके साथ ही रूसी विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि रूस

युद्ध खत्म करने के कूटनीतिक उपायों के लिए तैयार है, बशर्ते कोई गंभीर प्रस्ताव सामने रखा जाए। वहीं, इस तरह की बैठक में पहली बार शामिल हुए चीन ने रूस के रुख से विपरीत कहा, सऊदी अरब का प्रयास प्रशंसनीय और सफल रहा। इस तरह के प्रयासों से ही यूक्रेन में शांति के लिए अंतरराष्ट्रीय सहमति बनाने में में मदद मिलेगी।

चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के यूरेशियन मामलों में विशेष दूत ली हुई ने कहा, यूक्रेन संकट के राजनीतक समाधान के लिए व्यापक विचार विमर्श हुआ, सभी पक्षों ने धैर्य से सबको सुना और इस मसले के हल के लिए अंतरराष्ट्रीय सहमति का रास्ता आगे बढ़ाया है।

बलूचिस्तान के पंजगुर में लैंडमाइन ब्लास्ट, यूनियन काउंसिल के अध्यक्ष सहित सात लोगों की मौत

जेद्दा । पाकिस्तान में एक बार फिर बॉम्ब ब्लास्ट हो गया। यहां एक सुरंग में विस्फोट हो गया। हादसे में सात लोगों की मौत हो गई। पुलिस को आशंका है कि घटना में बलूच लिबरेशन फ्रंट का हाथ है। हादसा पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रात में हुआ है।

यह है पूरा मामला

पाकिस्तानी मीडिया के अनुसार, बलूचिस्तान के पंजगुर जिले में एक वाहन पर घात लगाकर हमला किया गया है। डिप्टी कमिश्नर अमजद सोमरो का कहना है कि

बलागातर यूसी के चेयरमैन इश्तियाक याकूब कुछ लोगों के साथ शादी समारोह से वापस लौट रहे थे। गाड़ी में एक रिमोट विस्फोटक उपकरण लगा हुआ था। गाड़ी जैसे ही बलगातर इलाके के चकर बाजार पहुंची, वैसे ही ब्लास्ट हो गया। हादसे में सात लोगों की मौत हो गई।

यह हैं मृतक

इश्तियाक याकूब , मोहम्मद याकूब, इब्राहिम, वाजिद , फिदा हुसैन, सरफराज, हैदर, पुलिस के अनुसार, मृतक बाल्टागर और पंजगुर के रहने वाले थे। चार मृतकों की पहचान उनके रिश्तेदार द्वारा की गई। पाकिस्तानी मीडिया के अनुसार, अधिकारियों को आशंका है कि बलूच लिबरेशन फ्रंट सात मौतों का जिम्मेदार हो सकता है।

कनाडा सभी भारतीय राजनयिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए काम कर रहा है : सरकार

नई दिल्ली। भारतीय राजनयिकों को धमकी संबंधी ऑनलाइन वीडियो जारी होने के बाद कनाडा के पब्लिक सेफ्टी (जन सुरक्षा) विभाग ने कहा है कि वह देश में सभी राजनयिक प्रतिनिधियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में काम कर रहा है। इसके साथ ही विभाग ने कहा कि देश में ''हिंसा भड़काने'' के लिये कोई जगह नहीं है। 'पब्लिक सेफ्टी कनाडा' का यह बयान खालिस्तानी पोस्टर ऑनलाइन प्रसारित किये जाने के एक महीने के बाद आया है। इन पोस्टर में भारतीय अधिकारियों के नाम लिखे थे। इसके बाद विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अपने सहयोगी देशों कनाडा, ब्रिटेन और अमेरिका से कहा था कि वे ''चरमपंथी खालिस्तानी विचारधारा'' को जगह नहीं दें, क्योंकि यह (आपसी) संबंधों के लिये ''ठीक नहीं'' है। 'पब्लिक सेफ्टी कनाडा' ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर कहा, ''कनाडा में हिंसा भड़काने के लिये कोई जगह नहीं है। भारतीय राजनयिक अधिकारियों को धमकी से संबंधित ऑनलाइन वीडियो प्रसारित होने के बाद कानून लागू करने वाली एजेंसी कीसेवा ली गई है।'' 'एक्स' को पहले ट्विटर के नाम से जाना जाता था। इसने पिछले सप्ताह कहा था, ''कानून लागू करने वाली कनाडाई एजेंसी और सरकार देश में सभी राजनयिक प्रतिनिधियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में काम कर रही है।''

पीएम मोदी के ब्रिक्स सम्मेलन में शामिल न होने की खबरों से सब हैरान थे, दक्षिण अफ्रीकी सरकार का खुलासा

जोहानेसबर्ग। दक्षिण अफ्रीका की सरकार का कहना है कि वह मीडिया की उन रिपोर्ट्स से हैरान हैं, जिनमें बताया गया कि पीएम मोदी ब्रिक्स सम्मेलन में भाग नहीं लेंगे। दक्षिण अफ्रीका की अंतरराष्ट्रीय संबंध और सहयोग मंत्री नालेडी पानडोर ने मीडिया को ब्रिक्स सम्मेलन की तैयारियों की स्थिति के बारे में जानकारी देते हुए यह बात बताई। बता दें कि ब्रिक्स सम्मेलन के 15वें संस्करण की मेजबानी दक्षिण अफ्रीका करेगा और इसका आयोजन 22 अगस्त को होगा।

'पीएम मोदी ने कभी नहीं कहा कि वह हिस्सा नहीं लेंगे'

मीडिया से बात करते हुए दक्षिण अफ्रीका की अंतरराष्ट्रीय संबंध और सहयोग मंत्री नालेडी पानडोर ने बताया कि 'भारत के प्रधानमंत्री ने कभी नहीं कहा कि वह सम्मेलन में हिस्सा नहीं लेंगे। मैं खुद भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर के संपर्क में हूं, उन्होंने भी ऐसा कभी नहीं कहा। हमारे शेरपा भी संपर्क में हैं लेकिन उनके सामने ये बात नहीं आई। इसलिए हम यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि इस अफवाह की शुरुआत कहां से हुई।'

'अफवाह से सब हैरान हैं'

नालेडी पानडोर ने कहा कि मैंने सरकार में अपने कई सहयोगियों से बात की और बाहर के लोगों से भी बात की, हर कोई इस अफवाह से हैरान था। मुझे लगता है कि कोई हमारे सम्मेलन

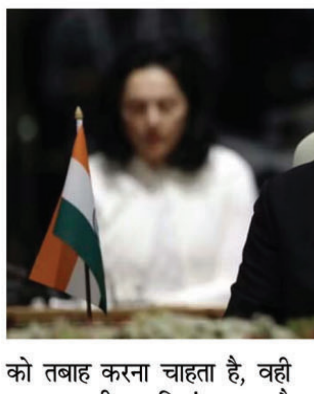

को तबाह करना चाहता है, वही इस तरह की कहानियां गढ़ रहा है ताकि सम्मेलन सफल न हो सके। पानडोर ने स्पष्ट किया कि पीएम मोदी ब्रिक्स सम्मेलन की बैठक में शामिल होंगे। बता दें कि ब्रिक्स सम्मेलन में ब्राजील, चीन, भारत और दक्षिण अफ्रीका के नेता शामिल होंगे।

वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से जुड़ेंगे पुतिन

रूस भी ब्रिक्स संगठन का हिस्सा है लेकिन रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन इस सम्मेलन में हिस्सा नहीं लेंगे। वह वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए इस बैठक में जुड़ेंगे। बता दें कि यूक्रेन युद्ध के चलते पुतिन के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायालय ने गिरफ्तारी वारंट जारी किया हुआ है। ऐसे में आईसीसी के सदस्य देशों को इस वारंट को मानना जरूरी है। दक्षिण अफ्रीका भी आईसीसी का सदस्य है, ऐसे में वहां की सरकार को भी पुतिन को गिरफ्तार करना होता। यही वजह है कि पुतिन ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए सम्मेलन में शामिल होने का फैसला किया है।

राष्ट्रपति रामफोसा ने फोन पर पीएम मोदी से की बात

नालेडी पानडोर ने बताया कि राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा ने पीएम मोदी से फोन पर बात भी की। हालांकि उन्होंने स्पष्ट किया कि यह फोन कॉल पहले से ही एजेंडे में थी और इसका अफवाह से कोई लेना देना नहीं है। बता दें कि हाल ही में मीडिया में ऐसी खबरें आई थी कि पीएम मोदी ब्रिक्स सम्मेलन में हिस्सा नहीं लेंगे और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए ही सम्मेलन की बैठक में हिस्सा लेंगे। हालांकि बाद में स्पष्ट हुआ कि पीएम मोदी दक्षिण अफ्रीका जाएंगे।

भारत के स्वतंत्रता दिवस को अमेरिका में भी राष्ट्रीय जश्न के तौर पर मनाने की तैयारी, संसद में प्रस्ताव पेश

वाशिंगटन। भारत के स्वतंत्रता दिवस को जल्द ही अमेरिका में भी राष्ट्रीय दिवस के जश्न के तौर पर मनाया जा सकता है। सांसद श्री थानेदार के नेतृत्व में भारतीय-अमेरिकी सांसदों के एक दल ने अमेरिकी संसद के निचले सदन हाउज ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स में प्रस्ताव रखा है, जिसके तहत भारत के स्वतंत्रता दिवस को दुनिया के दो सबसे बड़े लोकतंत्र के राष्ट्रीय दिवस के जश्न के तौर पर घोषित करने का आग्रह किया गया है।

इस प्रस्ताव में कहा गया है कि अमेरिका और भारत के बीच मजबूत साझेदारी, जिसकी जड़ें दोनों देशों के साझा लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित है, वह वैश्विक लोकतंत्र और शांति, स्थायित्व और समृद्धि बढ़ाने के लिए साथ काम करती रहेगी।

इस प्रस्ताव को हाउज ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स में सांसद श्री थानेदार की तरफ से पेश किया गया है। इसे सांसद बडी कार्टर और ब्रैड शर्मन की तरफ से भी प्रायोजित किया गया है। प्रस्ताव में कहा गया है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 22 जून को अमेरिका की

आधिकारिक यात्रा पर आए थे और उन्होंने दोनों देशों के समान हितों और स्वतंत्रता, लोकतंत्र, बहुलतावाद, कानून के शासन, मानवाधिकार के सम्मान के प्रति साझा प्रतिबद्धताओं के आधार पर विश्वास और आपसी समझ को एक नए स्तर पर स्थापित किया।

प्रस्ताव में कहा गया है कि भारतीय विरासत वाले अमेरिकी नागरिक देश में सार्वजनिक जीवन को सरकारी अधिकारी, सैन्यकर्मी और कानून लागू करने वाले अफसर बनकर बढ़ाते हैं। यह लोग अमेरिकी संविधान के सिद्धांतों का समझदारी से पालन करते हैं। देश की अनेकता को समृद्ध करने में अहम योगदान देते हैं। प्रस्ताव में यह भी कहा गया है कि भारत के स्वतंत्रता दिवस के जश्न को अमेरिका में रहने वाले भारतीयों के साथ मनाया जाना जरूरी और अहम है। इससे दोनों देशों उन लोकतांत्रिक सिद्धांतों की तसदीक कर सकते हैं, जिनके आधार पर उनका जन्म हुआ था।

ओडिशा ट्रेन दुर्घटना के पीड़ितों की मदद के लिए आगे आई 16 साल की भारतवंशी किशोरी, मदद को जुटाई राशि

वाशिंगटन। मात्र 16 साल की उम्र में एक भारतीय अमेरिकी किशोरी तनिष्का धारीवाल दुनिया के लिए उदाहरण बन गई हैं। उन्होंने इस साल भारत के ओडिशा में भीषण ट्रेन दुर्घटना से प्रभावित लोगों की मदद के लिए पीएम केयर्स फंड में 10 हजार डॉलर से अधिक राशि जुटाई। तनिष्का ने न्यूयॉर्क में भारत के महावाणिज्य दूत रणधीर जयसवाल को राशि सौंपी।

ऐसे की मदद

तनिष्का धारीवाल का कहना है कि जब उन्हें ओडिशा के बालासोर में हुई रेल दुर्घटना के बारे में पता चला तो उन्होंने माता-पिता के सहयोग से एक GoFundMe पेज शुरू किया। इसके जरिए विश्वविद्यालयों, शहरों व जिलों, परिवार और दोस्तों से संपर्क किया और 10,000 डॉलर जुटा लिए। उन्होंने कहा कि उम्मीद है कि इस राशि से उन लोगों की मदद हो सकेगी, जो लोग इस हादसे से प्रभावित हुए हैं। किशोरी ने कहा कि मेरा मानना है कि हम और भी रुपये जुटा लेंगे। यह एक अच्छी शुरुआत है।

बता दें, मौके पर राणा के संरक्षक सदस्य हरिदास कोटेवाला, जयपुर फुट यूएसए के सलाहकार अशोक संचेती, राणा के संयुक्त सचिव रवि जारगढ़ और राणा के वरिष्ठ सदस्य चंद्र सुखवाल मौजूद थे। इस दौरान तनिष्का के माता-पिता नितिन और सपना धारीवाल भी मौजूद थे।

राणा के अध्यक्ष और जयपुर फुट यूएसए के संस्थापक अध्यक्ष प्रेम भंडारी ने कहा कि तनिष्का के इस कदम से युवाओं में एकता की उम्मीद जगेगी। उन्होंने कहा कि राशि कितनी जुटाई गई इससे कोई लेना देना। फर्क इससे पड़ता है कि मदद की भावना तो आई। उन्होंने कहा कि यह मजबूत संबंधों को उजागर करता है जो अमेरिका में जन्मे भारतीय युवाओं और उनकी मातृभूमि के बीच अभी भी जीवित हैं। उन्होंने कहा कि 10 हजार डॉलर का चेक भारतीय वाणिज्य दूतावास को सौंपा जाएगा, जिसे पीएम केयर्स फंड में भेज दिया जाएगा। भंडारी ने भारत की आत्मनिर्भरता और वैश्विक मानवीय सहायता में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका की सराहना की। कहा कि पिछले दशक में, भारत की पहुंच 100 से अधिक देशों तक बढ़ गई है, जिसका परिणाम 25 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक की सहायता है।

साइप्रस के राष्ट्रपति के अनुरोध पर इस्राइल ने भेजे अग्निमशमन विमान, जंगलों में लगी आग बुझाने में मदद

यरूशलेम । ग्रीस के जंगलों में आग धधक रही है। इस्राइली सरकार ग्रीस की मदद के लिए सामने आई है। इस्राइल ने मदद के लिए ऑपरेशन विंग्स ऑफ फायर शुरू किया है। साइप्रस राष्ट्रपति ने इस्राइल से मदद के लिए अनुरोध किया था। इस्राइल इससे पहले भी आग बुझाने में मदद कर चुका है।

यह है पूरा मामला

विदेशी मीडिया के अनुसार, इस्राइल राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्रालय के नेतृत्व में इस्राइल फायर एंड रेस्क्यू अथॉरिटी और आईडीएफ सहयोग से क्रू और अग्निशमन विमान भेज रहा है। टीम रवाना हुई। विमान लिमासोल के जंगलों की आग बुझाने में ग्रीस की सहायता करेंगे। इससे पहले ऑपरेशन फायरबर्ड्स के तहत आग से लड़ने में ग्रीस की सहायता के लिए इस्राइली फोर्स रवाना हुई थी। ग्रीस के रक्षा मंत्री डेंडियास इस्राइल के दौरे पर हैं। उन्होंने इस्राइल के रक्षामंत्री योव गैलेंट के साथ बैठक की।

साइप्रस के राष्ट्रपति ने किया अनुरोध

इस्राइल के पीएमओ का कहना है कि साइप्रस के राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडोलाइड्स ने व्यक्तिगत रूप से प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू से अनुरोध किया था कि वे जंगल की आग बुझाने के लिए मदद करें। पीएमओ के अनुसार, दोनों देशों के मजबूत द्विपक्षीय साझेदारी के कारण मदद की गई है। पीएमओ का कहना है कि साइप्रस में इस्राइली मिशन के तहत सहायता अभियान सभी एजेंसियों के सहयोग से ही संभव हो सकी है।

35,000 हेक्टेयर जंगल जला

ग्रीस में भीषण गर्मी पड़ रही है, जिसकी वजह से यहां के जंगल आग की चपेट में आते जा रहे हैं। इससे लोगों का जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। आग ने इतना भीषण रूप ले लिया है कि तमाम रिहायशी इलाके भी चपेट में आ गए हैं। हजारों लोग रोड्स द्वीप छोड़कर चले गए हैं। वहीं, पर्यटक आग से बचने के लिए इधर-उधर भाग रहे हैं। डब्ल्यूडब्ल्यूएफ ग्रीस के अनुसार, पिछले सप्ताह ही देश में 35,000 हेक्टेयर (86,500 एकड़) जंगल और अन्य भूमि आग से झुलस गई है। वहीं मौसम विभाग के अनुसार, राजधानी एथेंस में गर्मी 41 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचने और मध्य ग्रीस में 44 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचने की उम्मीद है। रोड्स के जंगल में लगी आग पर काबू पाने व लोगों को वहां से सुरक्षित निकालने के लिए दमकल कर्मचारी लगे हुए है।

तोशाखाना मामला: इमरान की पार्टी ने फिर से मुकदमा चलाने के लिए शीर्ष अदालत में दायर की याचिका

इस्लामाबाद । पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी ने अपने अध्यक्ष एवं पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की रिहाई के लिए कानूनी लड़ाई शुरू की। साथ ही पार्टी ने उच्चतम न्यायालय में एक याचिका दायर करके तोशाखाना भ्रष्टाचार मामले में उनके खिलाफ फिर से मुकदमा चलाने का अनुरोध किया। अतिरिक्त एवं सत्र न्यायाधीश (एडीएसजे) हुमायूं दिलावर ने 70 वर्षीय खान को सरकारी उपहारों की बिक्री से प्राप्त आय की घोषणा नहीं करने का दोषी ठहराते हुए शनिवार को तीन साल की सजा सुनाई थी। याचिका संविधान के अनुच्छेद 184(2) के तहत दायर की गई और इस आधार पर तोशाखाना मामले की दोबारा सुनवाई करने का अनुरोध किया गया कि खान के खिलाफ इस मामले में निष्पक्ष सुनवाई नहीं की गई। याचिका में कहा गया है, ''अनुच्छेद 10ए के तहत एक मौलिक अधिकार, निष्पक्ष सुनवाई के अधिकार से पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को तोशाखाना मामले में वंचित किया गया है।'' याचिकाकर्ता ने दलील दी कि निर्णय न केवल जल्दबाजी में पारित किया गया था, बल्कि इसे खान की अनुपस्थिति में सुनाया गया और यह इस्लामाबाद उच्च न्यायालय (आईएचसी) के निर्देशों की पूरी तरह से अवहेलना है।

हिजाब नहीं पहनने वाली महिलाओं पर पहले से ज्यादा सख्ती बरत रही ईरान सरकार; करवाई जा रही शवों की सफाई

तेहरान। ईरान में हिजाब न पहनने वाली महिलाओं को सजा दी जा रही है। उनसे मुर्दाघर में शवों की साफ-सफाई कराई जा रही है। साथ ही मनोचिकित्सक के पास इलाज के लिए भेजा जा रहा है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, निर्देश दिया है। बता दें कि अभिनेत्री ने बीते दिनों अपनी कई तस्वीरें बिना हिजाब पहने सोशल मीडिया पर पोस्ट की थीं।

नियमों का उल्लंघन करने पर तेहरान की अदालत ने दी सजा

मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, तेहरान की अदालत ने एक महिला को हिजाब नियमों का उल्लंघन करने पर मुर्दाघर में शवों की सफाई करने की सजा दी। पीड़ित महिला का गुनाह इतना ही था कि वह बगैर हिजाब पहने कार चला रही थी।

न्यायाधीशों की आलोचना

सजा सुनाने वाले जजों के फैसले पर कई सामाजिक संगठनों ने हैरानी जताते हुए उनकी आलोचना की है। ईरान के चार मानसिक स्वास्थ्य संगठनों के अध्यक्ष घोलम-होसैन मोहसेनी ईजेई ने देश की न्यायपालिका के प्रमुख को एक पत्र लिखा है। उन्होंने कहा है कि मानसिक स्वास्थ्य विकारों का निदान मनोचिकित्सकों की जिम्मेदारी है, न्यायाधीशों की नहीं।

महसा अमिनी की मौत के बाद से हिजाब को लेकर बढ़ा विरोध- महसा अमिनी नामक युवती की मौत के बाद काफी संख्या में महिलाओं ने विरोध स्वरूप हिजाब को पहनने को लेकर विरोध बढ़ा है। उसे पुलिस द्वारा बुरी तरह प्रताड़ित किया गया था। इसके बाद से ही ईरान में देशव्यापी विरोध प्रदर्शन हुए थे। बड़ी संख्या में महिलाओं ने हिजाब के खिलाफ प्रदर्शन किए थे।

तालिबान की तरह लगाम लगाना चाहती है सरकार

ईरानी प्रोफेसर अजादेह कियान ने कहा कि बेयेगन की सजा से यह साफ जाहिर होता है कि सरकार महिलाओं के अंदर खौफ पैदा करना चाहती है। महिलाओं को सिर ढकने पर मजबूर करने के लिए नए-नए तरीके खोज रही है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा।

रूस ने यूक्रेन में युद्ध समाप्त करने के लिए सऊदी अरब में हुई बैठक की आलोचना की

मास्को। रूस के विदेश मंत्रालय ने यूक्रेन में युद्ध का शांतिपूर्ण समाधान खोजने के लिए सऊदी अरब में अंतरराष्ट्रीय नेताओं की हुई बैठक की आलोचना की। विदेश मंत्रालय ने कहा कि इस बातचीत का कोई महत्व नहीं है, क्योंकि रूस को इसमें आमंत्रित नहीं किया गया था। दुनियाभर के 40 देशों के वरिष्ठ अधिकारी सऊदी अरब के जेद्दा में रविवार को दो-दिवसीय बैठक के लिए जुटे थे। इस बैठक का मकसद यूक्रेन में पिछले 17 महीने से जारी लड़ाई को समाप्त करने के प्रमुख सिद्धांतों पर आम सहमति बनाना था। रूस के विदेश मंत्रालय ने बयान जारी कर कहा कि लेकिन रूस की भागीदारी के बिना और इसके हितों को ध्यान में रखे बगैर इस बैठक का कोई महत्व नहीं है।

बयान में विदेश मंत्रालय ने अपने पिछले आश्वासनों को दोहराया कि रूस अपनी शर्तों पर एक राजनयिक समाधान के लिए तैयार है। बयान के अनुसार, रूस युद्ध समाप्त करने के गंभीर प्रस्तावों पर अपना जवाब देने के

लिए तैयार है। यूक्रेन के राष्ट्रपति व्लोदिमीर ज़ेलेंस्की के सलाहकार एम पोडोल्याक ने रूस की पिछली मांगों को मानने से इनकार कर दिया, क्योंकि इससे रूस को यूक्रेन के उन इलाकों में अपनी स्थिति मजबूत करने का समय मिल जाएगा, जिन पर उसने (रूस) कब्जा कर लिया है। अतीत में ट्विटर के नाम से मशहूर सोशल मीडिया साइट एक्स पर पोडोल्याक ने लिखा, ''रूसी सेना को कब्जे वाले क्षेत्रों से पूरी तरह से हटना होगा और इस पर उनका देश किसी प्रकार का समझौता नहीं करेगा।''

इस बीच, यूक्रेन सिक्योरिटी सर्विस ने रूस की एक जासूस को पकड़ने की घोषणा की, जो राष्ट्रपति जेलेंस्की की पिछले महीने हुई दक्षिण माइकोलाइव की यात्रा के बारे में जानकारी जुटा रही थी।

इसने दावा किया कि जेलेंस्की की यात्रा के दौरान हवाई हमला करने के लिए यह महिला आंकड़े जुटा रही थी। यूक्रेन पर फरवरी 2022 में रूस के पूर्ण आक्रमण के बाद, जब रूसी सेना के कीव के आसपास पहुंचने के बावजूद जेलेंस्की ने देश छोड़ने से इनकार कर दिया था, उसके बाद से वह (जेलेंस्की) क्रेमलिन के निशाने पर हैं। यूक्रेन के खारकीव प्रांत के एक गांव में रूसी गोलाबारी में 57 साल की एक महिला की मौत हो गयी।